● वर्ष-3
● अंक-108
रायपुर, गुरुवार
14 दिसंबर 2023
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-6›› जीवन साथी ढूंढ़ने का मजा....

प्रधानमंत्री सहित अनेक राष्ट्रीय नेता मौजूद रहे

विष्णु देव साय ने ली छत्तीसगढ़ के चौथे मुख्यमंत्री पद की शपथ

छत्तीसगढ़ में विष्णु देव साय ने संभाली कमान-

रायपुर। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की गरिमामय उपस्थिति में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय को राज्यपाल श्री विश्वभूषण हरिचंदन ने पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। राजधानी रायपुर के साइंस कॉलेज मैदान में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह, केन्द्रीय परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी, केन्द्रीय सामाजिक न्याय राज्य मंत्री श्री रामदास अठावले, राज्यसभा सांसद श्री जे.पी. नड्डा, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, असम के मुख्यमंत्री श्री हिमंता बिस्वा सरमा, उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी, गोवा के मुख्यमंत्री श्री प्रमोद सावंत, त्रिपुरा के मुख्यमंत्री श्री माणिक साहा विशेष रूप से मौजूद थे। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय एवं उप मुख्यमंत्री द्वय श्री अरूण साव, श्री विजय शर्मा ने ईश्वर के नाम से पद एवं गोपनीयता की शपथ हिन्दी में ली। राज्यपाल श्री श्री विश्वभूषण हरिचंदन ने इस मौके पर छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री के रूप में श्री अरूण साव एवं श्री विजय शर्मा को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। कार्यक्रम में पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह एवं श्री भूपेश बघेल, पूर्व उप मुख्यमंत्री श्री टी.एस. सिंहदेव, पूर्व सांसद श्री ओम माथुर सहित नवनिर्वाचित विधायक, अनेक जनप्रतिनिधि एवं प्रदेशभर से आए बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुख्य सचिव श्री अमिताभ जैन ने किया।

आदिवासी नेता विष्णु देव साय (59) प्रदेश के चौथे मुख्यमंत्री हैं। पूर्व केंद्रीय मंत्री साय छत्तीसगढ़ में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भी रह चुके हैं। उन्होंने राज्य में हुए विधानसभा चुनाव में सरगुजा संभाग के कुनकुरी विधानसभा सीट से जीत हासिल की। इस क्षेत्र की सभी 14 सीटों पर अब भाजपा का कब्जा है। साय के साथ शपथ लेने वाले उपमुख्यमंत्री अरुण साव (54) प्रभावशाली साहू (तेली) ओबीसी समुदाय से आते हैं तथा भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष हैं। अधिवक्ता से नेता बने साव ने विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी थानेश्वर साहू को लोरमी सीट से 45,891 वोटों से हराया है। अन्य उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा (50) ब्राह्मण समुदाय से हैं। वह राज्य में भाजपा के महामंत्री हैं। हिंदुत्व के मुखर समर्थक विजय शर्मा ने कवर्धा निर्वाचन क्षेत्र में प्रभावशाली कांग्रेस नेता और निवर्तमान मंत्री मोहम्मद अकबर को 39,592 वोटों से हराया है।

संसद की सुरक्षा में बड़ी चूक

अप्रचलित कानूनों को निरस्त करने वाले बिल को भी मंजूरी

नई दिल्ली। सरकार ने लोकसभा में बुधवार को इस आरोप का विरोध किया कि वह विपक्ष को चुप कराकर विधेयक पर चर्चा का प्रयास कर रही है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कांग्रेस संसदीय दल के नेता अधीर रंजन चौधरी के उस आरोप को खारिज कर दिया, जिसमें उन्होंने (चौधरी ने) कहा कि विपक्ष को चुप कराकर (विधेयक पर) चर्चा का प्रयास नहीं किया जाना चाहिए। संसद के शीतकालीन सत्र का आज आठवां दिन है। हालांकि आज का दिन बेहद चर्चा वाला रहा। दरअसल, आज संसद की सुरक्षा में बड़ी चूक हुई है। लोकसभा के भीतर दो व्यक्तियों ने दर्शक दीर्घा से कार्यवाही के दौरान कूदने की कोशिश की। इसके बाद से इस घटना ने पूरे देश को चिंता में डाल दिया। कूदने वाले एक व्यक्ति को वहां मौजूद सांसदों ने पकड़कर पीटना भी शुरू कर दिया। लोक सभा स्पीकर ओम बिरला ने इस घटना को पूरी तरीके से चिंताजनक बताया और जांच के निर्देश दिए हैं। लगातार लोकसभा में सुरक्षा एजेंसी जांच की कोशिश में जुटी हुई है और पता लगाने की कोशिश कर रही है कि घटना को कैसे अंजाम दिया गया। यह मुद्दा राज्यसभा में भी उठा जहां प्रतिपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने अमित शाह को संसद में जवाब देने की बात कही। हालांकि, भाजपा ने इसे कहीं ना कहीं राजनीतिकरण बता दिया।

लोकसभा की कार्यवाही- लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सदन के भीतर दो लोगों के कूदने की घटना को गंभीर करार देते हुए बुधवार को कहा कि इसकी उच्च स्तरीय जांच की जा रही है जिसके निष्कर्ष के आधार पर कार्रवाई भी सुनिश्चित की जाएगी। उन्होंने सदन में यह भी कहा कि संसद की सुरक्षा व्यवस्था की व्यापक समीक्षा होगी तथा सभी दलों के नेताओं से विचार-विमर्श करने के बाद सुरक्षा व्यवस्था में जरूरी सुधार भी किए जाएंगे। बिरला ने लोकसभा में कूदने वाले दोनों व्यक्तियों को रोकने और दबोचने में मुस्तैदी एवं निडरता दिखाने के लिए सांसदों, सुरक्षाकर्मियों एवं कर्मचारियों की सराहना की।

उन्होंने अपराह्न चार बजे सदन की कार्यवाही बृहस्पतिवार को सुबह 11 बजे तक के लिए स्थगित कर दी। सरकार ने लोकसभा में बुधवार को इस आरोप का विरोध किया कि वह विपक्ष को चुप कराकर विधेयक पर चर्चा का प्रयास कर रही है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कांग्रेस संसदीय दल के नेता अधीर रंजन चौधरी के उस आरोप को खारिज कर दिया, जिसमें उन्होंने (चौधरी ने) कहा कि विपक्ष को चुप कराकर (विधेयक पर) चर्चा का प्रयास नहीं किया जाना चाहिए।

सरकार ने बुधवार को लोकसभा

पहले दिन से एक्शन में मोहन यादव

धार्मिक और सार्वजनिक स्थलों पर लाउडस्पीकर बैन

भोपाल। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद अपने पहले बड़े फैसले में मोहन यादव ने बुधवार को धार्मिक और सार्वजनिक स्थानों पर लाउडस्पीकर के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाने का आदेश दिया। इससे पहले दिन में, उज्जैन दक्षिण से भाजपा विधायक मोहन यादव ने मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। 58 वर्षीय नेता को राज्य की राजधानी भोपाल के लाल परेड ग्राउंड में राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने पद की शपथ दिलाई।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने भी खुले में मांस की बिक्री पर रोक लगाने के निर्देश दिए हैं। धार्मिक स्थलों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर लाउडस्पीकर के अनियंत्रित उपयोग पर प्रतिबंध लगाने का आदेश

खुले में मांस की बिक्री पर भी रोक

दिया है। आदेश में जुलाई 2005 के सुप्रीम कोर्ट के फैसले का हवाला दिया गया है, जिसमें ऐसे क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के स्वास्थ्य पर ध्वनि प्रदूषण के गंभीर प्रभावों का हवाला देते हुए सार्वजनिक स्थानों पर रात 10 बजे से सुबह 6 बजे (सार्वजनिक आपात स्थिति के मामलों को छोड़कर) के बीच लाउडस्पीकर और संगीत प्रणालियों के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। 28 अक्टूबर 2005 को सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया कि साल में 15 दिन त्योहारों के मौके पर आधी रात तक लाउडस्पीकर के इस्तेमाल की इजाजत दी जा सकती है।

वहीं, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव सीएम चैंबर पहुंचे और राज्य के मुख्यमंत्री का पदभार संभाला। शपथ लेने के बाद उन्होंने अपने एक्स पोस्ट में लिखा कि आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल मार्गदर्शन में निरंतर जारी हमारी मध्यप्रदेश की विकासयात्रा में अपने आप को प्रतिपल समर्पित करते हुए सभी प्रदेशवासियों की उम्मीदों पर खरा उतरने की पूरी कोशिश करूंगा।

ये गलत सूचना और गलत इरादा दोनों है

अनुच्छेद 370 पर ओआईसी जनरल सचिवालय के बयान को भारत ने किया खारिज

नई दिल्ली। भारत के विदेश मंत्रालय ने कड़े शब्दों में टिप्पणी करते हुए जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 को रद्द करने के केंद्र सरकार के फैसले को बरकरार रखने वाले सुप्रीम कोर्ट के हालिया फैसले की आलोचना करने के लिए मुस्लिम देशों के एक अंतरराष्ट्रीय समूह इस्लामिक सहयोग संगठन (ओआईसी) की आलोचना की। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने पाकिस्तान के परोक्ष संदर्भ में कहा कि समूह ने सीमा पार आतंकवाद के बेपरवाह प्रवर्तक के इशारे पर बयान जारी किया, जिससे उसकी अपनी विश्वसनीयता कम हुई। उन्होंने मंगलवार को जारी बयान को गलत जानकारी वाला और गलत इरादे वाला बताया। भारत ने भारतीय सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले पर इस्लामिक सहयोग संगठन (ओआईसी) के जनरल सचिवालय द्वारा जारी बयान को खारिज कर दिया है। उन्होंने कहा कि यह गलत सूचना और गलत इरादा दोनों है। ओआईसी ऐसा मानवाधिकारों के क्रमिक उल्लंघनकर्ता और सीमा पार आतंकवाद के एक बेपरवाह प्रमोटर के इशारे पर करता है।

प्रमुख समाचार

अशोक गहलोत को झटका, ट्रायल चलेगा, मानहानि मामले में कोर्ट से राहत नहीं

जयपुर। की एक अदालत ने बुधवार को राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत द्वारा उनके खिलाफ दायर मानहानि मामले में समन आदेश को चुनौती देने वाली पुनरीक्षण याचिका खारिज कर दी। मजिस्ट्रेट अदालत द्वारा गहलोत को तलब किए जाने के बाद, उन्होंने विशेष न्यायाधीश एमके नागपाल की अदालत में आदेश के खिलाफ पुनरीक्षण याचिका दायर की। शेखावत ने संजीवनी क्रेडिट कोऑपरेटिव सोसाइटी घोटाले के संबंध में कथित तौर पर उनके खिलाफ अपमानजनक बयान देने के लिए गहलोत के खिलाफ मानहानि का मामला दायर किया था। सहकारी समिति के लगभग 2.14 लाख निवेशकों को कथित तौर पर धोखा दिया गया क्योंकि निदेशक/पदाधिकारी लगभग 900 करोड़ रुपये लेकर भाग गए। अतिरिक्त मुख्य मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट (एसीएमएम) हरजीत सिंह जसपाल ने गहलोत को 7 अगस्त को अदालत में पेश होने के लिए कहा था।

धरती की जन्नत कश्मीर को जहन्नुम बनाने वाले गुपकार नेता अब्दुल्ला के मुँह से निकला सच

जम्मू। अपनी परिवारवादी राजनीति के चलते जम्मू-कश्मीर को जहन्नुम बनाने वाले गुपकार नेताओं के मुंह से आखिरकार निकल ही गया कि कश्मीर जहन्नुम में जाये। हम आपको बता दें कि श्रीनगर से लोकसभा सदस्य फारूक अब्दुल्ला ने यह कहकर विवाद पैदा कर दिया है कि 'कश्मीर को जहन्नुम में जाने दो। जब उनका बयान वायरल हुआ तो वह सफाई देते फिर रहे हैं। अब अब्दुल्ला ने अपने बयान पर सफाई देते हुए उलटे भाजपा पर आरोप लगा दिया है कि उसने पूर्ववर्ती राज्य जम्मू-कश्मीर का दर्जा घटा केंद्र शासित प्रदेश कर उसे नर्क में तब्दील कर दिया। अब्दुल्ला ने अपने स्पष्टीकरण में, जम्मू-कश्मीर का दर्जा घटाने और पूर्ववर्ती राज्य का विभाजन करने तथा पिछले चार वर्षों से चुनाव नहीं कराने जैसे मुद्दे उठाए। उन्होंने कहा, ''मैंने कश्मीर में आग नहीं लगाई है। जम्मू-कश्मीर स्वर्ग था। इसे नर्क में किसने तब्दील कर दिया? क्या हम दिलों को जीत पाए हैं? अगर देश में कहीं भी चुनाव हो सकते हैं तो कश्मीर में क्यों नहीं?''

महुआ मोइत्रा ने सुप्रीम कोर्ट से तत्काल सुनवाई की मांग की

नई दिल्ली। तृणमूल कांग्रेस नेता महुआ मोइत्रा ने लोकसभा से अपने निष्कासन को चुनौती देने वाली याचिका दायर करने के कुछ दिनों बाद बुधवार को सुप्रीम कोर्ट से तत्काल सुनवाई की मांग की। लोकसभा में आचार समिति की उस रिपोर्ट को मंजूर कर लिया गया जिसमें तृणमूल कांग्रेस की नेता महुआ मोइत्रा को 'पैसे लेकर सवाल पूछने' के मामले में 'अनैतिक एवं अशोभनीय आचरण' का जिम्मेदार ठहराया गया था। वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने सुनवाई जल्द करने की मांग की थी। न्यायमूर्ति एसके कौल की अध्यक्षता वाली पीठ ने सिंघवी को सूचित किया कि उल्लिखित याचिका को दोपहर में भारत के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ के समक्ष रखना होगा और वह मामले की लिस्टिंग पर फैसला लेंगे। लोकसभा द्वारा शुक्रवार को आचार समिति की रिपोर्ट स्वीकार किए जाने के 24 घंटे के भीतर शनिवार रात दायर अपनी याचिका में मोइत्रा ने आरोप लगाया कि उन्हें आचार समिति के निष्कर्षों पर चर्चा के दौरान सदन में अपना बचाव पेश करने की अनुमति नहीं दी गई।

नक्सली हमले सशस्त्र बल का एक जवान शहीद, एक अन्य घायल

नारायणपुर। नक्सल प्रभावित नारायणपुर जिले में नक्सलियों द्वारा किए गए आईईडी बम विस्फोट की चपेट में आने से छत्तीसगढ़ सशस्त्र बल का एक जवान शहीद हो गया है तथा एक अन्य जवान घायल हो गया है। पुलिस अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। नारायणपुर जिले के पुलिस अधिकारियों ने बताया कि जिले में छोटेडोंगर थाना क्षेत्र के अन्तर्गत अमदई घाटी स्थित

लौह अयस्क खदान क्षेत्र में बम विस्फोट के कारण छत्तीसगढ़ सशस्त्र बल के नवमी बटालियन के जवान कमलेश साहू शहीद हो गए तथा आरक्षक विनय कुमार घायल हो गए। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि अमदई घाटी क्षेत्र में सुरक्षा बल के जवानों को नक्सल विरोधी अभियान के लिए रवाना किया गया था। उन्होंने बताया कि नक्सलियों ने विस्फोट किया और जवानों पर गोलीबारी भी की जिसके बाद सुरक्षा बल के जवानों ने भी जवाबी कार्रवाई की। अधिकारियों ने बताया कि इस हमले में घायल हुए विनय को मामूली चोटें आई हैं और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

आतंकी साजिश मामले में एनआईए का एक्शन, बेंगलुरु में 6 जगहों पर की छापेमारी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने आतंकी साजिश मामले की चल रही जांच के तहत मंगलवार को बेंगलुरु में छह स्थानों पर छापेमारी की। यह कदम हाल ही में इस्लामिक स्टेट (आईएस) से जुड़े होने के संदेह में शहर के एक व्यापारी की गिरफ्तारी के बाद उठाया गया है। सूत्रों के अनुसार, 2008 के बेंगलुरु विस्फोटों के पीछे के मास्टरमाइंड के रूप में पहचाने जाने वाले टी नासिर पर बेंगलुरु जेल में कैद के दौरान मिले लोगों का धर्म परिवर्तन कराने का संदेह है। नासिर को पहले पुलिस ने हिरासत में लिया था। आरोप है कि नासिर ने कारावास के दौरान लोगों को धर्म परिवर्तन के लिए वित्तीय सहायता का वादा कर बहकाया और उन्हें कट्टरपंथी बनाया। अपनी रिहाई के बाद, लोगों ने कथित तौर पर एक मदरसे में धर्म परिवर्तन कराया। एनआईए के अधिकारी धर्मांतरण कराने वाले लोगों का पता लगाने में कामयाब रहे और बाद में इन मामलों से संबंधित सबूत जुटाए। मंगलवार को की गई छापेमारी का उद्देश्य धर्मांतरण मामलों से जुड़े महत्वपूर्ण दस्तावेजों का सत्यापन करना था।

राजनीति

दूरंदेशी सोच का परिणाम है नये मुख्यमंत्रियों का चयन

नीरजा चौधरी

मध्य प्रदेश में मोहन यादव, छत्तीसगढ़ में विष्णुदेव साय और राजस्थान में भजन लाल शर्मा को मुख्यमंत्री बनाने के भाजपा के निर्णय ने एक बार फिर राजनीतिक विश्लेषकों तथा लोगों को चौंका दिया है। वैसे भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के लगभग सभी फैसले चौंकाने वाले होते हैं। यह भी रेखांकित किया जाना चाहिए कि भाजपा नेतृत्व ने चुनाव में मध्य प्रदेश में निवर्तमान मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, छत्तीसगढ़ में पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह और राजस्थान में पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया को मुख्यमंत्री पद के लिए चेहरा नहीं बनाया था। शिवराज सिंह चौहान लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहे और अपने कल्याणकारी योजनाओं के कारण लोकप्रिय भी रहे, उन्हें भाजपा ने चुनाव अभियान के प्रारंभ में पीछे ही रखा था। जब नेतृत्व को अहसास हुआ कि चौहान की लोकप्रियता है, विशेष रूप से महिलाओं में, तब उन्हें आखिरी दिनों में आगे किया गया। उन्हें मुख्यमंत्री नहीं बनाने का अनुमान तो लगाया जा रहा था, पर जब भाजपा को भारी बहुमत हासिल हुआ, तब सबने कहा कि इस जीत का एक बड़ा कारण लाडली बहना योजना थी और चौहान ने प्रचार में खूब मेहनत भी की थी। ऐसा लग रहा था कि लोकसभा चुनाव में भाजपा किसी तरह का जोखिम नहीं चाहेगी, इसलिए चौहान ही मुख्यमंत्री बनेंगे। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। इसी तरह राजस्थान में वसुंधरा राजे को पार्टी ने न तो चेहरा बनाया और न ही प्रचार में आगे रखा। छत्तीसगढ़ में भी रमन सिंह को अंतिम दिनों में प्रचार में सक्रिय किया गया था। भजन लाल शर्मा के मुख्यमंत्री बनाये जाने से पार्टी के परंपरागत सवर्ण वोट को भी संतुष्टि मिलेगी।

इन निर्णयों से यही संकेत मिलता है कि पार्टी नेतृत्व नये चेहरों को आगे लाना चाहता है और उसे पूरा भरोसा है कि लोकसभा चुनाव में जीतने के लिए प्रधानमंत्री मोदी का चेहरा पर्याप्त होगा। यह भी स्पष्ट दिख रहा है कि भाजपा का केंद्रीय नेतृत्व ऐसे नेताओं को राज्यों की बागडोर दे रहा है, जो नेतृत्व की बात सुनेंगे और साथ मिलकर काम करेंगे। दूसरा कारक यह है कि भाजपा चाहती है कि आदिवासी समुदाय और पिछड़ी जातियों में एक ठोस संदेश जाए और वे भाजपा के पक्ष में लामबंद हों। तीनों उत्तर भारतीय राज्यों में आदिवासी समुदाय ने जमकर भाजपा को वोट दिया है। आगामी लोकसभा चुनाव में पिछड़ी जातियां एक महत्वपूर्ण कारक होंगी। उत्तर प्रदेश के चुनाव के दौरान एक बहुत वरिष्ठ भाजपा नेता से मैंने कहा था कि जाट आपसे दूर हो रहा है, किसानों का समर्थन कम हो रहा है, तो इस पर उन्होंने जवाब दिया कि वे जाट समुदाय को लेकर चिंतित नहीं हैं और उनकी प्राथमिकताओं में पिछड़ी जातियों में पार्टी का जनाधार बढ़ाना प्रमुख है। विपक्ष के 'इंडिया' गठबंधन ने जाति जनगणना को अपना केंद्रीय मुद्दा बनाया है। जाति जनगणना का सीधा मतलब पिछड़ों वर्गों का सशक्तीकरण है। गठबंधन इस बात पर जोर दे रहा है कि संख्या के हिसाब से पिछड़ी जातियों को आरक्षण मिलना चाहिए। पिछड़े वर्ग में कई जातियों के मतदाताओं का समर्थन प्रधानमंत्री मोदी और भाजपा के साथ रहा है। भाजपा का प्रयास है कि यादव समेत अन्य जातियों को भी साथ लाया जाए। आदिवासी समुदाय तो भाजपा के पीछे लामबंद हुआ ही है। मुख्यमंत्रियों के साथ-साथ उप मुख्यमंत्रियों के चयन में इस कारण की बड़ी भूमिका है।

मिजोरम और तेलंगाना के चुनाव परिणाम भी कम नाटकीय नहीं रहे। मिजोरम में लालदुहोमा की जोराम पीपुल्स मूवमेंट ने अपने पहले ही चुनाव में शानदार बहुमत हासिल किया है। कयास लगाया जा रहा था कि राज्य में गठबंधन वाली ही कोई सरकार बनेगी। मिजो नेशनल फ्रंट ने मणिपुर में हिंसा को लेकर भाजपा से दूरी बना ली थी। लोगों ने वहां कांग्रेस समेत किसी पर भरोसा नहीं किया और नयी पार्टी को सरकार बनाने का जनादेश दे दिया। तेलंगाना में भारत राष्ट्र समिति ने कल्याणकारी योजनाओं के जरिये अपनी पैठ बनायी थी और पहले उसका कोई विकल्प नहीं दिख रहा था। करीब आठ-नौ माह पहले मैं तेलंगाना गयी थी। उस समय लोग समिति और भाजपा के बीच मुकाबला होने का अनुमान लगा रहे थे। कांग्रेस कहीं से भी के चंद्रशेखर राव को चुनौती देती नहीं दिख रही थी। पर कांग्रेस बड़ी तेजी से उभरी। इसमें राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा की भूमिका तो है, पर पार्टी संगठन और रेवंत रेड्डी की मेहनत से परिणाम कांग्रेस के पक्ष में आया।

पहले राज्य में कांग्रेस के पास कोई बड़ा चेहरा नहीं था, लेकिन रेवंत रेड्डी अपनी लगन से उस जगह को भरने में सफल रहे। राव से नाराजगी के अनेक कारण थे- वंशवाद, भ्रष्टाचार, मिलने में मुश्किल और दंभ। वे राजधानी से एक घंटे की दूरी पर स्थित अपने राजसी फार्महाउस में रहते थे। मैंने देखा कि सुरक्षा बंदोबस्त के कारण उस सड़क पर आप चल नहीं सकते। लोग नाराज थे, पर उनके सामने ठोस विकल्प नहीं था। जब कांग्रेस ने अपनी दावेदारी रखी, तो लोगों ने उसे स्वीकार किया क्योंकि उन्हें भरोसा हुआ कि कांग्रेस चुनाव जीत सकती है। रेवंत रेड्डी ने एक अच्छा अभियान चलाया।

मुख्यमंत्री साय करेंगे छत्तीसगढ़वासियों का हर सपना पूरा: रायमुनि भगत

आदिवासी मुख्यमंत्री के हाथों, छत्तीसगढ़ लिखेगा विकास की नई इबारतः गोमती साय

जशपुर। आदिवासी मुख्यमंत्री के हाथों, छत्तीसगढ़ लिखेगा विकास की नई इबारत जशपुर की विधायक और वरिष्ठ आदिवासी नेत्री रायमुनि भगत ने जशपुर के माटीपुत्र श्री विष्णुदेव साय के मुख्यमंत्री निर्वाचित होने पर उन्हे बधाई दी है। उन्होनें जशपुरांचल के एक छोटे से गांव बगिया के बेटे के हाथों में छत्तीसगढ़ की बागडोर थमाने के लिए केंद्रीय नेतृत्व को बधाई देते हुए कहा कि जनजाति क्षेत्र से मुख्यमंत्री चुने जाने से आदिवासी बाहुल्य छत्तीसगढ़ के विकास को एक नई उंचाई हासिल हो पाएगी। अब छत्तीसगढ़वासियों का कोई सपना अधूरा नहीं रहेगा। गरीबों के सिर पर पक्का मकान होगा और हर पेट को भरपूर भोजन भी मिलेगा। किसानों की समस्या भी दूर होगी और युवाओं के हाथों में रोजगार भी होगा।

पत्थलगांव की विधायक श्रीमती गोमती साय ने जशपुर के आदिवासी बेटे विष्णुदेव साय को मुख्यमंत्री बनाने का ऐतेहासिक निर्णय लिये प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और केन्द्रीय गृहमंत्री श्री अमितशाह सहित केन्द्रीय नेतृत्व को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि श्री विष्णुदेव साय के कुशल नेतृत्व में जशपुर सहित पूरा छत्तीसगढ़ विकास की नई इबारत लिखेगा। प्रदेश का बुनियादी ढांचा विकसित होने के साथ आर्थिक विकास को नया आयाम मिलेगा। गरीबी, बेरोजगारी से छत्तीसगढ़वासियों को मुक्ति मिलेगी। श्रीमती साय ने कहा कि केन्द्र और राज्य सरकार मिल कर छत्तीसगढ़ को देश का सबसे विकसित राज्य बनाने के लिए तेजी से काम करेंगे।

श्रीमती साय ने बताया कि उन्हें छत्तीसगढ़ के नए मुख्यमंत्री और मंत्रीमण्डल के सदस्यों के शपथ ग्रहण समारोह का आमंत्रण मिला है, जिसमें वे शामिल होंगी। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में पिछले सालों में जनजाति समाज के विकास को लेकर उनका अनुभव अच्छा नहीं रहा। सरकार और जनजाति समाज के बीच संवादहीनता रही है। श्री विष्णुदेव साय के मुख्यमंत्री बनने से उम्मीद है कि यह संवादहीनता खत्म होगी।

सीएम विष्णुदेव साय के गृह ग्राम में दीपावली जैसा माहौल

जशपुर। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के रूप में श्री विष्णु देव साय बुधवार को शपथ लिया। अपने नए मुख्यमंत्री के अभिनंदन के लिए पूरा छत्तीसगढ़ उत्साहित है। विशेषकर मुख्यमंत्री के गृह ग्राम बगिया जो जशपुर जिले में स्थित है। वहां पर लोग उत्सव मना रहे हैं। पूरे बगिया में त्यौहार का माहौल है। जमकर आतिशबाजी की जा रही है। पारंपरिक नृत्य के साथ गली-मोहल्लों में लोग खुशियां मना रहे हैं। ढोल-नगाड़े के साथ की थाप पर थिरकते कदम मुख्यमंत्री के स्वागत के लिए आतुर हैं। उल्लेखनीय है कि छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय का गृह ग्राम बगिया जशपुर जिले के कुनकुरी विधानसभा के अंतर्गत आता है। उनके शपथ ग्रहण की खुशियां लोग पटाखों की आतिशबाजी और रंगीन रौशनी की जगमगाहट के साथ दीपावली जैसे माहौल में मना रहे हैं।

नक्सलियों की कायराना करतूत आईईडी ब्लास्ट होने से जवान शहीद

नारायणपुर। नक्सलियों की कायराना करतूत फिर सामने आई है। नक्सलियों ने बड़ी घटना को अंजाम देने आईईडी प्लांट किया था, जिसकी चपेट में आने से सीएएफ का एक जवान शहीद हो गया। वहीं एक जवान घायल हुआ है, जिसका इलाज छोटेडोंगर स्वास्थ केंद्र में चल रहा है। पुलिस अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। बता दें कि रायपुर में सीएम विष्णुदेव साय के शपथ से पहले नक्सलियों ने इस घटना को अंजाम दिया है।

बताया जा रहा था कि सुरक्षा बल के जवान रोड ओपनिंग पार्टी सर्चिंग पर निकली थी। इस दौरान आमदई घाटी में आईईडी ब्लास्ट होने से सीएएफ जवान शहीद हो गया। यह घटना छोटे डोंगर थाना क्षेत्र की है। शहीद जवान का नाम कमलेश साहू बताया जा रहा, जो जाँजगीर चापा हसौद के रहने वाले हैं। वही एक जवान बालोद निवासी विनय कुमार घायल हुआ है, जिसका इलाज चल रहा। बता दें कि शहीद जवान सीएएफ 9 वी बटालियन में पदस्थ थे और आमदई लौह खदान की सुरक्षा में लगे थे।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि अमदई घाटी क्षेत्र में सुरक्षा बल के जवानों को नक्सल विरोधी अभियान के लिए रवाना किया गया था। उन्होंने बताया कि नक्सलियों ने विस्फोट किया और जवानों पर गोलीबारी भी की जिसके बाद सुरक्षा बल के जवानों ने भी जवाबी कार्रवाई की। उन्होंने बताया कि क्षेत्र में नक्सलियों के खिलाफ अभियान जारी है।

स्थानीय पुलिस ने बताया कि नौ दिसंबर को छोटेडोंगर थाना क्षेत्र के शीतला मंदिर में पूजा करने के लिए गए बीजेपी नेता कोमल माझी की नक्सलियों ने धारदार हथियार से हमला करते हुए उनकी हत्या कर दी थी। साथ गए एक अन्य साथी डर के चलते छुप गया। घटना के बाद पुलिस ने इलाके में सर्चिंग ऑपरेशन भी शुरू किया, लेकिन अब तक नक्सलियों के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली। नक्सलियों ने नारायणपुर के आमदाई खदान में काम के लिए लगी 16 गाड़ियों को जला दिया था। साथ ही वहां के कर्मचारियों को बंधक भी बनाया था। 11 दिसंबर को सुकमा थाना क्षेत्र के क्रिस्टाराम क्षेत्र के डब्बाकोंटा कैंप में सड़क सुरक्षा के लिए निकले सीआरपीएफ 217 व कोबरा 208 के जवान आईडी के चपेट में आ गए थे। इस दौरान दो जवान घायल हुए थे, उन्हें एयर एंबुलेंस की मदद से रायपुर रेफर किया गया था।

सरकार बदलते ही प्रशासनिक संरक्षण प्राप्त खेलगड़िया का शिक्षक हुआ निलंबित

गरियाबंद। छत्तीसगढ में सरकार बदलते ही भ्रट्राचारी अफ्सरो पर कार्यवाही शुरू हो गई है । प्रशासन भी अब कार्यवाही को लेकर एक्शन मोड में नजर आ रहा है । हाल में ही राज्य शासन के लोक शिक्षण संचनालय ने खेलगडिया मामले में भ्रट्राचार के आरोपी तात्कालिक जिल मिशन समन्वयक श्याम चंद्राकर को निलबित कर दिया है । करीब एक वर्ष से चंद्राकर के निलबंन का इंतजार था । साल भर से कार्यवाही की अनुशसा सहित शिकायत जांच प्रतिवेदन लोक शिक्षण संचानालय में धुल खा रहा था। आखिरकार सरकार बदलतें ही अफ्सरो को साल भर से धुल खाती फाईल को फिर से खोलना पडा और कांग्रेस शासन काल में जिस अधिकारी को पनाह दी गई थी उसे निलंबित करना पडा ।

उल्लेखनीय है कि जिले के प्राईमरी एवं मिडिल स्कुलो में खेलो के विकास को लिए खेलगडिया मद में आए लाखो की राशि में भ्रट्राचार का मामला लगभग तीन वर्षो से लगातार सुर्खियों में रहा है । तात्कालिक जिला मिशन समन्वयक श्याम चंद्राकर द्वारा अपने अधिकारो का दुरूपयोग करते हुए जिले के मैनपुर विकास खण्ड के 149 स्कुलो में नियम के विपरित जाकर खेल सामग्री के बदले स्मार्ट टीव्ही की खरीदी करवाई गई थी । जिससे इस योजना का सफल क्रियांवयन नही हो सका शासन प्रशासन की छबी भी जम कर धुमिल हुई ।

मालुम हो कि इस मामले को लेकर तीन अलग अलग स्तर पर प्रशासनीक जांच भी हुई और तीनो में दोषी पाए जाने के बाद भी कांग्रेस शासन काल मे भ्रट्राचार को संरक्षण देने वाले छुटभैया नेताओं के दखल के चलते जिले से लेकर राजधानी तक के अफ्सरो के हाथ कापते रहे है । बताया जाता है कि उक्त शिक्षक को कांग्रेस नेताओं के साथ साठ गाठ के अलावा जिले के आलाअफ्सरो के बीच पैठ थी । जिसके कारण दोषी साबित होने के बाद भी आलाअफ्सरो ने इसे हटाने के बजाए नई नई जिम्मेदारियों से इसे नवाजते रहे ।

बोरसी में बेदखली की कार्रवाही अभियान निगम सख्त, हटाये अतिक्रमण

आयुक्त लोकेश चन्द्राकर के निरीक्षण के दौरान निर्देश के बाद कार्रवाही

दुर्ग। नगर पालिक निगम सीमा क्षेत्र अंतर्गत कलेक्टर पुष्पेंद्र मीणा के निर्देश पर आयुक्त लोकेश चन्द्राकर द्वारा सुबह अधिकारियों के साथ निरीक्षण के दौरान निर्देश के बाद बोरसी क्षेत्र में अवैध कब्जों के खिलाफ अभियान और तेज हो गया है। बुधवार को ताबड़तोड़ कार्रवाई महाराजा चौक से बोरसी मार्ग में की गई। इस दौरान विरोध का प्रयास तो हुआ, लेकिन तोडू दस्ता व पुलिस बल के सामने उनकी एक नही चली। तोडू दस्ता ने खुल में मांस विक्रय करने वालों पर भी कार्रवाई की गई।दुकानदारों द्वारा टीनसेट व सड़क सीमा के आगे तक तार फेंसिंग और पक्का चबूतरा बनाया गया था,जिसको निगम के तोडू दस्ता ने सख्ती से कार्रवाही की।टीन शेड डाल कर किए गए अवैध निर्माण को अतिक्रमण अधिकारी व राजस्व अधिकारी दुर्गेश गुप्ता व बाजार अधिकारी जावेद अली की उपस्थिति में जेसीबी से ध्वस्त कर दिया। महाराजा चौक से लेकर बोरसी रोड पर लम्बे समय से लगे प्रचार-प्रसार के बोर्ड को हटाया गया। महाराजा चौक क्षेत्र रोड पर विक्रय, के लिए खड़े किए गए गाड़ी को हटवाया गया। प्रचार प्रसार के लिए लोहे के बोर्ड डालकर सड़क में आवागमन में बाधा कर उत्पन्न करने वाले लगभग 40 से अधिक अवैध सामग्री रास्ते रास्ते से हटाया गया। कार्रवाही के दौरान भवन निरीक्षण विनोद मांझी,सहायक बाजार अधिकारी थानसिंह यादव,राजू बक्शीउपस्थित थे। नाली के उपर ईट व टीन शेड से अतिक्रमण की शिकायत प्राप्त हुई थी, जिससे नाली की सफाई में भी बाधा उत्पन्न हो रही थी, जिसे पुलिस बल की उपस्थिति में हटाया गया। अवैध रूप से संचालित चिकन मटन, मछली दुकान सहित विभिन्न स्थानों पर कार्रवाई करते हुए बेदखल किया गया। साथ ही चौक-चौराहों के किनारे ठेला, फ्ल और सब्जी बेचने वालों को दुकान नहीं लगाने की हिदायत दी गई। अतिक्रमण अधिकारी दुर्गेश गुप्ता ने बताया कि शहर में अवैध कब्जाधारी पर निरन्तर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाही अभियान जारी रहेगी।

अवैध अतिक्रमण करने वालों पर प्रशासन का चला बुलडोजर

पिथौरा। छत्तीसगढ़ में सरकार बदलते ही जिला प्रशासन ने अवैध अतिक्रमणकारियों के खिलाफ सख्ती शुरू कर दी है। नगर पंचायत, राजस्व विभाग और पुलिस की टीम शहर में अवैध कब्जों पर लगातार बुलडोजर चलकर कब्जा मुक्त कर रही है। इसी कड़ी में आज सुबह थाना चौक के आसपास संचालित मटन दुकान को बुलडोजर चलाकर तोड़ दिया गया है।

जानकारी के मुताबिक थानेश्वर मंदिर समिति ने पिथौरा स्थरूको मंदिर के आसपास संचालित मटन दुकान को हटवाने के लिए ज्ञापन सौंपा था। जिसके बाद आज प्रशासन ने मंदिर के आसपास मौजूद अवैध अतिक्रमण को हटा दिया है। करीब दर्जन भर अवैध दुकानें हटाई गई है। पिथौरा नगर पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी महेन्द्र राज गुप्ता ने कहा कि अवैध अतिक्रमण को हटाने का मुहीम चलाया जा रहा है , उच्च अधिकारी के निर्देश पर कार्रवाई की जा रही है, आगे भी इसी तरह लगातार मुहीम चला कर अवैध अतिक्रमण हटाया जायेगा।

छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार आते ही अवैध छोटे-बड़े कब्जाधारीयो और अवैध कब्जा करके चखना सेंटर चलाने वालों पर प्रशासन अब सख्त कार्यवाही कर रहा है। दो दिन पहले ही नगर पंचायत की टीम ने शराब दुकान के आसपास संचालित चखना सेंटर को हटाया था लगातार पिथौरा मे अब अवैध अतिक्रमण पर बुलडोजर चल रहा है।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

बढ़ने लगी ठंड, अंबिकापुर में न्यूनतम तापमान 8 डिग्री

अंबिकापुर। पिछले 5 दिनों से बदली बारिश का दौर खत्म होने के बाद छत्तीसगढ़ का मौसम ड्राई हो गया है। बात अगर ठंड की करें तो सबसे अधिक ठंड सरगुजा संभाग में देखने को मिल रही है और दूसरे नंबर पर बिलासपुर संभाग के कुछ जिलों पर ठंड ज्यादा महसूस की जा रही है। प्रदेश में अगले तीन दिनों तक न्यूनतम तापमान में विशेष परिवर्तन होने की संभावना नहीं है। उसके बाद न्यूनतम तापमान में 1 से 2 डिग्री की गिरावट होने की संभावना है। मौसम विभाग के मुताबिक बुधवार को प्रदेश का मौसम साफ और शुष्क रहेगा। मौसम वैज्ञानिक जनक राम साहू ने बताया बुधवार को प्रदेश का मौसम शुष्क रहेगा और अगले तीन दिनों तक न्यूनतम तापमान में कोई विशेष परिवर्तन होने की संभावना नहीं है। सबसे अधिक ठंड सरगुजा संभाग में देखने को मिल रही है। मंगलवार को अंबिकापुर में न्यूनतम तापमान 8 डिग्री दर्ज किया गया है। बुधवार को रायपुर का अधिकतम तापमान 28 डिग्री और न्यूनतम तापमान 15 डिग्री के आसपास रहने की संभावना है।

अंबिकापुर में कांग्रेस के बड़े नेता ने की खुदकुशी

अंबिकापुर। कांग्रेस नेता और छत्तीसगढ़ खाद्य उपभोक्ता फोरम के सदस्य रहे सुरेश अग्रवाल ने आत्महत्या कर ली है। बुधवार सुबह घर के बेसमेंट में फांसी पर लटकता शव परिजनों ने देखा। इस घटना के बाद हंगामा मच गया, मौके पर पुलिस पहुंची और करीबी नेता पूर्व खाद्य मंत्री अमरजीत भगत भी मृतक के घर पहुंचे। शोकाकुल परिवार से मिलने पहुंचे पूर्व मंत्री भगत ने कहा उनकी हार के कारण सुरेश अग्रवाल परेशान चल रहे थे, उन्हें समझाया भी था कि चिंता की बात नहीं है। सब समान्य हो जायेगा। कल मिले भी थे साथ में चाय पीये हैं, आज सुबह उनके बेटे का फोन आया कि मोबाइल छोड़कर कहीं चले गये है। कुछ देर के बाद पता चला कि ऐसा हो गया है। सुरेश अग्रवाल पूर्व मंत्री अमरजीत भगत के बेहद करीबी थे। वो अक्सर उनके साथ कार्यक्रमों में दिखाई देते थे। कांग्रेस सरकार में उन्हें खाद्य एवं उपभोक्ता फोरम का सदस्य भी बनाया गया था। इनकी मौत को लेकर कई तरह के अफवाह शहर में हैं। पुलिस की टीम मौके पर पहुंच कर जांच कर रही है।

करंट की चपेट में आने से नर हाथी की गई जान

बलरामपुर। छत्तीसगढ़ में हाथियों की मौत का सिलसिला नहीं थम रहा है। पिछले दिनों कोरबा में हाईटेंशन तार की चपेट में आने से एक हाथी की जान चली गई थी। वहीं आज बलरामपुर जिले में एक हाथी की करंट लगने से मौत हो गई है। बताया जा रहा है कि गन्ना खेत की रखवाली करने के लिए खेत में करंट के बिछाए गए थे, जिसकी चपेट में आने से हाथी की जान चली गई। घटना की सूचना मिलते ही मौके पर वन विभाग की टीम पहुंच गई है। यह मामला राजपुर वन परिक्षेत्र के नरसिंहपुर गांव का है। जानकारी के अनुसार, राजपुर वन परिक्षेत्र में हाथियों का दल विचरण कर रहा है। इस बीच नरसिंहपुर गांव में गन्ना की रखवाली करने के लिए खेत में लगाए गए करंट की चपेट में आने से नर हांथी की मौत हो गई। जब सुबह मृत हांथी पर ग्रामीणों की नजर तो इसकी सूचना वन विभाग दी। जिसके बाद वन अमला मौके पर पहुंचा। मृत नर हांथी की उम्र लगभग 8 से 10 वर्ष बताई जा रही है। उप वनमडलाधिकारी आर एस श्रीवास्त ने बताया कि वन विभाग पोस्टमार्टम कराने की तैयारी में जुटा हुआ है।

बेमेतरा वासियों ने मुख्यमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह का देखा सीधा प्रसारण

बेमेतरा। बुधवार को राजधानी रायपुर के साइंस कॉलेज मैदान में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की मौजूदगी में मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। साथ ही श्री विजय शर्मा और अरुण साव ने भी उप मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। बेमेतरा जिले में मुख्यमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह का लाइव प्रसारण का आयोजन ऐतिहासिक बेसिक स्कूल मैदान के गांधी भवन में किया गया था, इस अवसर पर भारी संख्या में नागरिकों ने लाइव शपथ समारोह मे शामिल हुये। जिले में पंचायत से लेकर जिला मुख्यालय तक जनता के देखने सुनने के लिए जिला प्रशासन द्वारा इंतजाम किया गया था।

ऑटो पार्ट की दुकान में लगी भीषण आग

जगदलपुर। जिले में एक ऑटो पार्ट की दुकान में मंगलवार देर रात भीषण आग लग गई। दुकान से निकल रहे धुंए को देख आसपास के लोगों ने पुलिस को इसकी सूचना दी। खबर मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने तत्काल एसडीआरएफ को सूचना दी। इसके बाद 4 दमकल गाड़ियों के साथ 20 जवान मौके पर पहुंचे और आग बुझाने में जुट गए। आग लगने से लाखों के नुकसान का अनुमान लगाया जा रहा है। मामला कोतवाली थाना क्षेत्र का है। बताया जा रहा है कि, शॉट सर्किट से लगी आग कुछ ही देर में पूरे दुकान को अपनी चपेट में ले लिया। एसडीआरएफ और फायर ब्रिगेट के जवानों के सूझ बूझ से 2 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। साथ ही आसपास की दुकानों को आग से बचा लिया गया।

नए सरकार के बेहतर कार्य के प्रति जनता पूरी तरह से आशान्वित

- गणमान्य नागरिक, जन प्रतिनिधियों सहित समाज के सभी वर्ग के लोगों ने दी अपनी प्रतिक्रिया

बालोद। छत्तीसगढ़ के नए सरकार के बेहतर कार्य के प्रति बालोदमुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में गठित होने वाले छत्तीसगढ़ राज्य की नई सरकार के बेहतर कार्य को लेकर बालोद जिले की जनता पूरी तरह से आशान्वित है। नई सरकार को लेकर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए बालोद जिले के नागरिकों ने कहा कि श्री विष्णु देव साय जैसे अत्यंत सुलझे हुए राजनेता के मुख्यमंत्री बनने से हमारा छत्तीसगढ़ चहुंमुखी विकास करते हुए प्रगति के नए सोपानों को तय करेगा। छत्तीसगढ़ की नई सरकार के गठन के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया देते हुए गुण्डरदेही निवासी पद्मश्री श्रीमती शमशाद बेगम ने कहा कि श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में हमारा छत्तीसगढ़ राज्य प्रत्येक क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करते हुए देश के अग्रणी राज्य के रूप में स्थान बनाएगा। उन्होंने कहा कि श्री विष्णु देव साय गांव एवं जमीन से जुड़े राजनेता है। उन्हें छत्तीसगढ़ की वास्तविक हालात, यहाँ की परिस्थिति एवं आवश्यकताओं के संबंध में भली-भाँति ज्ञान है। श्री साय यहाँ की आवश्यकताओं के अनुरूप नीति-निर्धारण कर राज्य के कल्याण में उनका सफल क्रियान्वयन सुनिश्चित करेंगे। राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग के पूर्व सदस्य यशवंत जैन

ने कहा कि श्री विष्णु देव साय जी लोकप्रिय और जनता के लिये समर्पित नेता हैं। मुझे उनके साथ कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। मैं उनके साथ कार्य करने के अद्भुत पल को नही भूल सकता।

नई सरकार के गठन के संबंध में प्रतिक्रिया देते हुए नगर पालिका बालोद के पूर्व अध्यक्ष श्री राकेश यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य में नई सरकार के गठन के साथ ही छत्तीसगढ़ की जनता के तकदीर एवं तस्वीर को बदलने का अभियान शुरू हो जाएगा। उन्होंने कहा कि नई सरकार के गठन के साथ ही 18 लाख गरीब परिवारों को प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ मिलने के साथ ही समर्थन मूल्य पर धान खरीदी के 02 साल का बोनस भी छत्तीसगढ़ के किसानों को प्राप्त होगा। इसी तरह जिले के गणमान्य नागरिक श्री कृष्णकांत पवार भी श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में नई सरकार के गठन के पश्चात् छत्तीसगढ़ के उज्ज्वल भविष्य को लेकर पूरी तरह से आशान्वित है। इसी तरह जिले के वरिष्ठ पत्रकार श्री अरमान अश्क सहित सर्व आदिवासी समाज डौण्डीलोहारा के श्री तुकाराम कोर्राम, ग्राम पंचायत कारूटोला के सरपंच श्री तुलसी राम मरकाम एवं ग्राम कुसुमकसा के ग्रामीण श्री टीकू राम साहू एवं श्रीमती लक्ष्मी साहू ने भी कहा कि श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ राज्य सभी क्षेत्रों में निरंतर प्रगति करते हुए विकास का नया कीर्तिमान रचेगा।

सरकारी अस्पताल में डॉक्टर पर पैसे मांगने का आरोप, टूटी हड्डी जोड़ने का होना था ऑपरेशन

कोरिया। जिला अस्पताल में मरीज का ऑपरेशन करने के लिए पैसे मांगने का मामला सामने आया है।पीड़ित महिला के पति के पांव टूट चुका है।जिसके इलाज के लिए वो पिछले 3 हफ्ते से जिला अस्पताल में भर्ती है।महिला की माने तो डॉक्टर ने पैर टूटने की जानकारी दी।इसके बाद कच्चा प्लास्टर कर दिया।इसके बाद डॉक्टर नेकहा कि ऑपरेशन करना पड़ेगा।

जब परिवार वालों ने ऑपरेशन करने की सहमति दे दी तो डॉक्टर ने ऑपरेशन के लिए 12 हजार रुपए की मांग की।महिला ने डॉक्टर पर आरोप लगाते हुए कहा कि ऑपरेशन के लिए डॉक्टर 12 हजार पैसे की मांग कर रहे हैं। फिर ऑपरेशन करेंगे।

मामला सामने आने पर सीएमएचओ ने बताया कि जिला अस्पताल में एनेस्थीसिया के डॉक्टर नहीं हैं। इसलिए हमें एनेस्थीसिया के लिए प्राइवेट डॉक्टर बुलाकर ऑपरेशन कराना पड़ता है। हड्डी टूटी है जिसे जोड़ने के लिए नेल की जरूरत पड़ती है। उस साइज का हमारे अस्पताल में उपलब्ध नहीं है। जिसके लिए रायपुर से मंगवाना पड़ता है। क्योंकि जिले में ऐसे मेडिकल दुकान नहीं है जहां पर नेल मिल सके इसलिए डॉक्टर ने एनेस्थीसिया और नेल के लिए पैसे की मांग की होगी। लेकिन डॉक्टर को पैसे नहीं मांगने चाहिए थे।वहीं अब इस पूरे मामले में डॉक्टर जांच की बात कह रहे हैं।

अरुण साव और विजय शर्मा ने ली उप-मुख्यमंत्री पद की शपथ

रायपुर। छत्तीसगढ़ के विधानसभा चुनाव में भाजपा की ऐतिहासिक जीत के बाद आज मुख्यमंत्री समेत अन्य ने शपथ ले ली है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और लोरमी से विधायक अरुण साव और कवर्धा से विधायक विजय शर्मा ने छत्तीसगढ़ के नए उप-मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। अरुण साव अभी तक भाजपा प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। साल भर पहले ही इनको यह जिम्मेदारी दी गई थी। अरुण साव ने कम समय में पूरे प्रदेश का दौरा किया और कार्यकर्ताओं को मजबूत किया। विधानसभा चुनाव में इसके परिणाम देखने को मिला। वह छत्तीसगढ़ में कमल खिलाने में सफल रहे। केंद्रीय नेताओं ने भी साव के काम का सराहना की है। इस दौरान मंच पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह समेत केंद्रीय नेता, भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्री और प्रदेश के वरिष्ठ और दिग्गज नेता उपस्थित रहे। भाजपा ने उन्हें लोरमी विधानसभा से प्रत्याशी बनाया था। जहां उन्होंने कांग्रेस के थानेश्वर साहू और जेसीसी के सागर सिंह बैस को हराया था।

अरुण साव का जन्म 25 नवंबर 1968 को हुआ। अरुण साव ने एसएनजी कॉलेज, मुंगेली और केआर लॉ कॉलेज, बिलासपुर से स्नातक किया है। 2001 में अरुण साव ने उच्च न्यायालय में प्रैक्टिस की और 2004 में छत्तीसगढ़ सरकार के लिए पैनल वकील के रूप में और 2005 से 2013 तक सरकार के लिए और 2013 से 2018 तक छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के उप महाधिवक्ता के रूप में कार्य किया।

उन्होंने 2019 के लोकसभा चुनाव में बिलासपुर से पहली बार सांसद चुनाव लड़ा और राजनीति में कदम रखा। जिसमें उन्होंने जीत हासिल की और अपने राजनीतिक करियर की शुरुआत की। वे 17वीं लोकसभा के लिए चुने गए। वर्तमान में वे छत्तीसगढ़ भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भी हैं। बता दें कि साव संघ से भी जुड़े हुए हैं।

अरुण साव का राजनीतिक सफर सफर देखा जाए तो वह छात्र जीवन से ही अपनी राजनीति की शुरुआत कर दी थी। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़े हुए थे। 1996 में अरुण साव ने भारतीय जनता युवा मोर्चा (भाजयूमो) के साथ अपने करियर की शुरुआत की।

बता दें कि छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी ने बंपर जीत हासिल की है। 2018 की तुलना में भाजपा ने अपना प्रदर्शन सुधारते हुए प्रदेश की सत्ता में वापसी की। 54 सीटों के साथ बीजेपी ने छत्तीसगढ़ में सरकार बनाई है। वहीं कांग्रेस 68 सीट से लुढ़ककर महज 35 सीटों तक ही सिमटकर रह गई। वहीं गोंडवाना गणतंत्र पार्टी ने 1 सीट पर कब्जा किया है।

विजय शर्मा का ऑपरेटर से राजनीतिज्ञ बनने तक का सफर

कवर्धा से विधायक विजय शर्मा ने छत्तीसगढ़ के नए उप-मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। इस दौरान मंच पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह समेत केंद्रीय नेता, भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्री और प्रदेश के वरिष्ठ और दिग्गज नेता उपस्थित रहे। विजय शर्मा को भाजपा ने कबीरधाम जिले की कवर्धा विधानसभा से प्रत्याशी बनाया था। जहां उन्होंने कांग्रेस के तत्कालीन मंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मोहम्मद अकबर को 40 हजार से ज्यादा वोटों से हराया। बता दें विजय शर्मा पहली बार विधायक चुनकर आए हैं।

विजय शर्मा का जन्म 19 जुलाई 1973 को कवर्धा में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा कवर्धा में ही हुई। जिसके बाद उन्होंने 1998- 2001 में (मप्र भोज मुक्त विश्वविद्यालय, रायपुर अध्ययन केन्द्र से मास्टर आफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन किया। इससे पहले 1997 में पं। रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय अध्ययन केंद्र रायपुर से उन्होंने इंगलिश लैंगुवेज में डिप्लोमा किया। वहीं 1994-1996 में उन्होंने भौतिक शास्त्र में रूह्यष्। किया।

राजनीतिक सफर

- ■प्रदेश महामंत्री, भारतीय जनता पार्टी छत्तीसगढ़
- ■प्रदेश मंत्री, भारतीय जनता पार्टी छत्तीसगढ़
- ■मार्च 2016 से 2020 तक प्रदेश अध्यक्ष युवा मोर्चा छत्तीसगढ़
- ■फरवरी 2020 से (4 वर्षो के लिए) जिला पंचायत सदस्य क्षेत्र क्र। 09 जिला कबीरधाम
- ■मई 2015 दिसम्बर 2015 जिला अध्यक्ष (भाजपा) कार्यकारी
- ■फरवरी 2015 से जनवरी 2020 जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि क्षेत्र क्र। 07 जिला कबीरधाम (पत्नि सदस्य रही)
- ■2011 से मई 2015 तक जिला महामंत्री भा।ज।पा। कबीरधाम
- ■2008 से सन् 2010 तक जिला अध्यक्ष युवा मोर्चा जिला कबीरधाम
- ■2004 से सन् 2008 तक जिला अध्यक्ष भा।ज।पा। युवा मोर्चा जिला कबीरधाम
- ■2001 से सन् 2003 जिला कबीरधाम मे राजनीतिक रूप से सक्रिय रहे।
- ■1993 से सन् 1994 तक छात्र संघर्ष मोर्चा स्थानीय छात्र संगठन का गठन कर उसमे सक्रिय रहे।
- ■1992 अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद रायपुर अधिवेशन में सम्मिलित हुए।
- ■सन् 1991 अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पैनल से स्वामी करपात्री जी शा। उ। मा। विद्यालय कवर्धा मे शाला नायक रहे।
- ■1990 अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के दुर्ग अभ्यासवर्ग मे सम्मिलित हुए।
- ■1989 से 1991 तक अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कवर्धा नगर इकाई के सह। संयोजक रहें।

संक्षिप्त समाचार

जब तक कांग्रेस की सरकार थी, तब तक ही था सट्टेबाजों को संरक्षण : रमन सिंह

रायपुर। महादेव एप के संचालक सौरभ चंद्राकर के राइट हैंड रवि उप्पल की दुबई से गिरफ्तारी पर पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार पर तंज कसा है। उन्होंने कहा कि सट्टेबाजों का संरक्षण तब तक ही था जब तक कांग्रेस की सरकार थी, कांग्रेसी कुशासन के अंत के साथ ही अब अपराधियों के अंत की दिशा में छत्तीसगढ़ बढ़ चला है। डॉ. रमन सिंह ने सोशल मीडिया एक्स पर किए अपने पोस्ट में कहा कि हमारे छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार ने महादेव सट्टा एप का पौधा रोपा और ईडी की कार्रवाई के बीच छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकार संरक्षण की दीवार बनकर खड़ी रही। उस कांग्रेसी कुशासन की दीवार गिरते ही, छत्तीसगढ़ में भाजपा की नई सरकार के शपथ ग्रहण से पहले ही महादेव सट्टा एप में हो रही गिरफ्तारी इस बात का प्रमाण है कि भाजपा के सुशासन में किसी भी तरह के अवैध कार्य करने वाला कोई नहीं बच पाएगा। अपराधी चाहे भिलाई में हो या सात समंदर पार दुबई में, जिसनें भी छत्तीसगढ़ को लूटा है उसे हथकड़ी में जकड़ कर क़ानून के सामने पेश होना होगा।

रायपुर ननि के खिलाफ हाईकोर्ट पहुंची स्वतंत्रता संग्राम सेनानी परिवार की महिला

रायपुर। रायपुर नगर निगम के अधिकारियों के खिलाफ शिकायत लेकर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के परिवार की एक महिला सीधे छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट पहुंच गई। जज ने उनकी बात को गंभीरता से सुना और आश्वस्त किया कि दस्तावेजों के साथ याचिका दायर करने पर उसकी सुनवाई होगी। प्राप्त जानकारी के अनुसार महिला ने हाईकोर्ट में जस्टिस रविंद्र अग्रवाल के पास पहुंचकर शिकायत की कि उसके नाना स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। जीवन यापन के लिए उन्हें मोती बाग रायपुर में एक भूखंड का आवंटन किया गया था। इसी के एक हिस्से में वह रहती है। शेष भूखंड पर वह नया मकान बनाने का प्रयास कर रही है। मगर जब भी वह मकान बनाना शुरु करती है, नगर निगम के लोग पहुंच जाते हैं। नगर निगम में लगातार शिकायत करती रही है मगर कोई कार्रवाई नहीं हो रही है बल्कि उसे बार-बार परेशान किया जा रहा है। अभी यह जमीन काफी महंगी हो चुकी है, इसलिए इसे भू माफिया हथियाना चाहते हैं। जस्टिस अग्रवाल ने महिला की बात को ध्यान से सुना और कहा कि दस्तावेजों के साथ वह याचिका दायर करें, उसके मामले की सुनवाई होगी।

बृहस्पत सिंह ने शोकॉज नोटिस का दिया जवाब

रायपुर। विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की हार पर दिए अपने बयानों के लिए मिले कारण बताओ नोटिस का पूर्व विधायक बृहस्पत सिंह ने जवाब भेज दिया है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष दीपक बैज को भेजे तीन पन्नों के जवाब में बृहस्पति सिंह ने एक तरह से अपने बयानों को जायज ठहराते हुए कांग्रेस की हार के लिए प्रदेश कांग्रेस प्रभारी कुमारी सैलजा और डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव को जिम्मेदार ठहराया है।

किसान पुत्र आदिवासी मुख्यमंत्री से पूरी उम्मीद : नंदकिशोर शुक्ल

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के आज शपथ ग्रहण समारोह स्थल में पहुंचे श्री नंदकिशोर शुक्ल ने बताया- छत्तीसगढिया मुख्यमंत्री ला आज छत्तीसगढ़ी म पद के सपथ लेना चाही। बिलासपुर से राजधानी पहुंचे 82 वर्षीय श्री शुक्ल, जो छत्तीसगढ़ी राजभाषा मंच के प्रांतीय संरक्षक भी हैं, ने कहा कि वह 36गढ़ी को संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कराने पिछले 23 सालों से प्रयासरत हैं लेकिन इसमें अपेक्षित सफलता अब तक नहीं मिली। लेकिन अब किसान पुत्र आदिवासी मुख्यमंत्री विष्णुदेव से पूरी उम्मीद है कि उनकी इस चिरप्रतीक्षित मांग का पुरजोर समर्थन करते हुए राजभाखा छत्तीसगढ़ी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कराने की पूरी कोशिश करेंगे।

राजधानी पहुंचे शाह, नड्डा और गडकरी का भाजपा कार्यकर्ताओं ने किया स्वागत

रायपुर। छत्तीसगढ़ के नए सीएम विष्णुदेव साय के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा और केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी रायपुर पहुंचे। इस दौरान एयरपोर्ट में भाजपा कार्यकर्ताओं ने ढोल-नगाड़ों से सभी दिग्गजों का भव्य स्वागत किया। इसके बाद सभी दिग्गज एयरपोर्ट से शपथ ग्रहण स्थल के लिए रवाना हुए।

वहीं, असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्व सरमा और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी रायपुर पहुंचे। सीएम योगी आदित्यनाथ एयरपोर्ट से शपथ ग्रहण स्थल के लिए रवाना हुए।

सीएम हिमंता ने रायपुर एयरपोर्ट में पत्रकारों से चर्चा की। इस दौरान उन्होंने कहा, ये बहुत ही बड़ा विजय है। छत्तीसगढ़ की सारी जनता को मैं प्रणाम करता हूं। मैं कॉन्फिडेंस के साथ बोलना चाहता हूं, भाजपा ने छत्तीसगढ़ के लिए जो भी वादा किया था, उसे जरूर पूरा करेगी। छत्तीसगढ़ के विकास के लिए सरकार को आशीर्वाद दीजिए।

कवर्धा में भाजपा की बड़ी जीत पर हिमंता बोले, कवर्धा से डिप्टी सीएम भी बना रहे हैं, अभी बस इतना ही आशा है, छत्तीसगढ़ बहुत आगे जाएगा।

रामलला के ननिहाल में भगवा राज आ गया क्या? इस सवाल पर सीएम हिमंता ने कहा कि, भगवा राज भारत में हमेशा है ओर रहेगा भी। छत्तीसगढ़ में पीएम मोदी का जो सरकार बना है, छत्तीसगढ़ को बहुत आगे लेकर जाएगा। यह मेरा विश्वास है और भगवान से प्रार्थना भी है।

डीएलएड, बीएड, बीएबीएड और बीएससी बीएड प्रवेश के लिए अंतिम चरण आबंटन प्रक्रिया में संशोधन

■ निःशुल्क पंजीयन 14 से 16 दिसम्बर तक, किसी एक महाविद्यालय का देना होगा विकल्प

रायपुर। राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा 24 नवम्बर 2023 को जारी डी.एल.एड., बी.एड., बी.ए.बी.एड. और बी.एस.सी.बी.एड. पाठ्यक्रम सत्र 2023-24 में प्रवेश के लिए अंतिम चरण के आबंटन प्रक्रिया में समय-सारणी में संशोधित किया गया है। संशोधन अनुसार प्रवेश के लिए निःशुल्क पंजीयन 14 फरवरी से 16 फरवरी तक कराना होगा। 19 दिसम्बर को शाम 4 बजे प्रतीक्षा सूची जारी की जाएगी। महाविद्यालय द्वारा चयन सूची 21 दिसम्बर को दोपहर 12 बजे जारी होगी और महाविद्यालय द्वारा 22 दिसम्बर तक प्रवेश को ऑनलाइन अपडेट करना होगा।

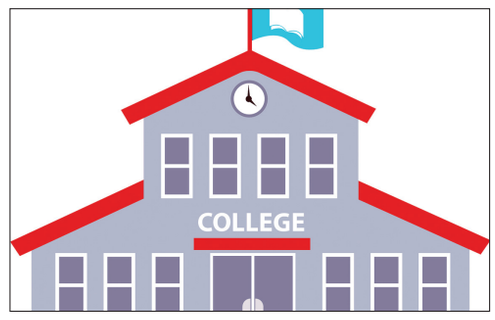

संशोधन अनुसार द्वितीय चरण के चौथी सूची के बाद शेष रिक्त सीटों के लिए प्रतीक्षा सूची जारी की जानी है। प्रतीक्षा सूची के लिए अभ्यर्थियों का आईडी एक्टिव है, उन्हें निःशुल्क अपना विकल्प पुनः देना अनिवार्य होगा। विकल्प पुनः देने के लिए पुनः निःशुल्क पंजीयन कराना आवश्यक होगा। विकल्प किसी एक महाविद्यालय का ही देना होगा। एक्टिव अभ्यर्थियों के लिए निःशुल्क पंजीयन एवं विकल्प देने तथा जिन अभ्यर्थियों का लॉगइन आईडी एक्टिव नहीं है उन्हें पुनः निःशुल्क पंजीयन एवं किसी एक महाविद्यालय का विकल्प 14 दिसम्बर से 16 दिसम्बर तक देना होगा।

प्रतीक्षा सूची के लिए जिन अभ्यर्थियों का लॉगइन आईडी एक्टिव नहीं है वे भी पुनः पंजीयन कर सकते हैं। इन अभ्यर्थियों के द्वारा पूर्व में दिए गए समस्त महाविद्यालयों के विकल्प को निरस्त कर दिया गया है। अब यदि वे प्रवेश प्रक्रिया में पुनः शामिल होना चाहते हैं तो उन्हें निर्धारित तिथि में पुनः निःशुल्क पंजीयन कर किसी एक महाविद्यालय का विकल्प देना होगा। इस चरण में जिन्होंने अब तक अपना डी.एल.एड., बी.एड., बी.ए.बी.एड. और बी.एस.सी.बी.एड. आबंटन प्रक्रिया में पंजीयन नहीं कराया है एवं महाविद्यालयों में प्रवेश ले चुके हैं वे सम्मिलित नहीं हो सकते। अभ्यर्थी महाविद्यालय का विकल्प चुनने से पहले चिप्स के साइट https://slcm.cgstate.gov.in/SCERTOnline/ में रिक्त सीटों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

साय को मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेते हुए देखने उनके गाँव में उत्साह का माहौल

■ पुश्तैनी घर के आंगन बगिया में लगाई गई है बड़ी एलईडी स्क्रीन

रायपुर। छत्तीसगढ़ के नए मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय को मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेते हुए देखने उनके पुश्तैनी घर में ग्रामवासियों की भीड़ उमड़ पड़ी है। जशपुर जिले के अंतर्गत कुनकुरी विधानसभा अंतर्गत ग्राम बगिया के लोगों को शपथ ग्रहण समारोह को लाइव दिखाने की व्यवस्था उनके पुश्तैनी घर के बाहर ही की गई है। बड़ा सा एलईडी स्क्रीन लगाकर रखा गया है। जहाँ बड़ी संख्या में गाँव के बच्चे, महिलाएं और बुजुर्ग सहित अन्य लोग पहुँचे हुए हैं। आसपास के लोगों के आने का सिलसिला भी यहाँ जारी है।

मुख्यमंत्री के रूप में श्री विष्णु देव साय को शपथ लेते हुए देखने आए ग्रामीणों का कहना है कि आज का यह दिन उनके लिए ऐतिहासिक है। उनके गाँव का लाल पहले पंच फिर सरपंच बना। विधायक बनने के साथ ही सांसद बना और अब प्रदेश का मुख्यमंत्री बनकर गाँव के नाम को रौशन करने जा रहा है। गाँव के ही बुजुर्ग ग्रामीण जितरंजन साय का कहना है कि बड़ी खुशी है कि आज हमारा भतीजा मुख्यमंत्री के पद पर बैठेगा। उन्होंने बताया कि वह विष्णु देव को बचपन से ही जानता है। वे उन्हें भतीजा मानते हैं और विष्णु देव भी उनको चाचा कहते हैं।

जितरंजन साय ने बताया कि अब उनके मुख्यमंत्री बनने से गाँव की पहचान बढने के साथ विकास की रफ्तार भी बढ़ेगी। शपथ ग्रहण समारोह को लाइव देखने आई गाँव की महिला शानियरो बाई ने बताया कि हमारे लिए यह गौरव की बात है कि श्री विष्णु देव साय मुख्यमंत्री बन रहे हैं। आज उन्हें शपथ लेते हुए देखने आई है। उन्होंने कहा कि गाँव की कुछ समस्याएं हैं जो अब जल्दी ही दूर हो जाएगी। गाँव की जमुना बाई, प्रेम मनी बाई बुधनी बाई और बलदेव राम, लालजीत पैकरा सहित बहुत से ग्रामीण घर के पास लगाई गई एलईडी स्क्रीन में अपनी आँखें गड़ाए हुए हैं। वे अपने गाँव के बेटे को शपथ लेते हुए देखने उत्सुक है और उत्साहित भी है। वे कहते है कि आज बहुत ही खुशी महसूस हो रही है। जब मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय गाँव आएंगे तो उनका बहुत गर्मजोशी से स्वागत किया जाएगा।

राष्ट्रीय एकलव्य विद्यालय खेल महोत्सव मैसूर में 8 से 12 जनवरी तक

राज्य स्तरीय सेलेक्शन ट्रायल 16 दिसंबर तक

रायपुर। राष्ट्रीय एकलव्य विद्यालय खेल महोत्सव 2023-24 का आयोजन मैसूर (कर्नाटक) में 8 जनवरी से 12 जनवरी तक आयोजित होगा। राष्ट्रीय खेल महोत्सव में शामिल होने के लिए राज्य स्तरीय सेलेक्शन ट्रायल 13 दिसम्बर से शुरू हो गया है, जो 16 दिसंबर तक होगा। आयुक्त एवं पदेन सचिव छत्तीसगढ़ राज्य स्तरीय आदिम जाति कल्याण, आवासीय एवं आश्रम शैक्षणिक संस्थान समिति श्रीमती शम्मी आबिदी ने राष्ट्रीय एकलव्य विद्यालय खेल महोत्सव के संबंध में संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए है।

राष्ट्रीय एकलव्य विद्यालय खेल महोत्सव 2023-24 में व्यक्तिगत खेल में तीरंदाजी, एथलेटिक्स और योगा की प्रतियोगिता बालक और बालिक वर्ग के लिए 14 एवं 19 आयु समूह के लिए आयोजित की जाएगी। इसी प्रकार समूह खेल 19 वर्ष आयु समूह के बालक एवं बालिकाओं के लिए बॉस्केट बॉल, फुटबॉल, हैण्डबॉल, हॉकी, कबड्डी, खो-खो और बॉलीबॉल की प्रतियोगिताओं को शामिल किया गया है। राज्य स्तरीय टीम तैयार करने के लिए 9 दिसंबर को राज्य स्तर पर एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालयों के व्यायाम शिक्षकों के साथ बैठक कर 795 खिलाडियों का प्रारंभिक चयन कर लिया है।

राज्य स्तरीय सेलेक्शन ट्रायल हेतु चयन समिति का गठन किया गया है। यह समिति प्रथम स्क्रीनिंग के पश्चात् राष्ट्रीय खेल महोत्सव के लिए निर्धारित विभिन्न विधाओं हेतु राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप 16 दिसंबर को खिलाडियों का चयन करेंगे। राज्य स्तरीय सेलेक्शन ट्रायल समिति में खेल एवं युवा कल्याण के खेल अधिकारी-प्रशिक्षक, खेलों इंडिया के प्रशिक्षक, शिक्षा विभाग के खेल अधिकारी-प्रशिक्षक, खेलो से संबंधित फेडरेशन प्रशिक्षक और आदिम जाति कल्याण विभाग के खेल अधिकारी एवं कोच को शामिल किया गया है। राज्य स्तरीय सेलेक्शन ट्रायल के लिए प्रयास विद्यालय रायपुर में 13 दिसंबर को योगा, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्व विद्यालय कैम्पस में 14 दिसंबर को खो-खो, 15 दिसंबर को फुटबॉल और 16 दिसंबर को हैण्डबॉल के खिलाडियों का चयन परीक्षण होगा।

मुख्यमंत्री साय ने शपथ ग्रहण के पहले दो महान विभूतियों को किया नमन

■ मुख्यमंत्री ने छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के प्रणेता पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और प्रथम स्वतंत्रता सेनानी शहीद वीर नारायण सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया नमन

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने आज शपथ ग्रहण के पहले राजधानी रायपुर में छत्तीसगढ़ राज्य के लिए उल्लेखनीय योगदान देने वाले दो महान विभूतियों को नमन किया। मुख्यमंत्री श्री साय ने सवेरे अवंती विहार एटीएम चौक स्थित छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के प्रणेता पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रध्दासुमन अर्पित किया। इसके बाद मुख्यमंत्री श्री साय जय स्तंभ चौक पहुंचे और छत्तीसगढ़ के प्रथम स्वतंत्रता सेनानी शहीद वीर नारायण सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उनके मातृभूमि के प्रति समर्पण और बलिदान को नमन किया।

उल्लेखनीय है कि पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी के दृढ़ इच्छाशक्ति से छत्तीसगढ़ के लोगों की लंबे समय से चली आ रही अलग राज्य की मांग पूरी हुई। श्री वाजपेयी के प्रयासों से मध्यप्रदेश से अलग होकर 1 नवंबर 2000 को छत्तीसगढ़ राज्य अस्तित्व में आया। श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने साल 1990 में ही तय कर दिया था कि छत्तीसगढ़ को राज्य बनाना है। श्री वाजपेयी छत्तीसगढ़ की आदिवासी संस्कृति और वन संपदा से बेहद लगाव रखते थे। बता दें कि छत्तीसगढ़ राज्य की मांग 1965 से ही शुरू हो गई थी, लेकिन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने पूरा किया।

छत्तीसगढ़ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी अमर शहीद वीरनारायण सिंह छत्तीसगढ़ महतारी के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर देने वाले आदिवासी जन-नायक थे। उनका जन्म 1795 में सोनाखान के जमींदार परिवार में हुआ था। 1857 के स्वतंत्रता समर में मातृभूमि के लिए मर मिटने वाले शहीदों में छत्तीसगढ़ के आदिवासी जन-नायक, वीर नारायण सिंह का नाम सर्वाधिक प्रेरणास्पद है। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उन्होने छत्तीसगढ़ की जनता में देश भक्ति का संचार किया। उन्होंने सन् 1856 के भीषण अकाल के दौरान गरीबों को भूख से बचाने के लिए अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ कठिन संघर्ष किया। अंग्रेजों विरुद्ध उन्होंने बंदूकधारियों की सेना बनाई और जबरदस्त मोर्चाबंदी कर वीरता पूर्वक संघर्ष किया। अंग्रजों द्वारा कूटनीति से आपको कैद कर मुकदमा चलाया और 10 दिसम्बर 1857 को फांसी दे दी। मातृभूमि और लोगों के लिए शहीद वीर नारायण सिंह का संघर्ष आज भी याद किया जाता है। राज्य सरकार द्वारा उनकी स्मृति में आदिवासी एवं पिछड़ा वर्ग में उत्थान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए शहीद वीर नारायण सिंह सम्मान भी दिया जाता है।

शपथ ग्रहण से पहले मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने परिजनों के साथ घर में की पूजा

रायपुर। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के दायित्व के लिए शपथ लेने से पहले सीएम विष्णुदेव साय ने अपने घर में स्थित पूजा घर में देवी-देवताओं के दर्शन किए और पूजा में हिस्सा लिया। साथ ही उन्होंने अपनी मां जसमनी देवी का आशीर्वाद भी लिया। मुख्यमंत्री साय ने आज शपथ ग्रहण समारोह में हिस्सा लेने से पहले परिजनों के साथ अपने रायपुर स्थित निवास में पूजा में हिस्सा लिया। उनके साथ पूजा में उनकी पत्नी कौशल्या देवी भी शामिल हुईं। मुख्यमंत्री ने नवग्रह पूजा के साथ ही अनुष्ठान भी किया। इसके बाद स्वस्तिवाचन हुआ। पूजा के बाद विधिविधान से हवन किया गया। सीएम साय ने इस दौरान छत्तीसगढ़ के लोगों के सुखसमृद्धि की कामना की। बता दें कि, मुख्यमंत्री ने इससे पहले जगन्नाथ मंदिर में भी भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा जी के दर्शन किए। इस दौरान उन्होंने अपनी मां का आशीर्वाद भी लिया। मां ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए गले लगा लिया। साथ ही वे परिवार के अन्य सदस्यों से भी मिले।

राजस्थान की राजनीति से गहलोत-वसुंधरा युग खत्म

नीरज कुमार दुबे

भजन लाल शर्मा राजस्थान के नये मुख्यमंत्री होंगे। यह वाकई अपने आप में बड़ी खबर है लेकिन इससे भी बड़ी खबर यह है कि भाजपा नेतृत्व पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के किसी दबाव में नहीं आया और प्रदेश की कमान पहली बार विधायक बने भजन लाल शर्मा को सौंप दी। यही नहीं, जिन दीया कुमारी का वसुंधरा राजे विरोध करती थीं उन्हें राज्य का नया उपमुख्यमंत्री बनाया जायेगा। खास बात यह रही कि विधायक दल की बैठक में भजन लाल शर्मा के नाम का प्रस्ताव उन वसुंधरा राजे से करवाया गया जोकि चुनाव परिणाम आने के बाद से लगातार जयपुर के सिविल लाइन्स स्थित अपने घर पर विधायकों के साथ बैठक कर पार्टी नेतृत्व के समक्ष शक्ति प्रदर्शन कर रही थीं। यही नहीं, जब भजन लाल शर्मा राजभवन जाकर राज्यपाल कलराज मिश्र से मुलाकात कर सरकार बनाने का दावा पेश कर रहे थे तब भी वसुंधरा राजे वहां उपस्थित थीं। देखा जाये तो राजस्थान में भाजपा के विपक्ष में रहने के दौरान पांच साल वसुंधरा राजे घर बैठी रहीं और विपक्ष के नेता के रूप में अपनी जिम्मेदारियों का निवर्हन सही से नहीं किया। यही नहीं, निवर्तमान मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने जब यह खुलासा किया था कि सचिन पायलट की बगावत के दौरान वसुंधरा राजे ने भाजपा को उनकी सरकार गिराने से रोका था तो यह भी साफ हो गया था कि वसुंधरा राजे गहलोत के साथ तो राजनीतिक मित्रता निभा रही हैं लेकिन उस पार्टी का वह साथ नहीं दे रही हैं जिसने उन्हें दो बार मुख्यमंत्री बनाया। हम आपको याद दिला दें कि स्वर्गीय भैरों सिंह शेखावत और जसवंत सिंह जैसे भाजपा के कद्दावर नेता वसुंधरा राजे के विरोध में थे लेकिन अटल-आडवाणी की जोड़ी ने फिर भी उन्हें 2003 में मुख्यमंत्री बना दिया था। मुख्यमंत्री बनते ही वसुंधरा राजे ने सरकार और संगठन पर ऐसी पकड़ बनाई थी कि राजस्थान में भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व की कुछ चलती ही नहीं थी। वेंकैया नायडू, राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी के अध्यक्षीय कार्यकाल में तो वसुंधरा राजे ने पार्टी नेतृत्व की सुनी ही नहीं लेकिन अब मोदी-शाह के युग में भाजपा नेतृत्व ने वह काम कर दिखाया है जोकि कभी सोचा भी नहीं जा सकता था। भाजपा ने इस बार विधानसभा चुनावों के दौरान शुरू से ही वसुंधरा राजे को किनारे कर रखा था। पहले उन्हें परिवर्तन यात्राओं की कमान नहीं सौंपी गयी, फिर उन्हें मुख्यमंत्री उम्मीदवार भी नहीं बनाया गया और चुनाव परिणाम आने के काफी दिनों बाद नेतृत्व के मुद्दे पर चर्चा के लिए उन्हें दिल्ली बुलाया गया। देखा जाये तो संकेत पहले से स्पष्ट थे कि वसुंधरा राजे को कमान नहीं सौंपी जायेगी। वैसे मोदी-शाह की जोड़ी ने सिर्फ अपनी पार्टी में परिवर्तन नहीं किया है बल्कि परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ने के लिए कांग्रेस को भी प्रेरित कर दिया है। कांग्रेस तमाम प्रयासों के बावजूद अशोक गहलोत से मुख्यमंत्री का पद नहीं छीन पाई थी और अब भी गहलोत जिस तरह से पार्टी में प्रभावी हैं उसके चलते कांग्रेस में सचिन पायलट का भविष्य अधर में ही है। संभव है भाजपा से सीख लेते हुए कांग्रेस भी अशोक गहलोत की बजाय पायलट या किसी अन्य को कमान सौंपे। कांग्रेस यदि अशोक गहलोत को किनारे लगाती है तो राजस्थान की राजनीति से गहलोत-वसुंधरा युग खत्म हो जायेगा। बहरहाल, जहां तक राजस्थान में भाजपा की ओर से गठित नई टीम की बात है तो यह स्पष्ट है कि जातिगत समीकरणों को ध्यान में रखते हुए सारे फैसले किये गये हैं। तीन राज्यों में सरकार बनाने वाली भाजपा ने एक प्रदेश में आदिवासी, दूसरे में ओबीसी और तीसरे में सवर्ण को सत्ता की कमान सौंपी है।

मध्य प्रदेश में जय माधव-जय यादव

सिद्धार्थ शंकर गौतम

उज्जैन दक्षिण से विधायक डॉ. मोहन यादव मध्यप्रदेश के नए मुखिया चुन लिये गये। 11 दिसंबर को भोपाल के पार्टी कार्यालय में जब केंद्रीय पर्यवेक्षकों की उपस्थिति में विधायक दल का नेता चुनने की बैठक चल रही थी, तो यादव पीछे की पंक्ति में बैठे थे। उनके नाम का प्रस्ताव शिवराज सिंह चौहान ने रखा तो उन्हें भी यकीन नहीं हुआ। शिवराज सिंह के कहने पर वे दोनों हाथ जोड़कर खड़े हुए और विधायकों ने उन्हें अपने नेता के रूप में मान्यता दी। इससे पूर्व विधायकों के फोटो सेशन में भी यादव तीसरी पंक्ति में बैठे नजर आए थे गोयाकि उन्हें स्वयं इस बात का भान नहीं था कि वे साढ़े सात करोड़ जनसंख्या के मुखिया बनने वाले हैं।

तमाम राजनीतिक विश्लेषक इस घटना को बदलती भाजपा की कार्यप्रणाली बता रहे हैं किंतु ऐसा है नहीं। याद कीजिए 2005, जब बाबूलाल गौर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे और असंतोष के चलते उनकी कुर्सी पर संकट के बादल छा गए थे तथा नए मुख्यमंत्री की खोज की जा रही थी। तब केंद्रीय पर्यवेक्षक के रूप में प्रमोद महाजन और लालकृष्ण आडवाणी भोपाल आए थे। उस बैठक में जब प्रमोद महाजन ने प्रदेश के मुखिया के तौर पर तत्कालीन सांसद शिवराज सिंह चौहान का नाम रखा और लालकृष्ण आडवाणी ने उनका अनुमोदन किया, तब भी प्रदेश में ऐसी स्थिति बनी थी जैसी 11 दिसंबर को बनी।

तब भी मुख्यमंत्री के तौर पर शिवराज सिंह का नाम दूर-दूर तक नहीं था और इस बार दो पूर्व केंद्रीय मंत्रियों सहित राष्ट्रीय महासचिव और तमाम कद्दावर नेताओं के बीच मोहन यादव का नाम किसी के जेहन में नहीं था। दोनों घटनाएं यह इंगित करती हैं कि पार्टी का नेतृत्व किसी के पास भी क्यों न हो, उसकी कार्यप्रणाली नहीं बदली है। भाजपा पहले भी चौंकाती थी, अब भी चौंका रही है। उज्जैन दक्षिण से तीसरी बार विधायक चुने गए मोहन यादव के सामाजिक-राजनीतिक जीवन का प्रारंभ छात्र इकाई अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता के रूप में 1984 से हो गया था। सड़क पर संघर्ष करने की छवि ने उन्हें लोकप्रियता दी। विद्यार्थी परिषद में प्रदेश-राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न पदों पर रहते हुए उन्होंने विद्यार्थियों के लिए बहुत काम किया। 2004 में वे भाजपा प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य बने और उमा भारती के मुख्यमंत्री रहते हुए मोहन यादव को उज्जैन विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष के साथ ही सिंहस्थ केंद्रीय समिति का सदस्य बनाया गया था। सिंहस्थ के विश्वस्तरीय सफल आयोजन ने प्रदेश की राजनीति में नए-नवेले मोहन यादव को प्रदेश स्तरीय नेता बना दिया।

इंडिया गठबंधन ने जातिगत जनगणना के साथ ही जिसकी जितनी भागीदारी, उसकी उतनी हिस्सेदारी की बात शुरू कर दिया। इसका केंद्र बिंदु कहीं न कहीं बिहार और उत्तर प्रदेश था जिसकी काट ढूँढना भाजपा के लिए आवश्यक था। मध्य प्रदेश में भाजपा नेतृत्व को वह काट मोहन यादव के रूप में दिखी। मध्यप्रदेश के किसी भी गुट में न होना और सभी गुटों में स्वीकार्यता डॉ. मोहन यादव के पक्ष में काम कर गई। हालांकि चुनौतियां उनके समक्ष भी कम नहीं हैं। मुख्यमंत्री के रूप में शिवराज सिंह चौहान ने लोकप्रियता के आयाम स्थापित कर दिए हैं, यादव को उसे भी ध्यान में रखकर सुशासन देना होगा। 2024 का लोकसभा चुनाव उनके लिए अग्निपरीक्षा जैसा होगा जो उनकी ताजपोशी के पैमाने को तौलेगा।

प्रदेश में सबसे अधिक पढ़े-लिखे नेता के रूप में पहचान बना चुके मोहन यादव को संगठन और सत्ता का समान अनुभव है। यादव मप्र कुश्ती संघ के अध्यक्ष के साथ ही मप्र ओलंपिक संघ के उपाध्यक्ष भी हैं। 2003 में उन्हें बड़नगर से भाजपा का टिकट मिला किंतु भारी असंतोष और बाहरी उम्मीदवार के चलते उन्होंने संघ की पहल पर टिकट वापस कर दिया और 10 साल तक उज्जैन में अन्य दायित्व निभाते रहे। 10 साल बाद 2013 में पहली बार विधायक बने और ठीक 10 साल बाद अब प्रदेश के मुख्यमंत्री बनने जा रहे हैं।

प्रदेश के तमाम बड़े नेताओं के बाद भी आखिर डॉ. मोहन यादव को ही मुख्यमंत्री के रूप में क्यों चुना गया? यह सवाल राजनीतिक हलकों में पूछा जा रहा है और सभी अपने आकलन के हिसाब से इसकी विवेचना भी कर रहे हैं। दरअसल, प्रदेश में भाजपा की ओर से 2003 से ओबीसी मुख्यमंत्री ही प्रदेश की कमान संभाल रहे हैं। उमा भारती, बाबूलाल गौर (यादव) और शिवराज सिंह चौहान ने इस वर्ग को भाजपा का समर्थक बना दिया है। एक अनुमान के मुताबिक, प्रदेश में 51 प्रतिशत संख्या ओबीसी वर्ग की है जिसमें यादवों की संख्या 3 से 4 प्रतिशत है। आर्थिक रूप से सक्षम यादव समुदाय प्रदेश के विकास में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

बाबूलाल गौर प्रदेश के पहले यादव मुख्यमंत्री थे किंतु वे यादवों को एकजुट नहीं कर पाए जबकि कांग्रेस के उप-मुख्यमंत्री के रूप में सुभाष यादव ने यादवों को एकजुट कर सहकारिता को कांग्रेस की सबसे बड़ी राजनीतिक शक्ति बना दिया था। उनके जाने के बाद उनके बेटे अरुण यादव ने यादवों को संभाल कर नहीं रखा और वे कांग्रेस से कट गए। इसी दौर में मोहन यादव राजनीति की सीढ़ियों पर दौड़ लगा रहे थे। यादवों को अपना नेता मिल गया था और भाजपा को सहकारिता क्षेत्र में यादवों के दबदबे से मजबूती मिलने लगी थी।

इसके बाद हाल ही में गठित इंडिया गठबंधन ने जातिगत जनगणना के साथ ही जिसकी जितनी भागीदारी, उसकी उतनी हिस्सेदारी की बात शुरू कर दिया। इसका केंद्र बिंदु कहीं न कहीं बिहार और उत्तर प्रदेश था जिसकी काट ढूँढना भाजपा के लिए आवश्यक था। मध्य प्रदेश में भाजपा नेतृत्व को वह काट मोहन यादव के रूप में दिखी। उनकी ससुराल यूपी के सुल्तानपुर में है। इसलिए लोकसभा चुनाव प्रचार में अखिलेश यादव के समाज के योगदान पर प्रश्न उठाते दिखें, तो किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। भाजपा भी यादव समुदाय को यह संदेश देना चाहती है कि यदि समुदाय उसके साथ आएगा तो वह उन्हें भी उच्च पदों पर बिठाने से गुरेज नहीं करेगी।

प्रदेश के किसी भी गुट में न होना और सभी गुटों में स्वीकार्यता डॉ. मोहन यादव के पक्ष में काम कर गई। हालांकि चुनौतियां उनके समक्ष भी कम नहीं हैं। मुख्यमंत्री के रूप में शिवराज सिंह चौहान ने लोकप्रियता के आयाम स्थापित कर दिए हैं, यादव को उसे भी ध्यान में रखकर सुशासन देना होगा। 2024 का लोकसभा चुनाव उनके लिए अग्निपरीक्षा जैसा होगा जो उनकी ताजपोशी के पैमाने को तौलेगा।

मोहन यादव का अब तक का राजनीतिक जीवन निर्विवाद नहीं रहा है। उन पर पार्टी के ही कई नेताओं ने सिंहस्थ में हुए भ्रष्टाचार के बड़े आरोप लगाए थे। इसमें उज्जैन उत्तर से पूर्व विधायक पारस जैन बड़ा नाम थे। यहां तक कि कैबिनेट की बैठक में भी मोहन यादव द्वारा परिवार के नाम पर जमीनों की हेरा-फेरी और सिंहस्थ मेला क्षेत्र की जमीन को आवासीय में बदलने के गंभीर आरोप लगे थे। परिवारवाद को लेकर भी मोहन यादव अपने ही दल के नेताओं के निशाने पर रहे हैं और मुख्यमंत्री बनने के पश्चात उन्हें इन आरोपों से बचने की आवश्यकता है क्योंकि भाजपा के लिए परिवारवाद एक प्रमुख मुद्दा है।

बहरहाल मध्य प्रदेश में लगभग डेढ दशक लंबा शिवराज का राज समाप्त हो गया है और अब यादवराज की शुरुआत हो रही है। दूसरी ओर माधवराव सिंधिया के बेटे ज्योतिरादित्य सिंधिया केन्द्र में अब भाजपा के ताकतवर प्रतिनिधि और मोदी के करीबी बन गये हैं। इस तरह देखा जाए तो राज्य से लेकर केन्द्र तक मध्य प्रदेश भाजपा में जय माधव-जययादव युग की शुरुआत हो रही है। यह भाजपा के लिए कितनी लाभकारी रहेगी, यह तो आनेवाला समय बतायेगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा....

यागचूडामण्युपनिषद् (भाग-11)

गतांक से आगे...

जब तक वायु चलती रहेगी, तब तक बिन्दु भी चलायमान होगा, वायु के स्थिर हो जाने पर योगी स्थिरता (निश्चलता) को प्राप्त हो जाता है। इसलिए वायु की स्थिरता (प्राणायाम) का अभ्यास करना चाहिए। शरीर में जब तक वायु विद्यमान है, तब तक शरीर में जीव स्थिर रहेगा। शरीर से वायु निकल जाना ही मृत्यु है, इस कारण वायु का निरोध (प्राणायाम) करना चाहिए।

जीव शरीर से तब तक नहीं निकल सकता, जब तक शरीर में वायु आबद्ध (स्थित) है, जो व्यक्ति दोनों भृकुटियों के बीच में दृष्टि को स्थिर रखता है, वह काल को जीत लेता है, उसे काल का भय कैसा?

ब्रह्मा भी अल्प काल के भय से (अल्पायु से) मुक्ति पाने के लिए प्राणायाम करते हैं। इसलिए प्राण का निरोध करने के लिए योगियों और मुनियों को प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए। यह प्राण हंस रूप है, जो श्वास के माध्यम से छब्बीस अंगुल बाहर आता है। प्राणायाम नासिका के दोनों छिद्रों अर्थात् बायें दायें मार्ग से करना चाहिए।

सभी प्रकार के मलों से नाड़ी चक्र के शुद्ध हो जाने पर योगी प्राणों का निरोध करने (प्राणायाम-सिद्ध होने में समर्थ हो जाता है। योग का अभ्यास करने के लिए बद्ध पद्मासन लगाकर चन्द्र नाड़ी (बायें स्वर) के द्वारा वायु को भीतर खींचे पूरक करे, पुनः कुछ समय भीतर रोके कुम्भक करे, फिर सूर्य नाड़ी (दायें स्वर) के द्वारा रेचन करे अर्थात् बाहर निकाले। प्राणायाम के समय अमृत समुद्र से निकले हुए गो दुग्ध के समान श्वेत वर्ण के चन्द्रबिम्ब का ध्यान करने से साधक सुखी होता है। पुनः हृदयकमल में स्थित प्रज्वलित ज्वालासदृश भगवान् सूर्य के ध्यान के साथ प्राणायाम करना योगी के लिए सुखदायी होता है।

क्रमशः..

ऊर्जा संरक्षण दिवस

रमेश सर्राफ धमोरा

भारत में हर साल 14 दिसम्बर को राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस मनाया जाता है। भारत सरकार ने वर्ष 2001 में ऊर्जा संरक्षण अधिनियम 2001 लागू किया था। इस अधिनियम में ऊर्जा के गैर पारम्परिक स्त्रोतों को इस्तेमाल में लाने के लिए बड़े पैमाने पर तैयारी करना, पारम्परिक स्त्रोतों के संरक्षण के लिए नियम बनाना आदि शामिल था।

भारत में राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस मनाने का मकसद लोगों को ऊर्जा के महत्व के साथ ही साथ ऊर्जा की बचत के बारे में जागरूक करना है। ऊर्जा संरक्षण का सही अर्थ है ऊर्जा के अनावश्यक उपयोग को कम करके ऊर्जा की बचत करना। कुशलता से ऊर्जा का उपयोग भविष्य में उपयोग के लिए इसे बचाने के लिए बहुत आवश्यक है। ऊर्जा संरक्षण की दिशा में अधिक प्रभावशाली परिणाम प्राप्त करने के लिए हर इंसान के व्यवहार में ऊर्जा संरक्षण निहित होना चाहिए। ऊर्जा उपयोगकर्ताओं को ऊर्जा की खपत कम करने के साथ ही कुशल ऊर्जा संरक्षण के लिये जागरूक करने के उद्देश्य से विभिन्न देशों की सरकारों ने ऊर्जा और कार्बन के उपयोग पर कर लगा रखे हैं।

भारतीय संसद ने देश के ऊर्जा स्त्रोतों को संरक्षण देने के लिए ऊर्जा संरक्षण अधिनियम 2001 पारित किया है। यह अधिनियम ऊर्जा दक्षता ब्यूरो द्वारा लागू किया गया है, जो भारत सरकार का एक स्वायत्तशाषी निकाय है। यह अधिनियम पेशेवर, योग्य ऊर्जा लेखापरीक्षकों तथा ऊर्जा प्रबंधन, वित्त-व्यवस्था, परियोजना प्रबंधन और कार्यान्वयन में कुशल प्रबंधकों का एक कैडर बनाने का निर्देश देता है। ऊर्जा संरक्षण में ऊर्जा के कम या न्यूनतम उपयोग पर जोर दिया जाता है और इसके अत्यधिक या लापरवाहीपूर्ण उपयोगों से बचने के लिए कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, ऊर्जा दक्षता का अभिप्राय समान परिणाम प्राप्त करने के लिए कम ऊर्जा खर्च करना है। भारत एक ऐसा देश है जहां पूरे साल सौर्य ऊर्जा और पवन ऊर्जा का इस्तेमाल किया जा सकता है। भारत में साल भर में लगभग 300 दिनों तक तेज धूप खिली रहती है। भारत भाग्यशाली है कि सौर ऊर्जा के लिए खिली धूप, उपलब्ध भूमि, परमाणु ऊर्जा के लिए थोरियम का अथाह भंडार तथा पवन ऊर्जा के लिए लंबा समुद्री किनारा उसके पास नैसर्गिक संसाधन के तौर पर उपलब्ध है। जरूरत है तो बस उचित प्रौद्योगिकी का विकास तथा संसाधनों का दोहन करने की। अपने देश की ऊर्जा जरूरतों की मांग और आपूर्ति में बहुत बड़ा अन्तर है। देश में बिजली संकट लगातार गहराता जा रहा है। अगर इस समय बिजली संकट को गंभीरता से नहीं लिया गया तो यह भारत के विकास के लिए सबसे बड़ा अभिशाप सिद्ध हो सकता है क्योंकि तरक्की का रास्ता ऊर्जा से ही होकर जाता है। अब वैकल्पिक ऊर्जा स्रेतों पर गंभीरता से विचार करते हुए ऊर्जा बचत के लिए जरूरी उपाय अपनाने पड़ेंगे। इस मायने में सूर्य से प्राप्त सौर ऊर्जा अत्यंत महत्वपूर्ण विकल्प है।

आतंकवाद का केंद्र बन रहा कनाडा

दीपक वोहरा

मैंने ऐसा कई बार देखा है कि जो देश आतंकवाद को बढ़ावा देता है या उसे सहन करता है, वह संकट में फंस जाता है। उदाहरण के लिए, सूडान, लीबिया, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, सोमालिया, नेपाल आदि को देखा जा सकता है। इसका सबसे नवीनतम उदाहरण कनाडा है, जहां का नस्लीय नियंत्रण गैर-श्वेत प्रवासियों को पूर्ण लाभ लेने से वंचित करता है। हमें उम्मीद थी कि कनाडा अलगाव की किसी भी बात के प्रति बहुत संवेदनशील होगा, खासकर 1995 के क्यूबेक स्वतंत्रता से संबंधित जनमत संग्रह पारित होने के बाद, लेकिन उसके दोहरे मानदंड लगातार दिख रहे हैं। वह कानून के शासन और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उपदेश देता है, फिर भी 1970 में मौजूदा प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रुडो के पिता सीनियर ट्रुडो ने युद्ध उपाय अधिनियम लागू किया और क्यूबेक अलगाववादी आंदोलन को कुचलने के लिए टैंक भेजे।

हाल के वर्षों में कनाडाई नागरिकों द्वारा अंजाम दी जा रही भारत विरोधी घटनाओं के प्रति वहां की सरकार की सहनशीलता हमारे द्विपक्षीय संबंधों को प्रभावित करती है। कनाडा ने 1974 में हमारे परमाणु परीक्षण के कुछ ही दिनों बाद हमारी परमाणु इकाइयों को सहायता देना रद्द कर दिया था। उसके बाद हमारे रिश्ते ठंडे पड़ गए।

चालीस साल पहले जब कनाडाई आतंकवादियों ने एअर इंडिया के एक विमान को उड़ा दिया था, जिसमें सैकड़ों लोग मारे गए थे, तो हमने दोषियों के नाम बताकर कनाडा से उन्हें पकड़वाने में मदद करने की अपील की थी। उस समय मौजूदा प्रधानमंत्री के पिता सत्ता में थे और उन्होंने जांच को विफल करना सुनिश्चित किया। और सिर्फ एक व्यक्ति को कथित रूप से कुछ साल की जेल की सजा दी गई। यह महसूस करते हुए कि कनाडा आतंकवाद के प्रति नरम है, वहां हर धर्म के कट्टरपंथी इकट्ठा होने लगे। इस तरह कनाडा आतंकवाद का प्रमुख केंद्र बन गया।

भारत ने जब आर्थिक उदारीकरण लागू किया, तो वर्ष 1996 में कनाडाई प्रधानमंत्री व्यापार की तलाश में 300 व्यवसायियों के एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करते हुए भारत आए। लेकिन वह दौरा विफल हो गया। भारत ने आतंकवाद-विरोधी एक कार्यसमूह की स्थापना की, जिसे कनाडा ने भुला दिया। 2012 में भारत दौरे पर आए कनाडा के प्रधानमंत्री को खालिस्तान के प्रति सहानुभूति के कारण आधिकारिक रात्रिभोज पर नहीं बुलाया गया।

वर्ष 2015 में प्रधानमंत्री मोदी ने कनाडा का दौरा किया था, जो 42 वर्षों में इस तरह का पहला दौरा था और कनाडा हमें यूरेनियम बेचने पर सहमत हुआ था। इससे जिन लोगों को उम्मीद थी कि अतीत के गिले-शिकवे दूर हो जाएंगे, उन्हें जल्दी ही निराश होना पड़ा। कनाडा में जब जस्टिन ट्रूडो प्रधानमंत्री बने, तो उन्होंने एक कट्टरपंथी सिख पार्टी के समर्थन से अल्पमत की सरकार बनाई, जिसके चलते उन्हें एक सिख आतंकवादी और नशे के कारोबारी को रक्षामंत्री बनाना पड़ा। इसी साल वहां के प्रधानमंत्री ने अपनी संसद को अपने प्रिय आतंकवादी की हत्या में भारतीय संलिप्तता का आरोप लगाकर द्विपक्षीय रिश्ते को नुकसान पहुंचाया है। हालांकि इस पर कनाडा ने अब तक कोई सबूत पेश नहीं किया है, लेकिन भारत से सहयोग की अपेक्षा करता है।

भारतीय मूल के कनाडाई भारतीय राजनयिक परिसरों, हिंदू पूजा स्थलों और हिंदी फिल्म दिखाने वाले सिनेमाघरों पर हमले करते हैं। चूंकि हमारे राजनयिक सुरक्षित महसूस नहीं कर रहे थे, इसलिए भारत ने कनाडा के लोगों के लिए वीजा निलंबित कर दिया। जब जस्टिन ट्रुडो ने भारत की शिकायत की, तो भारत के विदेश मंत्री या विदेश मंत्रालय के अधिकारियों ने उसका जवाब दिया। भारत की तीखी प्रतिक्रिया के बाद उन्होंने कनाडा के भारत के साथ सक्रिय जुड़ाव बनाए रखने के महत्व पर जोर देना शुरू किया। फिर बीते नवंबर में अमेरिकियों ने कहा कि वे अपने एक नागरिक (एक कनाडाई नागरिक, वांछित आतंकवादी और स्पष्ट रूप से सीआईए एजेंट) की लक्षित हत्या को रोकने में कामयाब रहे। बस फिर क्या था, ट्रुडो खुशी से नाचने लगे।

कनाडाई और अमेरिकी उस आतंकवादी से इतना प्यार करते हैं कि वे आतंकवाद के उसके खुले वादे का स्वागत करते हैं। जस्टिन भूल रहे हैं कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र आज वाणिज्य और सुरक्षा के लिए सबसे महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक क्षेत्र है, जिसका आधार भारत है। इसलिए कोई भी देश दूसरे की खातिर भारत के साथ अपने संबंध खराब नहीं करना चाहेगा। सीमित द्विपक्षीय व्यापार में कनाडा के पास हमारी प्राथमिकता के क्षेत्र में देने के लिए बहुत ज्यादा चीजें नहीं हैं।

कनाडा में रहने वाले भारतीय मूल के लोगों में निवेशक, उद्योगपति और व्यवसायी, अत्यधिक कुशल शिक्षक से लेकर कम-कुशल सेवाकर्मी और छात्र शामिल हैं। दोनों देशों के रिश्तों में खटास आने के बाद भारतीय शैक्षणिक सलाहकार तीन लाख 20 हजार से ज्यादा छात्रों को कहीं और जाकर शिक्षा लेने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं, क्योंकि यह निश्चित नहीं है कि स्नातक करने के बाद उन्हें वहां वर्क परमिट मिल जाएगा। सोशल मीडिया पर ऐसे भयावह पोस्ट आ रहे हैं कि भारतीय छात्र वहां गहरे संकट में हैं। छात्राओं को अवांछनीय गतिविधियों में धकेला जा रहा है और आत्महत्याएं भी हो रही हैं। भारतीय छात्र मुख्य रूप से मध्यम और निम्न-वर्गीय परिवारों से हैं, जो नस्ली भेदभाव के कारण हाशिये पर चले जाते हैं, इसलिए आतंकवादियों के लिए आसान शिकार होते हैं।

भारत ने कनाडाई नागरिकों के लिए वीजा निलंबित करने के साथ-साथ ओटावा को नई दिल्ली में अपने मिशन का आकार सही करने के लिए मजबूर किया है। इसके अलावा खालिस्तानी आतंकवादियों के खिलाफ कार्रवाई तेज कर दी है। चाहे वे कहीं भी हों, उनकी संपत्ति जब्त कर ली गई है, उनके ओसीआई कार्ड रद्द कर दिए गए हैं और उनके बैंक खातों को सील कर उनका नाम दुनिया को बता दिया गया है।

भारत और कनाडा के रिश्तों में आतंकवाद एक प्रमुख विषय रहा है। जब 2018 में जस्टिन ट्रूडो भारत दौरे पर आए थे, तो पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री ने उन्हें पंजाब में आतंकी गतिविधियों में लिप्त कनाडाई आतंकवादियों की एक सूची सौंपी थी। लेकिन उन्होंने उसका कोई जवाब नहीं दिया। कनाडा पश्चिमी देशों का पिछलग्गू है, न कि वैश्विक ताकत। कनाडा इस्लामी और सिख कट्टरपंथ के साथ खेल रहा है, पर उसे अंदाजा नहीं है कि शीघ्र ही इसका खामियाजा उसे भुगतना पड़ेगा।

आज का इतिहास

1995 पेरिस में डेटन समझौते पर हस्ताक्षर किया गया।
1998 इराक पर निरस्त्रीकरण संकट: अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने इराक पर हवाई हमले का आदेश दिया यूएनएससीओएम इराक से सभी हथियार निरीक्षकों को वापस लिया गया।
1999 वेनेजुएला के वरगास में मूसलाधार बारिश के कारण बाढ़ आ गई, जिसके परिणामस्वरूप हज़ारों मौतें, हज़ारों घरों का विनाश और राज्य के बुनियादी ढाँचे का पूरी तरह से ध्वस्त हो गया।
2003 मैक्सिको के मेरिदा में पहले भ्रष्टाचार निरोधक समझौते पर 73 देशों ने हस्ताक्षर किये।
2004 क्यूबा और वेनेजुएला ने ऑमेरिकस के लिए बोलिवेरियन एलायंस की स्थापना की।
2005 11 हिंदुओं को 2002 के गुजरात हिंसा में मुसलमानों की हत्या में शामिल होने के लिए आजीवन कारावास की सजा के साथ निंदा की जाती है।
2006 एक शोध भ्रमण के अनुसार, मानव क्रिया का चीनी नदी डॉल्फिन पर सीधा प्रभाव पड़ा है, जो अब शायद विलुप्त हो गई है।
2007 सऊदी अरब के राजा, किंग अब्दुल्ला ईरान के राष्ट्रपति महमूद अहमदीनेजाद को हज यात्रा के लिए मक्का आने के लिए आमंत्रित करते हैं।
2008 इराक में अपने विदाई भाषण के दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश पर अपने दोनों जूते फेंकने के बाद अल-बगदादिया टीवी पत्रकार मुंतधर अल जैदी को रोक दिया गया है।
2009 एक हालिया रहस्योद्घाटन के अनुसार, चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी ने अपने परमाणु हथियारों के संरक्षण के लिए हेबै क्षेत्र में एक विशाल भूमिगत सुरंग का निर्माण किया है।
2010 फिलीपींस की सरकार ने लंबे समय से चल रहे कम्युनिस्ट विद्रोह को तीन साल के भीतर समाप्त करने का दावा किया है, क्योंकि यह विद्रोहियों के साथ शांति वार्ता जारी रखने की घोषणा करता है।
2012 उत्तर कोरिया के हजारों लोगों ने प्योंगयांग के किम इल-सुंग स्क्वायर में क्वांगमींग्संग -3 यूनिट 2 उपग्रह के सकारात्मक प्रक्षेपण का आनंद लिया।
2013 चीन का मिशन यूट्यू, चीन का पहला चंद्र रोवर, चंद्रमा पर भूमि। यह 1976 के बाद से चंद्रमा पर पहली नरम लैंडिंग है और तीसरी कभी रोबोट रोवर है।

मायावती के भरोसे पर कितना खरा उतरेंगे आकाश?

अनिल सिंग

उपेक्षित, पीड़ित, दमित, विस्मृत लोगों के सहयोग से स्थापित कैडर आधारित बहुजन समाज पार्टी चार दशक के उतार-चढ़ाव भरे सफर के बाद परिवारवाद की राह पर मुड़ गई है। बहुजन का हित साधने के लिए शुरू हुई यात्रा सर्वजन सुखाय के रास्ते परिजन हिताय तक आ पहुंची है। बसपा सुप्रीमो मायावती ने रविवार को लखनऊ में अपने भतीजे आकाश आनंद को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर कांग्रेस, सपा, रालोद, शिवसेना, राजद, झामुमो, पीडीपी जैसे दलों की राह पर आगे बढ़ने का फैसला किया है।

यूपी एवं उत्तराखंड छोड़कर पूरे देश में बसपा को खड़ा करने की जिम्मेदारी अब आकाश आनंद के कंधों पर है। 6 साल पहले पार्टी में सक्रिय हुए आकाश आनंद को मायावती ने वर्ष 2017 में बसपा की एक रैली के माध्यम से अपने पार्टी कैडर तथा जनता से रूबरू कराया था। तब से लगातार आकाश का कद पार्टी में बढ़ता जा रहा था।

आकाश आनंद मायावती के भाई आनंद कुमार के पुत्र हैं। सियासी गलियारे में लंबे समय से उम्मीद जताई जा रही थी कि मायावती अपने भाई आनंद कुमार को उत्तराधिकारी बना सकती हैं, लेकिन उन्होंने फैसला अपने भाई के पुत्र के पक्ष में सुना दिया है। आकाश आनंद जब से बसपा की सियासी राजनीति में सक्रिय हुए हैं, तब से ऐसा कोई करिश्मा नहीं दिखा पाये हैं, जिससे कार्यकर्ताओं में चमत्कार की कोई बड़ी उम्मीद दिखे।

मायावती ने पार्टी मीटिंग में आकाश आनंद को उत्तराधिकारी घोषित करते समय कहा, मैंने जब भी किसी को बड़ी जिम्मेदारी सौंपी, वह खुद को मेरा उत्तराधिकारी समझने लगा। पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ वह इसी तरह पेश आता था। इससे पार्टी में एक संशय पैदा हो रहा था। इसी वजह से मैंने आकाश आनंद को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। अब जब मायावती ने कार्यकर्ताओं के संशय को दूर करते हुए आकाश को बड़ी जिम्मेदारी दे दी है तो यह देखना दिलचस्प होगा कि वह क्या करिश्मा दिखा पाते हैं। बसपा और आकाश की सबसे बड़ी और पहली परीक्षा 2024 का लोकसभा चुनाव होगा। इसके बाद ही बसपा का भविष्य भी तय होगा।

माना जा रहा है कि मायावती ने आकाश को उत्तराधिकारी घोषित कर दलित वर्ग के युवाओं को लुभाने की कोशिश की है, जो तेजी से आजाद समाज पार्टी के नेता चंद्रशेखर की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। चंद्रशेखर लंबे समय से बसपा के लिए चिंता का सबब बनते जा रहे हैं। चंद्रशेखर सड़कों पर उतर कर सवर्ण वर्ग के खिलाफ उग्र राजनीति करते हुए युवाओं के बीच में अपनी पैठ लगातार

मजबूत करते जा रहे हैं। बसपा के आंदोलन के समय से जुड़े उम्रदराज दलित समर्थक तो अभी भी मायावती के साथ हैं, लेकिन युवाओं के लिए अब मायावती और बसपा नहीं बल्कि चंद्रशेखर आईकान हैं। ऐसे में आकाश के सामने वोट बैंक को बचाये रखने की चुनौती आसान नहीं रहने वाली है।

यह भी सत्य है कि चंद्रशेखर अभी इस स्थिति में नहीं पहुंचे हैं कि अपने बूते कोई बड़ा चमत्कार कर सकें, लेकिन उनकी सक्रियता लंबे समय से पश्चिमी यूपी में बसपा को नुकसान पहुंचा रही है। युवाओं में बढ़ता चंद्रशेखर का क्रेज बसपा के वोट बैंक को प्रभावित कर रहा है। उत्तराधिकारी घोषित होने के बाद भी आकाश के सामने परेशानियों का आसामान है। बिखरा हुआ कैडर, सिमटा हुआ वोट बैंक, पिछड़े एवं मुसलमानों को पार्टी से जोड़कर रखने वाले बड़े चेहरों का अभाव तथा पार्टी की सड़क पर संघर्ष से दूरी बड़ी चिंता का विषय है। वर्ष 2012 के बाद से बसपा के चुनावी प्रदर्शन को देखें तो उसकी ताकत लगातार कमजोर होती जा रही है।

बसपा की सबसे बड़ी परेशानी रही है कि कांशीराम और उनके सहयोगियों ने गांव-गांव, घर-घर घूमकर कैडर खड़ा किया तो मायावती ने केवल एक ऑफिस से अपनी पूरी सियासत को अंजाम दिया। सड़क पर उतरने से हमेशा परहेज किया। सवाल यह है कि क्या आकाश आनंद भी अपनी बुआ के नक्शेकदम पर सियासत करेंगे या कांशीराम के मिशन की तरह सड़क पर उतरकर संघर्ष को धार देने की रणनीति अख्तियार करेंगे इस सवाल का जवाब तो समय देगा, लेकिन आकाश के सामने सबसे बड़ी चुनौती गैर-जाटव, पिछड़ों एवं मुसलमान वोटरों का भरोसा जीतना होगा। वर्तमान में बसपा केवल जाटवों की पार्टी बनकर रह गई है।

गैर-जाटव एवं गैर-यादव पिछड़ों का बड़ा वोट बैंक आज भाजपा के साथ है। मुसलमान सपा और कांग्रेस के बीच झूल रहा है। इस वोट बैंक को वापस लाना आकाश के लिए बड़ी चुनौती होगी। मायावती को चार बार मुख्यमंत्री बनवाने में सहयोग देने वाले दलित एवं पिछड़े वर्ग के नेताओं में आरके चौधरी, लालजी वर्मा, जंग बहादुर पटेल, राज बहादुर, केके गौतम, स्वामी प्रसाद मौर्य, इंद्रजीत सरोज, सुखदेव राजभर, नसीमुद्दीन सिद्दीकी जैसे नेता दूसरे दलों में हैं। इन नेताओं में सुखदेव राजभर का निधन हो चुका है, और उनके पुत्र सपा के साथ हैं। ऐसी स्थिति में बड़े चेहरों के अभाव में गैर-जाटव दलित, गैर-यादव पिछड़े एवं मुसलमानों का भरोसा जीतना आसान नहीं रहने वाला है।

आकाश के सामने चुनौतियों का पहाड़ है। बीते विधानसभा चुनाव में आकाश आनंद मध्य प्रदेश, राजस्थान तथा छत्तीसगढ़ में लगातार सक्रिय रहे हैं, लेकिन राजस्थान को छोड़कर बसपा को कहीं भी जीत हासिल नहीं हुई है। उल्टे छत्तीसगढ़ एवं मध्य प्रदेश में पिछली बार अपने विधायक जिताने वाली बसपा इस बार खाली हाथ रह गई। बसपा के पास यूपी को छोड़कर हिंदी राज्यों में दो से लेकर छह प्रतिशत वोट हैं, लेकिन यह जिताऊ तभी साबित होंगे, जब इसमें जाटवों के अलावा दूसरी जातियों के वोट भी जुड़ेंगे। फिलहाल आकाश के नाजुक कंधों पर लोकसभा चुनाव जितवाने के साथ बसपा की राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा बचाये रखने की चुनौती है।

मायावती ने आकाश के सिर पर ताज तो रख दिया है, लेकिन अब यह आकाश को तय करना है कि वह कितनी उड़ान भर पाते हैं। बसपा को अगर फिर से अपनी पुरानी ताकत हासिल करनी है तो आकाश को अपने कैडर को नये सिरे से खड़ा करना होगा। सड़क पर उतरकर संघर्ष करना होगा। अपने वोटबैंक के इतर नये वोटर जोड़ने होंगे। कार्यकर्ताओं का भरोसा जीतना होगा तथा उनमें सत्ता फिर से हासिल कर पाने का विश्वास जगाना होगा।

लेकिन बीते छह साल में आकाश आनंद की सियासत देखने के बाद ऐसा लगता नहीं है कि लंदन से पढ़कर आया यह युवा दलित एवं पिछड़ी बस्तियों की खाक छानेगा, या फिर उनमें वही जातीय उन्माद पैदा कर पायेगा कि मायावती की तरह दलितों की आंख का तारा बन जाए। फिर भी मायावती ने आकाश को उत्तराधिकारी घोषित कर जो विश्वास जताया है, उसकी सफलता और असफलता का फैसला आने वाला वक्त करेगा।

एक बार फिर मौका चूक गया विपक्ष

अभय कुमार दुबे

साल 1984 में कांग्रेस ने सारे देश में विपक्ष का सफाया कर दिया था, लेकिन दो-तीन साल में ही विपक्ष कांग्रेस के मुकाबले जमकर खड़ा हो गया और उसने 1989 में उसे बहुमत पाने से रोक दिया। भाजपा की 2014 और 2019 में जीत तो कांग्रेस की उस जीत के आगे बहुत छोटी है, फिर भी विपक्ष उनका बाल बांका भी नहीं कर पा रहा है। विपक्ष इतना अप्रासंगिक तो उस समय भी नहीं हुआ था जब कांग्रेस ने 1952, 1957 और 1962 के चुनावों को कश्मीर से कन्याकुमारी तक लगातार जीता था। सोचने की बात है कि जो तब नहीं हुआ, वह अब क्यों हो रहा है। पिछले दस साल की चुनावी राजनीति पर गहरी निगाह डाली जाए तो एक दिलचस्प तथ्य यह सामने आता है कि जब भी भाजपा और नरेंद्र मोदी किसी राजनीतिक संकट का सामना करते हैं, विपक्ष उन्हें पहले से भी ज्यादा मजबूत वापसी का मौका दे देता है। वोटों के मोर्चे पर मोदी के पहले संकट की शुरुआत सत्तारूढ़ होने के नौ महीने बाद ही हो गई थी। फरवरी, 2015 में पहले आम आदमी पार्टी ने दिल्ली विधानसभा में भाजपा का तकरीबन सफाया कर दिया, और फिर साल के आखिरी महीनों में बिहार में महागठबंधन के हाथों उसे बुरी तरह पराजित होना पड़ा। इसी के तुरंत बाद मार्गदर्शक मंडल के बुजुर्ग नेताओं द्वारा लिखे पत्र ने नेतृत्व पर सवालिया निशान लगा दिए। 2016 में मोदी ने नोटबंदी का धमाकेदार कदम उठाकर अपनी मजबूती पर उमड़ रहे शंका के बादलों को साफ करने की कोशिश की लेकिन उनकी वास्तविक परीक्षा तो 2017 के फरवरी-मार्च में होने वाले उ.प्र. विधानसभा चुनावों में होने वाली थी। अगर विपक्ष इन चुनावों में दिल्ली या बिहार के मुकाबले आधा-पौना प्रदर्शन भी कर देता तो मोदी का वर्चस्व स्थापित होने से पहले ही लड़खड़ा जाता। अमित शाह ने उस समय कहा भी था कि अगर विपक्ष उ.प्र. के चुनावों को नोटबंदी पर जनमत संग्रह के रूप में देखना चाहता है तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। जाहिर है वह चुनाव मोदी-शाह के लिए 'तख्त या तख्ता' की तरह था। हम जानते हैं कि विपक्ष अपनी यह जिम्मेदारी निभाने में इतनी बुरी तरह से नाकाम रहा कि भाजपा को तीन-चौथाई बहुमत मिला। नोटबंदी की आर्थिक विफलताओं को चुनावी कामयाबी ने छिपा लिया। अगर उ.प्र. में भाजपा चूकती तो संदेश यह जाता कि जनता मोदी को खुला हाथ नहीं देना चाहती लेकिन चूका विपक्ष और उसके बाद मोदी ने 2022 तक मुड़ कर नहीं देखा। 2023 की शुरुआत भी भाजपा के लिए संकट के वर्ष की तरह हुई। गुजरे साल के आखिरी महीने में हिमाचल की पराजय, भारत जोड़ो यात्रा से कांग्रेस को मिले उछाल, महंगाई-बेरोजगारी के दंश, कर्नाटक की बहुचर्चित हार और दस साल में पहली बार बने भाजपा विरोधी विपक्षी मोर्चे ने सवाल उठा दिया कि 2024 का लोकसभा चुनाव मोदी के लिए मुश्किल तो नहीं होने जा रहा है? इस सवाल का जवाब म.प्र., छत्तीसगढ़, राजस्थान और तेलंगाना के चुनावी संग्रामों से मिलने वाला था। एक बार फिर विपक्ष के सामने 2015 जैसी चुनौती ही थी। इन चुनावों में विपक्ष 2018 वाला प्रदर्शन दोहरा देता तो 2024 की लड़ाई वास्तव में टक्कर वाली होती लेकिन विपक्ष एक बार फिर बुरी तरह नाकाम रहा। उसने न केवल अपनी सरकारें खोईं, बल्कि विपक्षी एकता की पनपती संभावना भी धूमिल हो गई। लगता है लोकसभा चुनाव में 2019 की तरह एक ही टीम मैदान में खेलेगी। कांग्रेस ने जिस तरह हिंदी पट्टी की तीन विधानसभाओं का चुनाव लड़ा है, उससे तो यही लगता है कि उसने हारी हुई बाजी ही नहीं बल्कि जीती हुई बाजी भी हारने की कला विकसित कर ली है। उसका आलाकमान अपने निर्देशों को गहलोत, कमलनाथ और पटेल से मनवाने में नाकाम रहा। हकीकत यह है कि अगर भाजपा के खिलाफ सीधी टक्कर वाले आठ राज्यों में कांग्रेस ने प्रभावी लड़ाई नहीं लड़ी तो समझ लीजिए कोई नहीं लड़ा। उसके पास अब बहुत कम समय है। इसी बीच में उसे अपने पिटे हुए नेताओं का विकल्प खोजना है, इंडिया गठबंधन को झाड़-पोंछ कर खड़ा करना है और विपक्ष के एक न्यूनतम साझा कार्यक्रम को बिना देर किए तैयार कर लेना है।

कांग्रेस की हार से विपक्षी गठबंधन पर ग्रहण

राजकुमार सिंह

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव के बाद कांग्रेस की हालत 'माया मिली न राम' वाली हो गई है। मिजोरम में तो 22 साल शासन करनेवाली कांग्रेस मात्र एक सीट पर सिमट गई, तेलंगाना में उसे शानदार जीत मिली है, लेकिन मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ की हार बहुत बड़ी है। कांग्रेस से जीत न सही, बराबर की टक्कर की उम्मीद अवश्य थी। आखिर 2018 में हुए पिछले विधानसभा चुनावों में तीनों राज्यों में उसने भाजपा से सत्ता छीन ली थी। 15 महीने बाद ज्योतिरादित्य सिंधिया की बगावत के चलते मध्य प्रदेश में तो कमलनाथ सरकार गिर गई और शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में भाजपा की सत्ता में वापसी हो गई, लेकिन राजस्थान और छत्तीसगढ़ में क्रमशः अशोक गहलोत और भूपेश बघेल सरकारों ने अपना कार्यकाल पूरा किया फिर ऐसा क्यों हुआ कि इन तीनों राज्यों में कांग्रेस मुकाबला भी करती नजर नहीं आई? बेशक भाजपा के बाद दूसरा बड़ा दल कांग्रेस ही बनी पर दोनों की सीटों के बीच फासला बहुत कुछ कहता है। बिना सीएम चेहरा पेश किए ही भाजपा की प्रचंड जीत का श्रेय स्वाभाविक ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जाता है, जो मुख्य रणनीतिकार और स्टार कैंपेनर भी रहे। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने हमेशा की तरह कुशल चुनाव प्रबंधन से उस रणनीति को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। ऐसे में स्वाभाविक सवाल कांग्रेस की हार की जिम्मेदारी-जवाबदेही को लेकर उठ रहे हैं दरअसल तमाम अटकलों के बावजूद, मोदी की रणनीति और शाह के प्रबंधन के मुताबिक भाजपा जहां तीनों राज्यों में कमोबेश एकजुट चुनाव लड़ती दिखी, वहीं कांग्रेस दिशाहीन और बिखरी हुई। बताया जाता है कि गहलोत, बघेल और कमलनाथ ने राहुल-प्रियंका गांधी के अलावा किसी कांग्रेस नेता की सुनी तक नहीं। राहुल-प्रियंका को लोग सुनने-देखने तो आए, पर उनकी बातों से प्रभावित होकर वोट नहीं दिया। लोकसभा के लिए 65 सांसद चुननेवाले इन तीनों राज्यों में शर्मनाक हार के बाद अब विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' में भी कांग्रेस की संभावनाओं को ग्रहण के संकेत मिल रहे हैं। कई-कई क्षत्रपों की अनुपलब्धता के चलते छह दिसंबर की बैठक टालनी पड़ी, पर जब भी बैठक होगी, चुनाव वाले राज्यों में पहले सीटों के बंटवारे से परहेज और फिर भाजपा को टक्कर न दे पाने पर सवाल उठेंगे ही, जिनका कांग्रेस के पास तर्कसम्मत जवाब नजर नहीं आता।

लोकतंत्र जरूरी है तो अकबरुद्दीन मजबूरी है

संजय तिवारी

9 दिसंबर को हैदराबाद में कट्टरपंथी इस्लामिक राजनीति के लिए मशहूर अकबरुद्दीन ओवैसी विधानसभा के अंतरिम सभापति की शपथ लेने पूरी तैयारी से आये थे। वो सबकुछ इस्लामिक तरीके से करना चाहते थे, और किया भी। उन्होंने हैदराबादी मुसलमानों की शेरवानी और पाजामा पहन रखा था। प्रोटेम स्पीकर की शपथ भी तेलुगु स्टेट होने के बावजूद अरबी फारसी मिस्रित उर्दू में ली। उनकी शपथ का एक एक शब्द इतनी क्लिष्ट उर्दू में था कि उर्दूवुड के रूप में मशहूर बॉलीवुड के स्क्रिप्ट राइटर को भी समझ में न आये। उन्होंने शुरुआत कुछ इस तरह की, मैं अकबरुद्दीन ओवैसी जिसे खानूनसाज़ असेम्बली का रुखुन मुंतखिब किया गया है, अल्लाह के नाम से हलफ लेता हूं कि मैं खानून का रोजे राय दस्तूरे हिन्द का वफादार और फरमाबरदार रहूंगा। हिन्दुस्तान के इफ्तदार ए आला और इसकी सालिमियत को बरकरार रखूंगा.....। मंत्री, स्पीकर या मुख्यमंत्री का निश्चित शपथपत्र होता है जिसे किसी भी भाषा में लिखा जाए उसमें कानून और गोपनीयता की ही शपथ दिलाई जाती है। अकबरुद्दीन ने भी यही किया सिवाय कानून को खानून कहने के क्योंकि हैदराबादी मुसलमान उर्दू बोलते समय क को ख ही बोलता है।

लेकिन अकबरुद्दीन के प्रोटेम स्पीकर पर हुए विवाद से पहले एक बात यह समझनेवाली है कि उन्होंने जब शपथपत्र के हर शब्द के लिए अरबी फारसी का शब्द चुना तो फिर असेम्बली को अंग्रेजी में असेम्बली ही क्यों कहा? वह इसलिए कि जिस अरबी कल्चर को उन्होंने अपनी शपथ में श्रेष्ठता के साथ प्रदर्शित किया उसमें उस असेम्बली के लिए कोई शब्द ही नहीं है जो लोकतंत्र से सजती है। इस्लाम में लोकतंत्र की कोई कल्पना नहीं है इसलिए अरबी में उससे जुड़ी शब्दावली का भी अभाव दिखता है। अधिक से अधिक सूरा शब्द का इस्तेमाल किया जा सकता है लेकिन उसका भी अर्थ काउंसिल हो सकता

है, असेम्बली या लोकतंत्रिक विधानसभा नहीं।

फिर भी अकबरुद्दीन हों या कुछ अन्य मुस्लिम नेता, वो अपने हाव भाव, आचरण और व्यवहार से यह दिखाने की कोशिश करते हैं कि वो जिस अरबी भाषा और कल्चर को प्रदर्शित कर रहे हैं वह बहुत लोकतांत्रिक है। एक दशक पहले एक टपोरी गुण्डे मवाली की भाषा में %15 मिनट के लिए पुलिस हटाकर 100 करोड़ हिन्दुओं के सफाये% का दम भरनेवाले अकबरुद्दीन भी अगर आज विधानसभा के प्रोटेम स्पीकर बन जाते हैं तो यह अकबरुद्दीन की योग्यता नहीं बल्कि भारतीय लोकतंत्र की खूबसूरती है जो अपने संवैधानिक नियमों से बंधी हुई है।

अकबरुद्दीन वरिष्ठता के क्रम में इस समय तेलंगाना विधानसभा में सबसे वरिष्ठ विधायक बन गये हैं। उनसे वरिष्ठ एक विधायक और हैं कांग्रेस के उत्तम कुमार रेड्डी। नियमों के अनुसार वो प्रोटेम स्पीकर बन सकते थे लेकिन उन्होंने खुद ये जानकारी दी है कि क्योंकि वो मंत्री रह चुके हैं इसलिए प्रोटेम स्पीकर नहीं बन सकते। इसके बाद अकबरुद्दीन ओवैसी ही सबसे वरिष्ठ विधायक रह जाते हैं जिसकी वजह से उन्हें प्रोटेम स्पीकर की शपथ दिलाई गयी ताकि वो विधायकों को शपथ दिला सकें। हालांकि कांग्रेस की जीत पर अकबरुद्दीन ओवैसी का प्रोटेम स्पीकर बनना राजनीतिक मुद्दा बनना था, और वह बना भी। भाजपा ने अकबरुद्दीन के प्रोटेम स्पीकर बनने का विरोध किया और उनके विधायक टी राजा ने ऐलान किया कि भाजपा के निर्वाचित विधायक अकबरुद्दीन के कार्यकाल में सदस्यता ग्रहण नहीं करेगें। जब स्थायी सभापति की नियुक्ति हो जाएगी तब उसके बाद भाजपा विधायक विधानसभा की सदस्यता ग्रहण करेंगे। भाजपा द्वारा अकबरुद्दीन का बहिष्कार अतार्किक भी नहीं है। स्वयं कांग्रेस भी ओवैसी परिवार की हितैषी हो, ऐसा भी नहीं है। इसी चुनाव में बीआरएस के पक्ष में मुसलमानों को लामबंद करने के लिए असदुद्दीन ओवैसी ने खुलकर कांग्रेस की आलोचना की और मुसलमानों से कांग्रेस को वोट न देने की अपील भी की। इसलिए कांग्रेस अगर नियमों से बंधे होने की बात कर रही है तो वह गलत नहीं है।

फिर भी अकबरुद्दीन ओवैसी का प्रोटेम स्पीकर बनना तो लोगों को अखर ही गया। जो व्यक्ति खुलेआम 100 करोड़ हिन्दुओं के सफाये की बात करता रहा हो, जिसकी राजनीतिक बुनियाद ही इस्लामिक सांप्रदायिकता पर टिकी हो, वह संवैधानिक पद पर बैठेगा तो आश्चर्य होना स्वाभाविक है। इसी चुनाव में वो उन पुलिसवालों को धमकियां दे चुके हैं जो समय पूरा हो जाने पर उनका लाउडस्पीकर बंद करवाने गये थे। अकबरुद्दीन ओवैसी को राजनीति विरासत में मिली है। इनके पिता सलाहुद्दीन ओवैसी ने एआईएमआईएम की शुरुआत मुसलमानों की भलाई के लिए की थी क्योंकि उन्हें भारतीय लोकतंत्र पर भरोसा नहीं था कि सरकारें मुसलमानों का भला कर सकती हैं। अकबरुद्दीन भी लोकतंत्र में इसी इस्लामिक अविश्वास के साथ पले बढ़े हैं और हैदराबाद की कुछ मुस्लिम बहुल सीटों पर अपनी सियासत करते हैं। अब उनके भाई असदुद्दीन ओवैसी जब देशभर में अपनी पार्टी का विस्तार करने में लगे हैं तब भी उनका नजरिया वही है जिस नजरिये से उनके पिता ने पार्टी बनायी थी। वैसे भी अकबरुद्दीन तो अपनी बेलगाम जबान के लिए ही जाने जाते हैं जो सिर्फ भड़काने और दंगा करवाने वाली भाषा में बात करता है। लेकिन लोकतंत्र तो संख्याबल का दूसरा नाम है। जिसके पास संख्याबल है वही विजेता है और कई बार संविधानेतर सत्ता भी। हम जिस लोकतांत्रिक रास्ते पर आगे बढ रहे हैं उसमें ऐसे अकबरुद्दीनों के लिए भी जगह है जिनकी खुद की आस्था लोकतांत्रिक व्यवस्था में नहीं है। लोकतंत्र बने रहने के लिए हमारे लिए यह जरूरी है और अकबरुद्दीन जैसे कौमी लीडर मजबूरी।

मोदी को मिली हैट्रिक की गारंटी

अजय सेतिया

कर्नाटक के बाद तेलंगाना में कांग्रेस की जीत को भाजपा हल्के में नहीं ले सकती।दक्षिण के ये वही दो राज्य हैं, जहां 2019 में भाजपा लोकसभा की 29 सीटें जीतीं थी। भारतीय जनता पार्टी के लिए यह एक बड़ा संकेत है कि दक्षिण के इन दोनों राज्यों में 2019 का आंकड़ा बरकरार रखना उसके लिए मुश्किल होगा।इन दोनों राज्यों में कांग्रेस को सिर्फ चार सीटें मिलीं थी।कांग्रेस को हमेशा हर संकट में दक्षिणी राज्यों से ही सहारा मिला है।

1977 में जब इंदिरा गांधी रायबरेली से चुनाव हार गई थी तो कर्नाटक की चिकमंगलूर सीट ने ही 1978 के उपचुनाव ने उन्हें लोकसभा में पहुंचाया था।2019 में जब राहुल गांधी अमेठी से हार गए थे, तो केरल की वायनाड सीट ने ही उनके लिए लोकसभा के दरवाजे खोले थे।जिस तरह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में लोकसभा में कहा था कि एक अकेला सब पर भारी, ठीक उसी तरह 1978 में चिकमंगलूर में नारा लगा था- एक शेरनी, सौ लंगूर, चिकमंगलूर- चिकमंगलूर। इंदिरा गांधी की चिकमंगलूर से वापसी हुई थी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हिन्दी पट्टी के उन तीनों राज्यों में फिर से वापसी हुई है, जहां 2018 में भाजपा हार गई थी।हालांकि कुछ महीने बाद हुए 2019 के लोकसभा चुनावों में मोदी के नेतृत्व में भाजपा इन तीनों राज्यों की 65 में से 62 लोकसभा सीटें जीत गई थीं।इन तीनों राज्यों में भाजपा की जबर्दस्त वापसी से यह तो स्पष्ट हो गया है कि वह इन तीनों राज्यों में 2019 वाला आंकड़ा 2024 में भी बरकरार रखेगी।

हिन्दी बेल्ट के 11 राज्यों उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल, चंदीगढ़, पंजाब, जम्मू कश्मीर, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड की 245 सीटों में से भाजपा खुद 183 सीटें जीतीं थीं और उसके सहयोगी भी 31 सीटें जीते थे, यानी 245 में से 214 सीटें एनडीए जीती थी।बाकी बची 31 सीटों में से 21 इंडी एलायंस की हैं, दस बसपा की हैं, जो किसी एलायंस का हिस्सा नहीं है।

यह अलग बात है कि 2019 में भाजपा के सहयोगी के रूप में 16 सीटें जीतने वाला जदयू अब इंडी एलायंस में है।वैसे किसी भी एक चुनाव को अगले चुनाव का सेमीफाइनल नहीं कहा जा सकता, लेकिन 2023 के पांच विधानसभा चुनावों को कांग्रेस लोकसभा चुनावों का सेमीफाइनल मान कर लड़ रही थी।इंडी एलायंस और कांग्रेस सेमीफाइनल में बुरी तरह हारे हैं7

हिन्दी बेल्ट के तीन राज्यों के चुनाव नतीजों ने बता दिया है कि इन 11 राज्यों में भाजपा को अपनी सीटें बढ़ाने की संभावनाएं बनी हुई हैं।इन चुनाव नतीजों ने विपक्षी दलों का यह भ्रम भी तोड़ दिया है कि नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता में कमी आई है, या वोटर उनके कामों से खुश नहीं हैं, या देश में उनके नेतृत्व के प्रति किसी तरह की हताशा है।

इन चुनाव नतीजों ने यह भी साबित किया है कि राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा से उनकी लोकप्रियता में बढ़ोतरी कांग्रेस और कांग्रेस समर्थकों का भ्रम था।अगर सच में उनकी लोकप्रियता में बढ़ोतरी हुई होती, तो उसके नतीजे दिखाई देते।हिमाचल प्रदेश और कर्नाटक में कांग्रेस की जीत और अब उसमें तेलंगाना को

भी जोड़ दीजिए, तो इसका मतलब यह नहीं है कि इन राज्यों में कांग्रेस के समर्थन में हवा बहने लगी है।

इन तीनों ही राज्यों में सरकारों के खिलाफ नकारात्मक वोटों का कांग्रेस को फायदा हुआ।हिमाचल प्रदेश और कर्नाटक में भाजपा अपनी सरकारों के खिलाफ बनी एंटी इनकम्बेंसी को नहीं रोक सकी और तेलंगाना में भारत राष्ट्र समिति अपनी सरकार के खिलाफ बनी एंटी इनकम्बेंसी को नहीं रोक सकी।बीआरएस उसी तरह घमंड का शिकार थी, जैसे घमंड के घोड़े पर सवार होकर कांग्रेस ने इन चुनावों में इंडी एलायंस के सहयोगियों सपा और जेडीयू को मध्यप्रदेश में भाव नहीं दिया।

कांग्रेस को यह भी समझना होगा कि पिछले 20 सालों में नरेंद्र मोदी ने जो विश्वसनीयता बनाई है, उसे झूठे आरोपों से खत्म नहीं किया जा सकता।राहुल गांधी ने जिस तरह उद्योगपति गौतम अडानी के बहाने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए, उसे जनता ने उसी तरह स्वीकार नहीं किया जैसे 2019 में स्वीकार नहीं किया था।

मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में भाजपा की जीत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि हिन्दी बेल्ट के वोटरों को मोदी के मुकाबले राहुल गांधी स्वीकार्य नहीं है।वोटरों ने राहुल गांधी की गारंटियों के मुकाबले मोदी की गारंटियों पर भरोसा किया।इन तीनों राज्यों में 2018 में भाजपा ने 197 सीटें जीतीं थी, जबकि कांग्रेस ने 281 सीटें जीतीं थीं।जबकि इस बार भाजपा ने 330 सीटें जीती है, और कांग्रेस 170 ही जीत पाई, यानी वह वहां भी नहीं पहुंच सकी, जहां 2018 में भाजपा पहुंच सकी थी।आप इससे कांग्रेस के वोट बैंक में गिरावट को देख सकते हैं।

इन चुनाव नतीजों का कांग्रेस के लिए एक सबक यह भी है कि फिलहाल आने वाले पांच सालों में उसके पास मोदी का विकल्प नहीं है।राहुल गांधी तो मोदी का विकल्प कभी भी नहीं हो सकते।मल्लिकार्जुन खड़गे को कांग्रेस अध्यक्ष बना कर गांधी परिवार ने सोचा था कि दलित वोट बैंक उसकी झोली में आ जाएगा, कर्नाटक में ऐसा हुआ भी, लेकिन उसका असर हिन्दी बेल्ट में बिलकुल नहीं हुआ।

भाजपा ने आदिवासी, पिछड़ों, दलितों और महिलाओं में अपना प्रभाव बड़ी तेजी से बढाया है।उन्हें आर्थिक रूप से तरक्की के अवसर ही नहीं दिए, बल्कि सत्ता में भागीदारी के रास्ते भी खोले हैं।एक जमाने में भाजपा उंची जातियों की पार्टी मानी जाती थी, लेकिन अब वह उन जातियों का प्रतिनिधित्व करती है, जो 75 साल से सत्ता में भागीदारी से वंचित रही।इसलिए राहुल गांधी का जातीय जनगणना का दांव भी नहीं चला।जब राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में नहीं चला तो बाकी देश में कहां चलेगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चुनाव नतीजों के बाद घोषणा कर दी है कि देश की जनता ने उन्हें हैट्रिक की गांरटी दे दी है।इंडी एलायंस के लिए यह बहुत बड़ा झटका है, अब क्षेत्रीय दल भी यह सोचने पर मजबूर होंगे कि उन्हें कांग्रेस को साथ लेने का लाभ होगा या नुकसान होगा।चुनावों के दौरान ही जब भारत की क्रिकेट टीम आस्ट्रेलिया से वर्ल्ड कप फाइनल का मैच हार गई थी, तो राहुल गांधी ने नरेंद्र मोदी को पनौती कहा था, क्योंकि उस मैच को नरेंद्र मोदी देख रहे थे।अब कांग्रेस को सोचना चाहिए कि क्या राहुल गांधी कहीं उसके लिए पनौती तो नहीं बन गए हैं।

कांग्रेस को कोई और विकल्प ढूंढ कर 2029 के चुनावों की रणनीति पर विचार करना चाहिए।दलित चेहरे के रूप में मल्लिकार्जुन खड़गे विपक्ष का बेहतरीन चेहरा हो सकते थे, वह भाजपा के दलित वोट बैंक में सेंध लगा सकते थे, लेकिन वह पार्टी को नेतृत्व देने के बजाए राहुल गांधी की स्टेपनी बन कर ही रह गए।इन चुनावों में जहां कहीं भी राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे किसी मंच पर साथ दिखे, वहां कांग्रेस के किसी नेता ने खड़गे की तरफ देखा ही नहीं।खड़गे किसी भी नेता से तब तक कोई मीटिंग नहीं करते, जब तक राहुल गांधी उनके साथ न हों।ऐसी स्थिति में दलित मतदाता कैसे कांग्रेस की तरफ आकर्षित होंगे।

रिच लुक देता सिल्वर रोडियम

सिंपल साड़ी को यदि सलीके से पहना जाए तो उसकी खूबसूरती बढ़ जाती है इसके साथ ही साड़ी में यदि एसेसरीज अटैच कर दी जाए तो फिर क्या कहने। यही वजह है कि साड़ी एसेसरीज की इन दिनों मार्केट में ढेरों वेराइटी मौजूद हैं। पहले न तो हैवी वर्क वाली साड़ियों का चलन था और न ही आए दिन पार्टियाँ हुआ करती थीं। लेकिन अब स्टेटस मेंटेन करने और मैचिंग के लिए कई तरह की एसेसरीज का इस्तेमाल होने लगा है इसमें साड़ी पिन और ब्रोचेस अहम होते हैं। ये कई डिजाइन और मटीरियल में उपलब्ध हैं।

डबल लॉक वाले

ये ब्रोचेस ऐसी महिलाओं के लिए अच्छे होते हैं, जिनके छोटे बच्चे हों। रिंकू फैंसी शॉप की संचालिका रिंकू बताती हैं, कि ये इस तरह के पिन में डबल लॉक होता है। इसका ऊपर का सिरा प्लास्टिक कैप जैसा होता है। पिन

लगाकर इसे डबल लॉक कर दिया जाता है, जिससे पिन खुलने का डर नहीं रहता है। अक्सर छोटे बच्चे को जब गोद में लिया जाता है तो पिन खींचने पर वह खुल जाता है, जिससे बच्चे को चोट लगने का डर रहता है। ऐसे में डबल लॉक वाले ब्रोच बहुत अच्छे होते हैं।

सिल्वर रोडियम पॉलिश

सिल्वर रोडियम पॉलिश वाले ब्रोचेस भी महिलाएँ काफी पसंद करती है। यह बहुत रिच लुक देता है, साथ ही पार्टीवियर होता है। सिल्वर पर थोड़ा बहुत स्टोन का काम होता है। उन्होंने बताया कि इसका प्रयोग ब्रोच के अलावा साड़ी पिन के रूप में भी किया जा सकता है।

कपड़ों पर सितारे, मोती जड़े

कपड़ों से भी ब्रोचेस तैयार किए जाते हैं। इसमें कपड़े को मनचाहे शेप में काटा जाता है और इन पर सितारे, मोती या कुंदन से वर्क किया जाता है। कपड़े वाले ब्रोचेस बहुत हल्के होते हैं। ये साड़ी से मैचिंग के भी मिलते हैं। इसके अलावा प्लास्टिक ब्रोचेस भी काफी पसंद किए जाते हैं। ये ब्रोच डेली यूज के लिए बेस्ट होते हैं।

पोलकी ब्रोचेस

जोधा अकबर वाले पोलकी के ब्रोचेस भी इन दिनों चलन में है। इस तरह के साड़ी ब्रोच भी बहुत हैवी और पार्टीवियर साड़ी के साथ इस्तेमाल किए जाते हैं, जो एक एसेसरी का लुक भी देता है।

एंटीक मटेरियल

दुकानदारों के अनुसार इन दिनों एंटीक मटेरियल वाले ब्रोच का क्रेज है। इसमें काफी फिनिशिंग होती है और यह बहुत अच्छा लुक देता है, जो 50 से 500 रुपए तक में उपलब्ध है।

जीवन साथी ढूंढ़ने का मजा

आज के युवाओं में भी अपने मित्र के लिए प्रेम या हमसफर ढूँढने का चलन जोरों पर है। इसके पीछे कहीं एक भली भावना ही सबसे पहले होती है, लेकिन इसके अलावा एक ख्वाहिश शायद कहीं यह भी होती हो कि एक अच्छे काम का क्रेडिट मिलेगा और फिर युवाओं के लिए यह मजे का काम भी है।

ऐसा केवल दोस्तों के ही बीच हो रहा हो यह भी नहीं है। बहन-भाई और कजिन्स भी एक-दूसरे के लिए गर्लफ्रेंड या जीवनसाथी ढूँढने में मजा लेने लगे हैं।

तेईस वर्षीय विजयता और रागिनी स्कूल के दिनों से ही दोस्त हैं। चूँकि विजयता रागिनी से कुछ महीने बड़ी हैं, इसलिए वह हरदम बड़े-बूढ़ों-सा व्यवहार करती रहती है। उसकी दिली तमन्ना है कि रागिनी की शादी के लिए वही सबसे पहले एक अदद, अच्छा लड़का जुटा डाले।

यूँ इस मामले में रागिनी के घर वाले भी दौड़ लगा रहे हैं, लेकिन विजयता उनसे जीतना चाहती है... वरना वह फिर बेस्ट फ्रेंड कैसे कहलाएगी भला? नतीजा... कॉफी हाउस, रेस्तराँ, पार्टी, शादी-ब्याह, शॉपिंग करते समय या कॉलेज केंटीन में बैठे हुए विजयता हर लड़के को रागिनी के हिसाब से तौलने लगती है और रागिनी को उसकी खूबियाँ और खामियाँ बताने लगती हैं।

दिक्कत यह है कि रागिनी जब तक एक लड़के पर फोकस करे, विजयता को कोई दूसरा अच्छा ऑप्शन दिखाई दे जाता है और वो रागिनी को उस तरफ मोड़ देती है।

आखिरकार कुछ दिन पहले रागिनी की मित्रता परेश से हो गई। दोनों ने अब तक कुछ वक्त साथ बिताया है और अपने रिश्ते को लेकर वे सीरियस होने लगे हैं। विजयता हालाँकि इस बात से खुश भी है, लेकिन उसे अफसोस है कि इसका क्रेडिट उसे नहीं मिला। कुछ समय पूर्व आई फिल्म आयशा में सोनम कपूर ने एक ऐसी ही युवती का रोल किया था, जो अपनी सहेली के लिए पार्टनर ढूँढने को उत्सुक है। यह रोल उन्नासवीं सदी के ब्रिटिश समाज को ध्यान में रखकर लिखा गया, जेन ऑस्टिन के उपन्यास एमा पर आधारित था। उस समय उपन्यास की नायिका भी वही करती थी, जो इस फिल्म में सोनम करती दिखाई गई हैं। यहाँ एक सबसे बड़ा अंतर है समय का। 19वीं सदी से लेकर आज तक समाज में कई उलट फेर हुए हैं, लेकिन फिर भी विवाह और पारंपरिक अन्य तमाम मुद्दों को लेकर समाजों के विचारों में कोई खास फर्क नहीं आया है। इन मामलों में आज भी परंपरा, रिवाज और यहाँ तक कि कई कट्टर विचारों को भी पोषित किया जा रहा है।

खैर...फिलहाल हमारा मुद्दा यह है कि आज के युवाओं में भी अपने मित्र के लिए प्रेम या हमसफर ढूँढने का चलन जोरों पर है। इसके पीछे कहीं एक भली भावना ही सबसे पहले होती है, लेकिन इसके अलावा एक ख्वाहिश शायद कहीं यह भी होती हो कि एक अच्छे काम का क्रेडिट मिलेगा और फिर युवाओं के लिए यह मजे का काम भी है। ऐसा केवल दोस्तों के ही बीच हो रहा हो यह भी नहीं है।

बहन-भाई और कजिन्स भी एक-दूसरे के लिए गर्लफ्रेंड या जीवनसाथी ढूँढने में मजा लेने लगे हैं। एक बड़ा कारण यह भी है कि एक युवा मन को दूसरा युवा मन ज्यादा अच्छी तरह समझ सकता है। फिर किसी भी युवा को अपने दोस्त या भाई-बहन की पसंद-नापसंद भी परिवार के बुजुर्गों से ज्यादा पता होगी, क्योंकि वह उसके साथ या उसी उम्र के लोगों के साथ ज्यादा वक्त बिताते हैं।

अब 35 वर्षीय करन को ही ले लीजिए। करन अपने दोस्तों के साथ-साथ परिवार में भी मैचमेकर के नाम से प्रसिद्ध है। अब इसे संयोग कहें या भाग्य... करन के चारों अच्छे दोस्तों रीमा, रंजन, कुशाग्र और राहुल तथा उसकी बहन सहित पाँच कजिन्स की शादी करवाने में करन का ही हाथ है। उनके जीवनसाथी ढूँढने के लिए करन प्रतिबद्ध था और उसने यह कर दिखाया।

खुद करन हँसते हुए कहता है- असल में जब मैं अपनी बहन के लिए सही मैच ढूँढ रहा था तो मुझे कुछ ऐसे अच्छे लोग भी मिले, जो भले ही मेरी बहन के व्यक्तित्व या उसकी पसंद से मेल नहीं खाते थे, लेकिन मेरे दोस्तों या कजिन्स के हिसाब से सही थे। इसलिए मैंने निस्वार्थ भावना से वे रिश्ते उन लोगों को बता डाले और किस्मत से उन लोगों को भी बात जम गई। तबसे सब मुझे मैच मेकर के नाम से बुलाने लगे हैं। वैसे शादी-ब्याह या फिर किसी भी रिश्ते का बनना बहुत कुछ संजोग और अन्य चीजों पर निर्भर करता है। मेरे साथ इस मामले में सही मैच का प्रतिशत ज्यादा हो गया।

हालाँकि सभी लड़के इस बारे में करन की तरह नहीं सोचते। ज्यादातर लड़के ऐसी बातों को लड़कियों की ही फील्ड मानते हैं और वाकई लड़कियाँ इस ओर ध्यान भी अधिक देती हैं, लेकिन करन जैसे लड़के भी मिल ही जाते हैं। अपनी किसी दोस्त को ब्रेकअप के बाद उस अवसाद से उबारना और एक नए साथी से उसे मिलवाना, किसी शर्मीली लड़की को एक भरोसेमंद साथी से मिलवाना या फिर किसी सखी के लिए वर ढूँढने जैसे कई काम युवतियाँ शौक से कर रही हैं। अच्छा है, इससे युवतियों के परिजनों को भी राहत की साँस लेने का मौका मिल सकता है और हो सकता है इस मामले में सखी की च्वॉइस ज्यादा फिट बैठे।

दूल्हा - दुल्हन का सुखी संसार

लाडो हमारी है चाँदतारा,
वो चाँदतारा वर माँगती है
बन्नो हमारी है चाँदतारा,
वो चाँदतारा वर माँगती है॥

ढोलक की थाप और घर में गूँजते ये विवाह के गीत सुन मन मयूर नाच उठता है। बेटी के ब्याह की सोच-सोच ही ऐसा लगने लगता है, मानो सारे जहाँ की खुशियाँ हाथ लग गई हों, सारे सपने पूरे हो गए हों। सच ही तो है! बेटी के जन्म के साथ उसको स्पर्श करते ही न जाने कितने रंग-बिरंगे खुशियों की सौगात से परिपूर्ण सपने आँखों में तैरने लगते हैं।

ज्यों-ज्यों वो बड़ी होती जाती है, त्यों-त्यों ख्वाब के साकार होने की इच्छा भी माता-पिता की बलवती होने लगती है और वे तन-मन धन से उन्हें पूरा करने में लग जाते हैं।

यही फिर उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य रह जाता है कि बेटी को सिर्फ और सिर्फ सुखी संसार ही मिले। कैसी भी परेशानी अथवा दु:ख की घड़ी सदा-सदा कोसों दूर रहे। लेकिन सपना जब तक सपना रहता है तभी तक अच्छा लगता है, क्योंकि हकीकत बन जब सामने आता है तो जरूरी नहीं जैसा आपने देखा-सोचा, बिलकुल वैसा ही यथार्थ में भी दिखाई दे, थोड़ा-बहुत अदल-बदल तो हो ही जाता है।

इसीलिए कहा गया है कि जो माता-पिता आपसी सूझ-बूझ व समझदारी से सपने व सच्चाई में ठीक सामंजस्य स्थापित कर लेते हैं। वे फिर स्वयं के साथ-साथ बेटी के सुखद भविष्य की भी नींव रख लेते हैं अन्यथा उनके साथ-साथ ताउम्र उसे भी परेशानी उठानी पड़ती है।

रश्मि, मलिक दंपति की इकलौती बेटी है। बचपन से लेकर आज तक जो भी उनकी भावी दामाद को लेकर इच्छाएँ-आकांक्षाएँ थीं, सब वे एक ही लड़के में देखना चाहते थे। नतीजतन जितने भी रिश्ते आते, सभी में कुछ न कुछ कमी उन्हें नजर आ ही जाती। कभी संयुक्त परिवार है तो कभी खानदान ज्यादा ऊँचा नहीं लग रहा।

कभी लड़के का रूप-रंग सलोना है तो कभी लड़के की कम आय ही नजर आने लगती। देखते-देखते रश्मि 27 साल की हो गई। अब न तो उसमें वो मासूमियत-रौनक रह गई, जो पहले थी साथ ही मलिक दंपति का भी धैर्य व हिम्मत धीरे-धीरे जवाब देने लगी। अब तो हर पल उन्हें यही लगता, बड़ी भूल कर दी जो इतने नुक्स निकाले।

कई अच्छे-अच्छे रिश्ते बिना वजह ही हाथ से निकल जाने दिए। जहाँ पहले मनमाफिक सब कुछ मिल जाता, वहीं अब मन को समझा कहीं न कहीं बात पक्की करनी ही होगी, नहीं तो देर होती जाएगी। ऐसा सिर्फ मलिक दंपति के साथ ही न होकर कई माता-पिताओं के साथ होता है और अच्छे-अच्छे के चक्कर में वे इधर-उधर भटकते ही रहते हैं। समझदारी व बुद्धिमत्ता से न सोच पाने के कारण फिर बाद में जैसे-तैसे समझौता करना ही पड़ता है और जिंदगीभर यही अफसोस दिल में रह जाता है कि हमारी बेटी को ज्यादा सुख-खुशियाँ मिल सकती थीं, यदि हमने वास्तविकता को पहचान हवा में सपने न बुने होते। ऐसे ही मेरी परिचिता की बेटी साधारण रंग-रूप की है। पढ़ाई-लिखाई या फिर अन्य क्षेत्र में भी औसत दर्जे की ही रही है किंतु उसे भी चाहिए- सपनों का-सा राजकुमार, जो जिन्ना की भाँति पलक झपकते ही उसकी हर इच्छा पूरी कर दे। पलभर में सारे सुख-साधन उपलब्ध करा दे। आजकल इस तरह की विचारधारा का एक बड़ा कारण व्यक्ति की अपरिपक्व सोच तथा आर्थिक स्थिति का मजबूत होना भी है, क्योंकि पैसे के बल पर वे सब कुछ पाना चाहते हैं। जब माता-पिता लड़का देख रिश्ते तय करने जाते हैं तो एक खरीददार की तरह ही उनका व्यवहार हो जाता है कि जब पैसा अच्छा देंगे तो माल भी अच्छा ही चाहिए। कहीं किसी प्रकार की कोई कमी नहीं होनी चाहिए। बस! यही संकीर्ण मानसिकता व सोच का ढंग ही उनकी परेशानी का कारण बन जाता है, जो कि आज नहीं तो कल उन्हें पछताने के लिए मजबूर करता ही है। कहते हैं न जोड़ियाँ स्वर्ग में बनती हैं।

रसोई से

कुट्टू के पूड़ी

विधि :

कुट्टू के आटे को छन्नी में छान ले, आलुओं को मैश करके आटे में डाल दें, इसमें बारीक कटी हरी मिर्च, सेंधा नमक और हरा धनिया डालकर अच्छी तरह मिला लें। हाथ में तेल लगाकर छोटी छोटी लोई बनाकर हाथ से दबादबाकर फैला लें। कड़ाही में तेल गरम करके पूड़ी डालकर, करारी कर सेक लें। गरमागरम पूड़ी आलू की सब्जी या रायते के साथ सर्व करें।

सामग्री :

200 ग्राम कुट्टू का आटा, 4 आलू उबले हुए, 2 हरी मिर्च, 1 टी स्पून सेंधा नमक, 2 टे.स्पून बारीक कटा हरा धनिया, तलने के लिए रिफाइंड।

ब्यूटी टिप्स

माँ के लिए बॉडी शेप बहुत मायने रखती है

अगर आप भी न्यू मॉम हैं तो हो सकता है डिलिवरी के बाद आपका बॉडी साइज बढ़ने से कपड़ों का साइज भी एम से एल हो गया हो लेकिन इससे घबराए नहीं। बल्कि अपने ड्रेसअप से लेकर एक्सेसरी का खास ख्याल रखें। ध्यान देने की बात यह है कि टाइट फिट और बेल्ट वाली डेसेज अवॉइड करें :

क्या आप हाल ही मैं मां बनी हैं? अगर हां, तो जाहिर है कि आपकी प्रॉरिटी भी बदल गई होंगी। अब अक्सर आप गोल्ड या डायमंड की जगह डायपर या ऐसी ही दूसरी चीजों के बारे में सोचती होंगी। रॉक म्यूजिक की जगह बच्चे के चीखने-चिल्लाने या हंसने की आवाज कानों को सुनने को मिलती होगी। एक प्यारे से बच्चे के बारे में चौबीस घंटे आपका दिमाग सोचता होगा। शायद अब अपनी चीजें आपके लिए इतनी प्राइमरी न हों।

लेकिन मां बनने का मतलब यह भी नहीं होता कि आप किसी पार्टी में अच्छे से ड्रेस अप ही नहीं हो सकती। हाल ही में मां बनी फैशन डिजाइनर रागिनी गोयल कहती हैं कि अपनी नई जिम्मेदारी को निभाते हुए कई लेडीज ये भूल जाती हैं कि वे प्रेग्नेंसी से पहले कैसी थीं। वे बताती हैं कि मेरी हाल ही में डिलिवरी हुई है। मुझे मालूम है कि ऐसे में अपने लिए टाइम निकालना कितना मुश्किल है। वहीं, बॉडी का एक्स्ट्रा फेट देखकर बहुत डिप्रेस्ड फील होता है। मुझे लगता है कि ऐसे में अगर आप कहीं जा रही है तो बेझिझक अपनी सिंपल सी ड्रेस के साथ अच्छी सी जूलरी भी पहनें। आप ऐसी कोई भी डेस पहन सकती हैं जो रैप करने वाल न हो। साथ ही में बेल्ट वाली डेसेज भी अवॉइड करें।

जाहिर है मां बनने के बाद आपकी बॉडी में कुछ चेंज आएगा ही। फैशन डिजाइनर अराधिका रेने को लगता है कि अगर इस समय भी आप प्रेग्नेंसी से पहले की जींस या टी-शर्ट में खुद को फिट देखना चाहेंगी तो कॉन्फिडेंस कम होगा। अराधिका कहती हैं कि ऐसे में आपको कंफर्टेबल कपड़े पहनने चाहिए। फ्लैट फुटवियर कभी आउट ऑफ फैशन नहीं होते इसलिए हील पहनना अवॉइड करें। वहीं अगर कोई सिलिब्रटी या मॉडल हाल ही में मां बनी हो तो उसके लिए बॉडी की शेप बहुत मायने रखती है। स्टाइलिस्ट जेसी पवार के मुताबिक, बड़ी सेलिब्रिटिज अपने लिए डाइटिशियन और वेट ट्रेनर्स को अपॉइंट करती हैं जो समय समय पर उन्हें सलाह देते हैं। लेकिन इस समय इन सब चीजों की जरूरत नहीं है। बल्कि जरूरत है प्रॉपर डाइट और एक्सरसाइज की। धीरे धीरे बॉडी के शेप में आने तक ऐसे कपड़े पहने जा सकते हैं जिनमें बॉडी शेप पूरी तरह हाइलाइट न हो। आप अच्छे पिंट वाले कुछ कपड़े चूज कर सकते हैं।

डिजाइनर आर्य वैद्य कहते हैं कि किसी भी ऐसे आउटफिट में अपने को फिट करने की न सोचें जिसे आप प्रेग्नेंसी से पहले पहनते थे। अपने साइज एम से एल होने पर भी चिंता न करें। कॉन्सनटेट करें तो सही फिटिंग पर। आप थोड़े बड़े वी नेक टॉप पहन सकती हैं जो पेट से ढीले पर हिप्स से थोड़े टाइट हों। लैंगिंग्स भी एक अच्छा ऑप्शन है। बूटिक ऑनर सबाह शेख कहती हैं कि अपने कपड़े, जूलरी, शूज और हेयर डिलिवरी के बाद आपका टमी थोड़ा निकल जाता है जो समय के साथ ही जाता है। थोड़े फ्लोई स्टफ का कोई भी ड्रेस पहन सकते हैं। यह ट्रेंडी और सुंदर भी लगेगा। अगर आप एक वर्किंग विमिन हैं तो हो सकता है आपके लिए परेशानी हो, लेकिन फिर भी बिना झिझक के वो पहनें, जो पर्सनैलिटी और बॉडी शेप पर अच्छा लगे। वैसे जब आप ऑफिस से लौटकर अपने मुस्कुराते बच्चे को देखेंगी तो सारी परेशानी ही दूर हो जाएगी।

सॉफ्ट बालों के लिए

तीन चम्मच बेसन में डेढ़ गिलास पानी मिला कर इसे सिर के बालों में आधा घन्टे तक लगाए रखें। इसके बाद बालों को गुनगुने पानी से धो डालें। सूखने पर अच्छी तरह से बालों को झाड़ लें। ऐसा करने से सिर में लगे बेसन के कण अच्छी तरह से सिर के बालों से निकल जाते हैं और बाल चमकदार लगने लगते हैं। बालों को न तो ज्यादा तेज गरम पानी से धोने चाहिए और न ही बालों को रगड़कर पोंछना चाहिए। बालों को सुखाने के लिए खुरदरा नहीं बल्कि नरम रोएँदार तौलिया इस्तेमाल में लाना चाहिए। सिर पर तौलिये को लपेट कर थपथपा कर सिर का पानी सुखाना चाहिए।

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

शपथ लेने के साथ ही भाजपा के 50वें मुख्यमंत्री बने मोहन यादव

भोपाल। मोहन यादव ने बुधवार (13 दिसंबर) को मध्य प्रदेश के 19वें मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। मध्य प्रदेश में जगदीश देवड़ा और राजेंद्र शुक्ल भी उप मुख्यमंत्री बने। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने हाल ही में संपन्न विधानसभा चुनाव 2023 में तीन राज्यों मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में जीत हासिल कर सभी को चौंका दिया। पार्टी ने मध्य प्रदेश में 163 सीटें जीतीं और अपनी सरकार बरकरार रखी। इसने राजस्थान और छत्तीसगढ़ में क्रमश: 115 और 54 सीटें जीतकर कांग्रेस पार्टी को बाहर कर दिया। विष्णु देव साय और भजन लाल शर्मा छत्तीसगढ़ और राजस्थान में भाजपा सरकारों का नेतृत्व करेंगे। शपथ ग्रहण के साथ ही मोहन यादव बीजेपी के 50वें मुख्यमंत्री बन गये। 6 अप्रैल 1980 को अपनी स्थापना के बाद से भाजपा कई राज्यों में अपने दम पर सत्ता में रही है, लेकिन 1990 तक किसी भी राज्य में मुख्यमंत्री स्थापित करने में विफल रही।

कांग्रेस ने देश को जो घाव दिए हैं, इतिहास उसका गवाह है

नईदिल्ली। जवाहरलाल नेहरू के खिलाफ गृह मंत्री अमित शाह की टिप्पणी पर राहुल गांधी के हमले का जवाब देते हुए, भारतीय जनता पार्टी ने बुधवार को आजादी के बाद तत्कालीन रियासतों को भारत संघ के साथ एकीकृत करने में सरदार वल्लभभाई पटेल के योगदान का जिक्र किया। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि इतिहास पूर्व पीएम जवाहरलाल नेहरू और कांग्रेस पार्टी को कभी माफ नहीं करेगा। राजनीतिक फायदे के लिए कांग्रेस ने देश को जो घाव दिए, इतिहास उसका गवाह है। भाजपा नेता रविशंकर प्रसाद ने दावा किया कि भारत के पहले गृह मंत्री द्वारा नियंत्रित रियासतों में कोई समस्या नहीं थी, लेकिन देश के पहले प्रधान मंत्री नेहरू द्वारा प्रबंधित एक राज्य (जम्मू और कश्मीर) में कई चुनौतियाँ थीं। उन्होंने कहा कि अनुच्छेद 370 का मसौदा क्यों तैयार किया गया था? यह अस्थायी था। कांग्रेस के लोग इसके विरोध में थे। ये इतिहास की हकीकत है।

जद(यू) की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक 29 को दिल्ली में

पटना। बिहार के एक प्रमुख राजनीतिक दल जनता दल (यूनाइटेड) की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक 29 दिसंबर को राजधानी दिल्ली में होगी, जिसमें मुख्यमंत्री नीतीश कुमार सहित पार्टी के वरिष्ठ नेता शामिल होंगे। पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव आफाक अहमद खान की ओर से जारी एक आधिकारिक बयान में बुधवार को यह जानकारी दी गई। बयान में कहा गया, ''राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह (नेता संसदीय दल) ने 29 दिसंबर 2023 को पूर्वाह्न 11:30 बजे नयी दिल्ली में पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक निर्धारित की है। इस बैठक में पार्टी के सर्वोच्च नेता बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार समेत पार्टी के वरिष्ठ नेता और राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य शामिल होंगे।

गुजरात से आप विधायक भूपेन्द्रभाई भायानी का इस्तीफा

गांधीनगर। आम आदमी पार्टी के विधायक भूपेन्द्रभाई भायानी ने बुधवार को गुजरात विधानसभा से इस्तीफा दे दिया। सूत्रों ने बताया कि वह भाजपा में शामिल हो सकते हैं। एक अधिकारी ने बताया कि जूनागढ़ जिले की विसावदर सीट का प्रतिनिधित्व करने वाले भयानी ने सुबह गांधीनगर में गुजरात विधानसभा अध्यक्ष शंकर चौधरी को अपना इस्तीफा सौंप दिया। सोशल मीडिया पर प्रसारित अपने त्यागपत्र में भायानी, जिन्हें भूपत भयानी के नाम से भी जाना जाता है, ने कहा कि वह विधायक के रूप में इस्तीफा दे रहे हैं, लेकिन उन्होंने इस फैसले के पीछे कोई कारण नहीं बताया। पिछले गुजरात विधानसभा चुनावों में, अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली पार्टी ने लगभग 13 प्रतिशत वोट शेयर के साथ पांच निर्वाचन क्षेत्रों में जीत हासिल करके असाधारण प्रदर्शन किया था। लेकिन ताजा घटनाक्रम पार्टी के लिए एक बड़ा झटका है क्योंकि वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के गृह राज्य में अपने पदचिह्नों का विस्तार करने की उम्मीद कर रही थी।

सीजेआई लेंगे महुआ मोइत्रा मामले में याचिका पर फैसला

नईदिल्ली। तृणमूल कांग्रेस नेता महुआ मोइत्रा ने लोकसभा से अपने निष्कासन को चुनौती देने वाली याचिका दायर करने के कुछ दिनों बाद बुधवार को सुप्रीम कोर्ट से तत्काल सुनवाई की मांग की। लोकसभा में आचार समिति की उस रिपोर्ट को मंजूर कर लिया गया जिसमें तृणमूल कांग्रेस की नेता महुआ मोइत्रा को 'पैसे लेकर सवाल पूछने' के मामले में 'अनैतिक एवं अशोभनीय आचरण' का जिम्मेदार ठहराया गया था। वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने सुनवाई जल्द करने की मांग की थी। न्यायमूर्ति एसके कौल की अध्यक्षता वाली पीठ ने सिंघवी को सूचित किया कि उल्लिखित याचिका को दोपहर में भारत के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ के समक्ष रखना होगा और वह मामले की लिस्टिंग पर फैसला लेंगे। लोकसभा द्वारा शुक्रवार को आचार समिति की रिपोर्ट स्वीकार किए जाने के 24 घंटे के भीतर शनिवार रात दायर अपनी याचिका में मोइत्रा ने आरोप लगाया कि उन्हें आचार समिति के निष्कर्षों पर चर्चा के दौरान सदन में अपना बचाव पेश करने की अनुमति नहीं दी गई।

संसद की सुरक्षा में लापरवाही! लोकसभा की कार्यवाही के दौरान दो लोग कूदे

नईदिल्ली। लोकसभा की कार्यवाही के दौरान बुधवार को दोपहर करीब एक बजे दो लोग सदन के भीतर कूद गए, जिसके बाद कार्यवाही दोपहर दो बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई। एजेंसी के अनुसार 2 लोग गैलरी से नीचे कूद गए और कथित तौर पर गैस उत्सर्जित करने वाली सामग्री फेंकी। इनमें से एक व्यक्ति मेज को फांदते हुए आगे की ओर भाग रहा था, जिसे सुरक्षाकर्मियों और कुछ सांसदों ने घेर लिया। बाद में दोनों को पकड़ लिया गया। पीठासीन सभापति राजेंद्र अग्रवाल ने कार्यवाही दोपहर दो बजे तक के लिए स्थगित कर दी।

इस घटना के बाद, दिल्ली पुलिस की आतंकवाद रोधी इकाई विशेष सेल उन लोगों से पूछताछ करने के लिए संसद पहुंची, जिन्होंने लोकसभा में सुरक्षा उल्लंघन किया था। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि सदन में कूदने वाले दोनों लोगों को पकड़ कर सारी सामग्री जब्त कर ली गई है, साथ ही संसद भवन के बाहर प्रदर्शन कर रहे दो लोगों को भी पकड़ा गया है। कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी ने कहा कि उन्हें लगता है कि लोकसभा में दर्शक दीर्घा से दो लोग कूदे हैं। कांग्रेस सांसद ने कहा, दो युवक गैलरी से कूदे और उन्होंने कुछ फेंका, जिससे गैस निकल रही थी। उन्हें सांसदों ने पकड़ा, उसके बाद सुरक्षाकर्मियों ने उन्हें बाहर निकाला। सदन दोपहर 2 बजे तक के लिए स्थगित कर दिया गया है। यह निश्चित रूप से एक सुरक्षा उल्लंघन है। सपा सांसद एसटी हसन ने कहा- दर्शक दीर्घा से दो लोग लोकसभा कक्ष में कूदे और जूते से कुछ ऐसी चीज निकाली, जिससे गैस फैलनी शुरू हो गई। उन्होंने कहा, ''यह गैस कैसी थी, यह कोई जहरीली गैस तो नहीं थी। हमें संसद की सुरक्षा में भारी गंभीर खामी नजर आ रही है। इस तरह से तो कोई जूते में बम रखकर आ सकता है।'' हसन ने कहा कि इस तरह की सुरक्षा चूक पर आगे ध्यान देने की जरूरत है।

आज के दिन ही हुआ था संसद पर आतंकी हमला

आज संसद पर आतंकी हमले की 22वीं बरसी है। गौरतलब है कि 13 दिसंबर 2001 को लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद के आतंकवादियों ने संसद पर

हमला किया था। इस हमले में आतंकवादियों का मुकाबला करते हुए दिल्ली पुलिस के पांच जवान, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक महिला कर्मी और संसद के दो कर्मी शहीद हुए थे। एक कर्मचारी और एक कैमरामैन की भी हमले में मौत हो गई थी।

राज्यसभा में भी उठा सुरक्षा चूक का मुद्दा

संसद के लोकसभा में हुए सुरक्षा चूक को विपक्ष की ओर से बड़ा मुद्दा बनाने की कोशिश की जा रही है। राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे ने लोकसभा में सुरक्षा उल्लंघन की घटना का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि मामला बहुत गंभीर है, यह सिर्फ लोकसभा और राज्यसभा का सवाल नहीं है यह इस बारे में है कि इतनी कड़ी सुरक्षा के बावजूद दो लोग अंदर कैसे आ पाए और सुरक्षा में सेंध लगाई। उन्होंने सभापति जदगीप धनखड़ से कहा कि हम आपसे अनुरोध करते हैं कि कृपया कार्यवाही को स्थगित कर दें। गृह मंत्री को आने दें और अधिक जानकारी दें। राज्यसभा में सदन के नेता पीयूष गोयल ने कहा कि मेरा मानना है कि राज्यसभा बड़ों का सदन है। हमें यह संदेश देना चाहिए कि इस देश की ताकत इन सब से ऊपर है। सदन की कार्यवाही जारी रहनी चाहिए...मुझे लगता है कि कांग्रेस इसका राजनीतिकरण कर रही है और यह देश के लिए अच्छा संदेश नहीं है। जदगीप धनखड़ ने कहा कि जैसे ही मुझे इसके बारे में पता चला मैंने सुरक्षा निदेशक को फोन किया। मैंने उनसे कहा कि वे अपडेट दे, उस समय उन्होंने मुझे जो अपडेट दिया था, वह मैंने सदन के साथ साझा किया है।

घटना की गहन जांच जारी, घबराने की जरूरत नहीं : ओम बिरला

नईदिल्ली। लोकसभा में सुरक्षा में चूक को लेकर लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि शून्यकाल के दौरान हुई घटना की गहन जांच की जा रही है। दिल्ली पुलिस को भी जरूरी निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि प्राथमिक जांच में पता चला है कि यह सिर्फ धुआं था और धुएं से घबराने की जरूरत नहीं है। उन्होंने सदन को बताया कि इन दोनों को पकड़ लिया गया है और इनके पास मौजूद सामान भी जब्त कर लिया गया है। संसद के बाहर मौजूद दो लोगों को भी पुलिस ने गिरफ्तार किया है। लोकसभा में कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी ने कहा कि आज ही हमने संसद हमले के दौरान अपने प्राणों की आहुति देने वाले अपने वीरों को पुष्पांजलि अर्पित की और आज ही यहां सदन के अंदर हमला हुआ। क्या यह साबित करता है कि हम उच्च स्तर की सुरक्षा बनाए रखने में विफल रहे?...सभी सांसदों ने निडर होकर दो लोगों को पकड़ लिया लेकिन मैं जानना चाहता हूं कि जब यह सब हुआ तो सुरक्षा अधिकारी कहां थे? लोकसभा की कार्यवाही के दौरान बुधवार को दर्शक दीर्घा से दो लोग सदन के भीतर कूद गए, जिसके बाद कार्यवाही अचानक दोपहर दो बजे तक के लिए स्थगित करनी पड़ी। सदन में शून्यकाल के दौरान दोपहर करीब एक बजे दर्शक दीर्घा से दो व्यक्ति सदन में कूदे और इनमें से एक व्यक्ति मेज को फांदते हुए आगे की ओर भाग रहा था। सुरक्षाकर्मियों और कुछ सांसदों ने उसे घेर लिया। बाद में दोनों को पकड़ लिया गया। स्पीकर की आसंदी की अध्यक्षता बीजेपी सांसद राजेंद्र अग्रवाल कर रहे थे। उन्होंने बताया कि निश्चित तौर पर कोई न कोई खामी है। जब पहला व्यक्ति नीचे आया तो हमें लगा कि वह गिर गया होगा लेकिन जब दूसरा व्यक्ति नीचे आने लगा तो हम सभी सतर्क हो गये। शख्स ने अपने जूते खोलकर कुछ बाहर निकालने की कोशिश की जिसके बाद धुआं निकला। इसके खिलाफ कार्रवाई की जायेगी। इस पर स्पीकर और जिम्मेदार लोग निर्णय लेंगे। ये सब होने पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भी सदन में पहुंचे थे।

जदयू सांसद, विधान पार्षद और मंत्री कर रहे हैं सियासी जमीन तैयार

पीएम के चेहरे के तौर पर नीतीश को पेश करने की रणनीति पर अमल

■ **फूलपुर लोकसभा सीट से चुनाव लड़ेंगे सीएम नीतीश!**

पटना। बिहार में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की शिथिल पड़ती सियासी चाल को देखते हुए जदयू अब उन्हें राष्ट्रीय राजनीति में उतारने पर गंभीरतापूर्वक विचार कर रही है। विपक्षी पार्टियों के गठबंधन इंडिया के संयोजक बनने का सपना संजोये नीतीश कुमार अपनी धमक उत्तर प्रदेश के फूलपुर से दिखाने का मन बनाने लगे हैं।

उनकी पार्टी जदयू भी 2024 के लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री के चेहरे के तौर पर पेश करने की रणनीति पर अमल करने लगी है। सूत्रों की मानें तो पार्टी के रणनीतिकारों के द्वारा नीतीश कुमार को यूपी की उस फूलपुर लोकसभा सीट से चुनाव लड़ाने की तैयारी की जाने लगी है। हालांकि अभी तक मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के तरफ से इसपर अपनी हामी नहीं भरी गई है।

बता दें कि देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू फूलपुर से ही सांसद हुआ करते थे। सूत्रों की मानें तो जदयू ने नीतीश के चुनाव लड़ने के लिए फूलपुर सीट पर न सिर्फ कई स्तर पर सर्वे करा रही है। इसके साथ ही पार्टी के एक सांसद, एक विधान पार्षद और बिहार के एक मंत्री को वहां सियासी जमीन तैयार करने की ज़िम्मेदारी भी सौपी जा चुकी है।

ऐसे में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के उत्तर प्रदेश की फूलपुर लोकसभा सीट से चुनाव लड़ने की अटकलें तेज हो गई हैं। इस मुद्दे पर जदयू के नेता अभी कुछ भी खुलकर बोलने से परहेज कर रहे हैं। लेकिन जिस तरह से वाराणसी में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के कार्यक्रम का तैयारी की जा रही है, वह इस बात का संकेत देने लगा है कि जदयू अपनी ओर से तैयारी शुरू कर दी है।

यही नहीं बिहार के ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार लगातार वहां कैंप कर लोगों को गोलबंद करने

का प्रयास करने में जुटे हैं। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के फूलपुर से चुनाव लड़ने की संभावना पर पूछे जाने पर श्रवण कुमार कहते हैं कि इसका फैसला मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को ही लेना है, अभी ऐसी कोई बात नही है।

यूपी के प्रभारी के नाते मैं यहां पार्टी के विस्तार में जुटा हूं। अभी वाराणसी में होने वाली रैली में लाखों लोगों के भाग लेने की संभावना है। यहां के लोग अपने नेता को देखने और सुनने को बेताब हैं। 24 दिसंबर को नीतीश कुमार की पहली जनसभा बनारस के रोहनिया में हो रही है। यह एक शुरुआत होगी।

इसके बाद झारखंड के साथ-साथ मुख्यमंत्री हरियाणा, राजस्थान और महाराष्ट्र आदि राज्यों में भी रैलियां करेंगे। वहीं, जानकारों का मानना है कि नीतीश कुमार फूलपुर सीट से चुनाव लड़कर न सिर्फ खुद को विपक्ष का सबसे मजबूत चेहरा साबित कर सकेंगे।

बल्कि वह पीएम मोदी को सीधी टक्कर देने की भी जुगत में रहेंगे। पार्टी सूत्रों की मानें तो इंटरनल सर्वे में यह बात सामने आई है कि नीतीश कुमार के फूलपुर से चुनाव लड़ने पर विपक्ष को दो दर्जन से ज़्यादा सीटों पर सीधा फायदा होगा, जबकि यूपी समेत उत्तर भारत की तमाम सीटों पर इसका असर देखने को मिलेगा।

खेल
प्रमुख समाचार

भारतीय गेंदबाजों को करना होगा बेहतर प्रदर्शन

जोहानिसबर्ग। गुरुवार को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीसरा टी20 मैच जीतकर सीरीज में बराबरी के लिये भारतीय गेंदबाजों को अपने प्रदर्शन में काफी सुधार करना होगा क्योंकि चयनकर्ताओं की नजरें अगले साल इस प्रारूप के विश्व कप के लिये सही संयोजन तलाशने पर भी लगी है।

दूसरे टी20 मैच में भारतीय गेंदबाज लय के लिये जूझते नजर आये। बायें हाथ के तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह और दाहिने हाथ के तेज गेंदबाज मुकेश कुमार ने क्रमश: 15.50 और 11.33 रन प्रति ओवर की दर से रन दिये। बारिश और ओस ने उनका काम मुश्किल किया लेकिन दोनों की गेंदबाजी में कल्पनाशीलता और नियंत्रण का अभाव भी साफ नजर आया।

निजी कारणों से सीरीज से बाहर दीपक चाहर की कमी भी टीम को खली। जसप्रीत बुमराह जैसे सीनियर की गैर मौजूदगी में टीम प्रबंधन का भरोसा अर्शदीप और मुकेश पर ही था। लेकिन दोनों अभी तक इस भरोसे पर खरे नहीं उतर सके और दबाव के क्षणों में लय के लिये जूझते दिखे। आस्ट्रेलिया के खिलाफ हालिया टी20 सीरीज में 4-1 से जीत के बावजूद गेंदबाजी ईकाई की कमियां नजर आई।

अर्शदीप ने बेंगलुरू में पांचवें टी20 में बेहतरीन आखिरी ओवर डाला लेकिन उसके अलावा उसने बाकी चार मैचों में 10.68 की औसत से रन दिये और उसे चार ही विकेट मिले। मुकेश ने रफ्तार बढाई है लेकिन रनगति पर काबू नहीं रख पा रहे हैं। आस्ट्रेलिया के खिलाफ चार मैचों में उन्होंने 9.12 की इकॉनामी रेट से रन दिये और चार विकेट लिये। गक्बेरहा में दूसरे टी20 में भी दोनों ने निराश किया और श्रृंखला गंवाने से बचने के लिये उन्हें कल उम्दा प्रदर्शन करना होगा। टी20 विश्व कप से पहले भारत को अब सिर्फ चार टी20 मैच खेलने हैं और चयनकर्ताओं का ध्यान खींचने के लिये अब उनके पास ज्यादा मौके नहीं हैं।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

सेंसेक्स-निफ्टी हरे निशान में बंद, आईटी शेयरों में फिसलन

नईदिल्ली। अमेरिका के केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व की बैठक के नतीजे से पहले भारतीय शेयर बाजार में बुधवार को मामूली बढ़त दर्ज की गई। शुरूआती गिरावट से उबरते हुए सेंसेक्स 34 अंक की मजबूती के साथ बंद हुआ। फेडरल रिजर्व के ब्याज दरों को लेकर नतीजे जारी करने से पहले निवेशकों के सतर्क रुख और शुरूआती कारोबार के दौरान आईटी स्टॉक्स में 2 प्रतिशत तक की गिरावट के चलते बाजार आज लगभग सपाट बंद हुआ। तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 33.57 अंक या 0.05 प्रतिशत चढ़कर 69,584.60 अंक पर बंद हुआ। शुरूआती कारोबार के दौरान सेंसेक्स 400 से ज्यादा अंक तक लुढ़क गया था। हालांकि, बाद में गिरावट से उबरते हुए यह हरे निशान में बंद हुआ। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 भी 19.95 अंक या 0.01 प्रतिशत की मामूली बढ़त के साथ 20,926.35 अंक पर बंद हुआ।

विकास इकोटेक ने चुकाया 119 करोड़ रुपये का कर्ज

नईदिल्ली। पुनर्चक्रण कंपनी विकास इकोटेक ने अपना 119 करोड़ रुपये का कर्ज चुका दिया है। कंपनी ने इस वित्त वर्ष के अंत तक कर्ज मुक्त होने का लक्ष्य रखा है। कंपनी की ओर से जारी एक बयान के अनुसार, कंपनी का बकाया ऋण अब 42.5 करोड़ रुपये है। विकास इकोटेक के एक अधिकारी ने बयान में कहा, '' इस वित्त वर्ष में हमने अभी तक अपने ऋणदाताओं का 118.70 करोड़ रुपये अदा किया है। अब हमारा लक्ष्य वित्त वर्ष 2023-24 के अंत तक ऋण मुक्त कंपनी बनना है।'' कंपनी पुनर्चक्रण के जरिए पीईटी (पॉलीइथाइलीन टेरेफ्थेलेट) यौगिकों और पीवीसी (पॉलीविनाइल क्लोराइड) यौगिकों की एक विस्तृत श्रृंखला का निर्माण करती है।

जीएसएमए भारत में 6 गीगाहर्ट्ज बैंड में चाहता है 5जी स्पेक्ट्रम का आवंटन

नईदिल्ली। मोबाइल सेवाओं के लिए 6 गीगाहर्ट्ज बैंड के तहत 5जी स्पेक्ट्रम का आवंटन भारत के लिए फायदेमंद साबित होगा क्योंकि कई देश उसी रेंज में दूरसंचार स्पेक्ट्रम आवंटित करने पर जोर दे रहे हैं। वैश्विक दूरसंचार उद्योग निकाय 'जीएसएमए' ने यह बात कही है। केंद्रीय दूरसंचार मंत्री अश्विनी वैष्णव को लिखे एक पत्र में जीएसएमए के महानिदेशक मैट्स ग्रैनरिड ने कहा कि 6 गीगाहर्ट्ज बैंड में स्पेक्ट्रम मध्य-आवृत्ति रेंज में बचा हुआ रेडियोवेव्स का एकमात्र बड़ा ब्लॉक है और भारत को इसकी क्षमता से भी लाभ होगा। दूरसंचार उद्योग ने कहा कि इस आवृत्ति में नेटवर्क लाने की लागत उच्च आवृत्ति बैंड में उपलब्ध 5जी के लिए उपयुक्त स्पेक्ट्रम के अगले सेट की तुलना में कम होगी।

बीटएक्सपी की सेल फेस्टिव सीजन में 11 गुना होकर 250 करोड़ रुपये हुई

नईदिल्ली। स्मार्ट डिवाइस कंपनी बीटएक्सपी की बिक्री इस साल सितंबर से नवंबर के बीच त्योहारी सीजन में 11 गुना होकर करीब 250 करोड़ रुपये रही। कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बुधवार को यह जानकारी दी। फिटनेस टेक्नोलॉजी उत्पाद की बिक्री करने वाली कंपनी बीटएक्सपी ने दावा किया कि एक साल पहले सितंबर-नवंबर त्योहारी सीजन में केवल 22 करोड़ रुपये की बिक्री हुई थी। बीटएक्सपी के वरिष्ठ अधिकारी आशीष धुवन ने कहा, सितंबर, अक्टूबर और नवंबर में त्योहारी सीजन के दौरान रिकॉर्ड 250 करोड़ रुपये की बिक्री हुई। उन्होंने कहा, भविष्य में हमारा लक्ष्य अपनी वृद्धि के लिए एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित करते हुए दिसंबर 2024 तक अपने राजस्व को तीन गुना करना है।

भारतीय रिजर्व बैंक को अब ब्याज दरों में कटौती के बारे में सोचना चाहिए

प्रह्लाद सबनानी

भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति की तीन दिवसीय बैठक 8 दिसम्बर 2023 को समाप्त हुई और भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास ने नीतिगत रेपो दर में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं करते हुए इसे 6.50 प्रतिशत पर यथावत बनाए रखा है, क्योंकि मुख्य रूप से भारत में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रा स्फीति की दर नियंत्रण में बनी हुई है। हालांकि अभी यह देश के मध्यावधि लक्ष्य 4 प्रतिशत के अंदर नहीं आई है। परंतु, भारतीय अर्थव्यवस्था जिस गति से आगे बढ़ रही है, इसे देखते हुए एवं आर्थिक विकास की दर को और अधिक गति देने के उद्देश्य से अब भारत में ब्याज दरों को कम किये जाने का समय आ गया लगता है। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रा स्फीति की दर का 4 प्रतिशत से अधिक बने रहने के पीछे मुख्य कारण तेल एवं खाद्य पदार्थों (फल, सब्जी, आदि) में अचानक वृद्धि होते रहना है। अन्यथा, थोक मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रा स्फीति की दर तो लम्बे समय से रिणात्मक बनी हुए है एवं उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मूल मुद्रा स्फीति की दर भी पूर्ण रूप से नियंत्रण में है।

हां, वैश्विक स्तर पर आर्थिक परिस्थितियां जरूर भारत में ब्याज दरों को कम करने के पक्ष में नजर नहीं आ रही हैं। चीन सहित, विश्व के कई देशों में आर्थिक विकास दर कम हो रही है एवं इन देशों में मुद्रा स्फीति को नियंत्रण में लाने के उद्देश्य से ब्याज दरों को अभी भी ऊंची दरों पर बनाए रखा गया है। इसी माह अमेरिका में सम्पन्न हुई फेडरल रिजर्व की बैठक में फेड रेट में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया गया है। चूंकि अन्य देशों में ब्याज की उच्च दर अभी

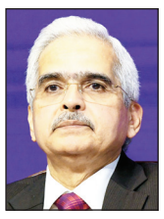

भी बनी हुई है अत: अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय रुपए पर दबाव बना हुआ है। इन परिस्थितियों के बीच यदि भारतीय रिजर्व बैंक भारत में ब्याज दरों को कम करता है तो भारतीय रुपए पर दबाव और अधिक बढ़ेगा। अमेरिका एवं अन्य विकसित देशों में मुद्रा स्फीति की दर में सुधार जरूर दृष्टिगोचर है। अमेरिका में तो अभी हाल ही में सोवरेन बांड प्रतिफल में गिरावट भी दर्ज हुई है एवं अमेरिकी डॉलर की कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में कुछ कम हुई है। इससे कई देशों के पूंजी (शेयर) बाजार मजबूत हुए हैं। अत: अब आगे आने वाले समय में इन परिस्थितियों के बीच विश्व के विभिन्न देशों द्वारा ब्याज दरों में कमी किए जाने की सम्भावना बढ़ती जा रही है। भारतीय अर्थव्यवस्था को तो इससे अत्यधिक लाभ होगा। ब्याज दरें कम होने से भारतीय उद्योग द्वारा निर्मित किए जाने वाले उत्पादों की उत्पादन लागत कम होगी और भारत में निर्मित होने वाले उत्पाद अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धी बन जाएंगे, इससे इन उत्पादों का भारत से निर्यात बढ़ेगा।

भारत में आंतरिक आर्थिक परिस्थितियां लगातार अनुकूल बनी हुई हैं। वित्तीय वर्ष 2023-24 की प्रथम तिमाही में 7.8 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल करने के बाद द्वितीय तिमाही में भी 7.6 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की गई है। यह वृद्धि दर विभिन्न अंतरराष्ट्रीय स्तर के वित्तीय संस्थानों एवं भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व अनुमानों से कहीं अधिक है। भारत में लगातार बढ़ रहे निवेश एवं केंद्र सरकार द्वारा किए जा रहे पूंजीगत एवं अन्य खर्च में अपार वृद्धि के चलते सम्भव हो पा रहा है। विनिर्माण एवं निर्माण गतिविधियों में अतुलनीय वृद्धि के चलते दूसरी तिमाही में विकास दर अत्यंत आकर्षक रही है। आगे आने वाले समय में भी विनिर्माण गतिविधियों में मजबूती, निर्माण में भारी वृद्धि एवं ग्रामीण इलाकों में बढ़ रही उत्पादों की मांग के चलते घरेलू स्तर पर उत्पादों की मांग में और अधिक सुधार होने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है। अत: भारतीय रिजर्व बैंक ने वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए भारत की आर्थिक विकास दर के अनुमानों में सुधार करते हुए इसे 7 प्रतिशत तक पहुंचा दिया है। भारतीय रिजर्व बैंक उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रा स्फीति की दर को नियंत्रण में करना चाहता है। जबकि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रा स्फीति की इस दर में विभिन्न खाद्य पदार्थों की कीमतें भी शामिल रहती हैं। खाद्य पदार्थों की कीमतें पूर्णत: मांग एवं आपूर्ति के सिद्धांत पर तय होती हैं।

शपथ ग्रहण समारोह

शपथ ग्रहण से पहले मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय सहित गणमान्य अतिथिगण मंच पर मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय मंत्रालय महानदी भवन स्थित अपने कक्ष में कार्यभार ग्रहण करने के बाद उप मुख्यमंत्री द्वय अरूण साव और विजय शर्मा को लेकर मंत्रालय में उप मुख्यमंत्रियों के कक्ष में पहुंचे। जहां मुख्यमंत्री साय की उपस्थिति में उप मुख्यमंत्री साव और शर्मा ने अपना कार्यभार संभाला। मुख्यमंत्री ने उन्हें नई जिम्मेदारी के लिए बधाई और शुभकामनाएं दी।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने अपने शपथ ग्रहण उपरांत मंत्रालय महानदी भवन नवा रायपुर में अपना कार्यभार ग्रहण किया। मुख्यमंत्री श्री साय के कार्यभार ग्रहण के उपरांत राजधानी रायपुर के विधायक कॉलोनी स्थित अपने आवास पहुंचने पर उनकी मां, धर्मपत्नी सहित परिजनों ने आरती उतार कर उनका स्वागत किया।

कांग्रेस विधायक दल की बैठक खत्म,सैलजा दिल्ली हुई रवाना, कहा-

राष्ट्रीय अध्यक्ष तय करेंगे विपक्ष का नेता

रायपुर। छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव में मिली करारी हार के बाद कांग्रेस विधायक दल की पहली बैठक ख़त्म हो गई है. राजधानी में प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में आयोजित इस बैठक में प्रदेश प्रभारी कुमारी सैलजा, पूर्व सीएम भूपेश बघेल, पूर्व डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव, चुनाव पर्यवेक्षक अजय माकन, प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज, पूर्व मंत्री मोहन मरकाम, सक्ति से कांग्रेस विधायक चरणदास महंत समेत बड़ी संख्या में एमएलए मौजूद थे.

कांग्रेस विधायक दल की इस बैठक नए नेता प्रतिपक्ष को लेकर सहमति बनी. इस बैठक में पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने यह प्रस्ताव रखा था कि कांग्रेस विधायक दल के नए नेता का फैसला हाईकमान करें, उनके इस प्रस्ताव का डॉ चरणदास महंत ने भी समर्थन किया. विधायक दल की बैठक ख़त्म होने के बाद प्रदेश प्रभारी दिल्ली के लिए लौट गई है. उन्होंने दिल्ली रवाना होने के पहले रायपुर एयरपोर्ट पर पत्रकारों से चर्चा कि. इस दौरान उन्होंने कांग्रेस विधायक दल की बैठक और नई सरकार को लेकर बयान दिया. विधायक दल की बैठक को लेकर कुमारी सैलजा ने कहा कि विधायक दल के नेता को लेकर भूपेश बघेल ने प्रस्ताव रखा था, डॉ चरणदास महंत ने अनुमोदन किया. बैठक में यह प्रस्ताव सर्वसम्मति ने पारित हुआ है, जिसके बाद अब कांग्रेस राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे तय करेंगे कि विधायक दल का नेता कौन होगा.

सीएम विष्णुदेव साय के शपथ ग्रहण को लेकर पूछे गए सवाल पर कुमारी सैलजा ने कहा कि बीजेपी ने मुख्यमंत्री चुनने में विलंब किया. हम उम्मीद करते हैं छत्तीसगढ़ को एक अच्छी सरकार मिलें. चुनाव में किसका जादू कहां चला कहां नहीं चला मुझे नहीं पता लेकिन जुमलेबाजी फिर से चली. छत्तीसगढ़ के लोगों ने हमारा जितना साथ दिया हम उसके लिए उनका धन्यवाद करते है. छत्तीसगढ़ के लोगों की आवाज को हमारी पार्टी के विधायक उठाते रहेंगे.

वादे और गारंटी पर चर्चा की तैयारी: मुख्यमंत्री साय आज लेंगे कैबिनट की पहली बैठक

रायपुर. शपथ ग्रहण के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का बयान सामने आया है. आज सीएम के रूप में शपथ लिया. उपमुख्यमंत्री के रूप में अरुण साव और विजय शर्मा जी ने शपथ लिया. पीएम मोदी, अमित शाह जी, जेपी नड्डा जी पधारे सौभाग्य था. सभी को आभार व्यक्त करना चाहेंगे. हजारों की संख्या में जनता भी आई और बीजेपी पर बड़ा विश्वास कर जीत दिलाई है. पहले दिन विधिवत पूजा-अर्चना कर काम शुरू किए हैं. आगे विष्णुदेव साय ने कहा, कैबिनेट के विस्तार को लेकर इंतजार कीजिए. कल कैबिनट की पहली बैठक होगी. कई प्रमुख विषयों पर चर्चा होगी. मोदी की गारंटी और घोषणा पत्र में किए वादों पर भी चर्चा होगी. कई योजनाओं पर निर्णय लिया जाएगा. सभी सेक्रेटरी के साथ परिचात्मक चर्चा होगी.

छत्तीसगढ़ के पूर्व और वर्तमान मुख्यमंत्री एक साथ

दो पूर्व मुख्यमंत्री के साथ वर्तमान मुख्यमंत्री चाय की चुस्की के बीच बतियाते रहे वहीं दूसरी ओर दो वर्तमान उप मुख्यमंत्री के बीच एक पूर्व उप मुख्यमंत्री खड़े हुए नजर आए।

पीएम ने बघेल पूछा हाल

रायपुर। शपथ ग्रहण समारोह के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंच पर बैठे सभी लोगो का अभिवादन किया। मोदी मंच के एक एक कर अभिवादन करते हुए आगे बढ़े। तब उनकी नज़र पहली पंक्ति में ही बैठे पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पर पड़ी। बघेल को देखते ही पीएम मोदी ने उनसे हाल साल पूछते हुए कहा क्या बघेल जी ? जिस पर भूपेश ने मुस्कुराकर उनका अभिवादन किया। पीएम ने आगे बढ़कर उनके साथ मिलाया और कंधा पर थपकी भी दी।

सांसद सुनील सोनी ने बताया कैसे लगी लोकसभा की सुरक्षा में सेंध, चारों तरफ नजर आ रहा था धुआं ही धुआं

रायपुर। संसद पर आतंकी हमले की 22वीं बरसी पर फिर से सुरक्षा में बड़ी सेंधमारी हो गई. इस घटना ने एक बार फिर से पूरे देश को हिला दिया. रायपुर सांसद सुनील सोनी घटना के वक्त लोकसभा में मौजूद थे. उन्होंने लल्लूराम डॉट कॉम से उस मंजर को साझा किया, जब दर्शक दीर्घा से कूदे दो युवकों ने पूरे सदन को सकते में डाल दिया. सांसद सुनील सोनी ने बताया कि घटना करीब 1 बजे के

आसपास की है. उस दौरान वो खुद डेस्क पर मौजूद थे. जीरो अवर खत्म होने में तीन मिनट बाकी था, जब अचानक दर्शकदीर्घा से दो युवक नीचे कूद गए. कूदने के बाद सीधा 5 डेस्क से छलांग लगाकर युवक ने अपना जूता खोला, उसके बाद कुछ निकाला, पट से आवाज आई, और धुआं-धुआं हो गया. फिर दूसरा युवक भी कूदा और उसने भी ऐसा ही किया, जिससे सदन लाल और पीले रंग के धुएं से भर गया. इसके बाद सांसदों ने घेरकर युवकों को दबोच लिया था. लोकसभा स्पीकर ने इस घटना के जांच के आदेश दिए हैं. बताते हैं कि दो लोग अंदर थे, और दो लोग बाहर थे. बाहर में ही ऐसा ही किया है. इस घटना के बाद सदन की 2 बजे से 4 बजे तक चली, इसके बाद स्पीकर ने सदन की कार्यवाही कल तक के लिए स्थगित कर दी. सुरक्षा में चूक के सवाल पर सांसद सोनी ने कहा कि स्पीकर ने जांच के आदेश दिया है. उन्होंने बताया कि वो सिर्फ धुंआ ही था कोई जहरीला धुआं नही था इसकी प्राथमिक जांच हो गई है. अब ये युवक वहां क्यों आए थे, उनका उद्देश्य क्या था, ये सब जांच का विषय है.

छत्तीसगढ़/राजधानी

प्रमुख समाचार

भूपेश बघेल के हाथों गोठ झंगलू मंगलू के पुस्तक का विमोचन

रायपुर। समसामयिक विषयों और घटनाओं पर छत्तीसगढ़ी हास्य व्यंग्य गोठ झंगलू मंगलू के किताब का विमोचन पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने मंगलवार को अपने निवास में किया। गोठ झंगलू मंगलू के शीर्षक से इस कालम का प्रकाशन सांध्य दैनिक अग्रदूत में विगत दो दशक से नियमित रुप से हो रहा है। 11 जनवरी 2022 को रायपुर प्रेस क्लब में आयोजित नववर्ष मिलन समारोह में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कालम की प्रशंसा करते हुए संकलन कर पुस्तक के रूप प्रकाशित किये जाने की मंशा जतायी थी। दैनिक अग्रदूत के सहसंपादक विजय मिश्रा कालम के रचयिता हैं और उन्होंने संकलन कर पुस्तक के रूप में इसका प्रकाशन किया। श्री बघेल पर लिखे कालम को अलग से संकलित कर उन्होंने कका के कहानी झंगलू मंगलू के जुबानी शीर्षक से भी एक पुस्तक का प्रकाशन किया है। दोनों ही पुस्तक का विमोचन मुख्यमंत्री निवास में हुआ। इस अवसर पर अंचल के जाने-माने गीत गजल और व्यंग्यकार कवि रामेश्वर वैष्णव, दैनिक अग्रदूत के प्रधान संपादक संजय सक्सेना, सहित बड़ी संख्या में साहित्यकार, पत्रकार, जनप्रतिनिधि और गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

रायपुर नगर निगम के खिलाफ हाईकोर्ट पहुंची स्वतंत्रता संग्राम सेनानी परिवार की महिला

रायपुर। रायपुर नगर निगम के अधिकारियों के खिलाफ शिकायत लेकर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के परिवार की एक महिला सीधे छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट पहुंच गई। जज ने उनकी बात को गंभीरता से सुना और आश्वस्त किया कि दस्तावेजों के साथ याचिका दायर करने पर उसकी सुनवाई होगी। प्राप्त जानकारी के अनुसार महिला ने हाईकोर्ट में जस्टिस रविंद्र अग्रवाल के पास पहुंचकर शिकायत की कि उसके नाना स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। जीवन यापन के लिए उन्हें मोती बाग रायपुर में एक भूखंड का आवंटन किया गया था। इसी के एक हिस्से में वह रहती है। शेष भूखंड पर वह नया मकान बनाने का प्रयास कर रही है। मगर जब भी वह मकान बनाना शुरु करती है, नगर निगम के लोग पहुंच जाते हैं। नगर निगम में लगातार शिकायत करती रही है मगर कोई कार्रवाई नहीं हो रही है बल्कि उसे बार-बार परेशान किया जा रहा है। अभी यह जमीन काफी महंगी हो चुकी है, इसलिए इसे भू माफिया हथियाना चाहते हैं। जस्टिस अग्रवाल ने महिला की बात को ध्यान से सुना और कहा कि दस्तावेजों के साथ वह याचिका दायर करें, उसके मामले की सुनवाई होगी।

खास रहा शपथ ग्रहण समारोह, छत्तीसगढ़ के हर मठ, संप्रदाय के साधु-संत हुए शामिल, दिया भरपूर आशीव

रायपुर। छत्तीसगढ़ में भाजपा सरकार के शपथ ग्रहण समारोह के दौरान साधु समाज को विशेष उपस्थिति और मंच प्रदान किया गया था. इससे छत्तीसगढ़ के धार्मिक-सांस्कृतिक वातावरण की विविधता और संपन्नता भी अपनी पूरी भव्यता से सामने आई.साधु संतों की उपस्थिति ने वातावरण को गरिमामय कर दिया. खास बात यह थी कि इस मौके पर छत्तीसगढ़ में सभी मठों, संप्रदायों के साधु-संतों को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था. इसमें जांजगीर-चांपा के रामनामी संप्रदाय से लेकर सभी पंथ के साधकों को भी आमंत्रित किया गया. उल्लेखनीय है कि छत्तीसगढ़ में महापुरूषों की वाणी का गहरा असर लोक में रहा है. छत्तीसगढ़ की चेतना के निर्माण के पीछे इन विभूतियों का बड़ा योगदान रहा है. आज शपथ ग्रहण समारोह में छत्तीसगढ़ की इस सुंदर सांस्कृतिक धार्मिक परंपरा को उचित स्थान प्रदान कर छत्तीसगढ़ शासन ने ऐतिहासिक पहल की है.

महादेव ऑनलाइन बेटिंग ऐप के सह संस्थापक रवि उप्पल यूएई में गिरफ्तार

रायपुर। महादेव ऑनलाइन बेटिंग ऐप के सह संस्थापक रवि उप्पल को संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में गिरफ्तार कर लिया गया है। रवि भारत में वांटेड है। भारतीय एजेंसियां यूएई के अधिकारियों के संपर्क में हैं। रवि को जल्द ही भारत लाया जा सकता है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के कहने पर इंटरपोल ने रवि उप्पल की गिरफ्तारी की है।

हत्या के आरोपियों को आजीवन कारावास की सजा

दुर्ग। भिलाई नगर थाना अंतर्गत सेक्टर 6 में वर्ष 2020 में हुए एक हत्या के मामले में जिला एवं सत्र न्यायालय दुर्ग ने आज फैसला सुनाया है. कोर्ट ने चार आरोपियों में से दो आरोपियों को धारा 302 के तहत आजीवन कारावास की सजा सुनाई है. साथ ही 1000 रुपये के अर्थ दंड से दंडित किया है. जानकारी के अनुसार, साल 2020 के सितम्बर में सेक्टर-6 इस्पात क्लब के पीछे डी मनीष और उसके बड़े पिता डी रमेश एक दूसरे से बातचीत कर रहे थे. उसी समय अभियुक्त जानपाल उर्फ डीके और रमेश आए. इस दौरान पुरानी रंजिश की बात को लेकर गुस्सा होकर डी मनीष के साथ वाद-विवाद करते हुए आरोपी रमेश ने अपने पास रखे धारदार चाकू से हत्या करने की नीयत से डी मनीष के पूरे शरीर में ताबड़तोड़ वार करना शुरू कर दिया.

कांग्रेस नेता सुरेश अग्रवाल का पंखे से लटकता मिला शव

अंबिकापुर. छत्तीसगढ़ उपभोक्ता परिषद के सदस्य और कांग्रेस नेता सुरेश अग्रवाल ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है. वे पूर्व मंत्री अमरजीत भगत के करीबी माने जाते थे. बुधवार सुबह उन्होंने अपने घर में फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली. फिलहाल आत्महत्या के पीछे का कारण सामने नहीं आया है. मौके से कोई सुसाइड नोट भी बरामद नहीं हुआ है. फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है. कोतवाली थाना क्षेत्र के बसंत लाल मार्ग की यह घटना है.

कांग्रेस नेता के निधन से शोक की लहर, 2018 में लड़ चुके हैं विस चुनाव

मुंगेली. छत्तीसगढ़ के मुंगेली जिले के कांग्रेसी नेता राकेश पात्रे का निधन होने से क्षेत्र में शोक की लहर है. उन्होंने रायपुर के निजी अस्पताल में उपचार के दौरान अतिम सांसें ली. बता दें कि राकेश पात्रे 2018 में कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में मुंगेली विधानसभा से चुनाव लड़ चुके हैं. कांग्रेस नेता राकेश पात्रे को ब्रेन हेमरेज का अटैक पड़ने पर उन्हें राजधनी के निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहां उन्होंने अंतिम सासें ली. उनके निधन की खबर से कांग्रेसियों में शोक की लहर है.

राज्य स्तरीय सेलेक्शन ट्रायल 16 दिसंबर तक

राष्ट्रीय एकलव्य विद्यालय खेल महोत्सव मैसूर में 8 से 12 जनवरी तक

रायपुर। राष्ट्रीय एकलव्य विद्यालय खेल महोत्सव 2023-24 का आयोजन मैसूर (कर्नाटक) में 8 जनवरी से 12 जनवरी तक आयोजित होगा। राष्ट्रीय खेल महोत्सव में शामिल होने के लिए राज्य स्तरीय सेलेक्शन ट्रायल 13 दिसम्बर से शुरू हो गया है, जो 16 दिसंबर तक होगा। आयुक्त एवं पदेन सचिव छत्तीसगढ़ राज्य स्तरीय आदिम जाति कल्याण, आवासीय एवं आश्रम शैक्षणिक संस्थान समिति श्रीमती शम्मी आबिदी ने राष्ट्रीय एकलव्य विद्यालय खेल महोत्सव के संबंध में संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए है।

राष्ट्रीय एकलव्य विद्यालय खेल महोत्सव 2023-24 में व्यक्तिगत खेल में तीरंदाजी, एथलेटिक्स और योगा की प्रतियोगिता बालक और बालिक वर्ग के लिए 14 एवं 19 आयु समूह के लिए आयोजित की जाएगी। इसी प्रकार समूह खेल 19 वर्ष आयु समूह के बालक एवं बालिकाओं के लिए बॉस्केट बॉल, फुटबॉल, हैण्डबॉल, हॉकी, कबड्डी, खो-खो और बॉलीबॉल की प्रतियोगिताओं को शामिल किया गया है। राज्य स्तरीय टीम तैयार करने के लिए 9 दिसंबर को राज्य स्तर पर एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालयों के व्यायाम

शिक्षकों के साथ बैठक कर 795 खिलाड़ियों का प्रारंभिक चयन कर लिया है। राज्य स्तरीय सेलेक्शन ट्रायल हेतु चयन समिति का गठन किया गया है। यह समिति प्रथम स्क्रीनिंग के पश्चात् राष्ट्रीय खेल महोत्सव के लिए निर्धारित विभिन्न विधाओं हेतु राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप 16 दिसंबर को खिलाड़ियों का चयन करेंगे। राज्य स्तरीय सेलेक्शन ट्रायल समिति में खेल एवं युवा कल्याण के खेल अधिकारी-प्रशिक्षक, खेलों इंडिया के प्रशिक्षक, शिक्षा विभाग के खेल अधिकारी-प्रशिक्षक, खेलो से संबंधित फेडरेशन प्रशिक्षक और आदिम जाति कल्याण विभाग के खेल अधिकारी एवं कोच को शामिल किया गया है। राज्य स्तरीय सेलेक्शन ट्रायल के लिए प्रयास विद्यालय रायपुर में 13 दिसंबर को योगा, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्व विद्यालय कैम्पस में 14 दिसंबर को खो-खो, 15 दिसंबर को फुटबॉल और 16 दिसंबर को हैण्डबॉल के खिलाड़ियों का चयन परीक्षण होगा। इसी प्रकार प्रयास विद्यालय रायपुर में 14 दिसंबर को बॉलीबॉल, खेल परिसर बहेतराई बिलासपुर में 15 दिसंबर को एथलेटिक्स, 16 दिसंबर को बॉस्केट बॉल, हॉकी और कबड्डी का सेलेक्शन ट्रायल होगा। तीरंदाजी खेल का ट्रायल 14 दिसंबर को एकलव्य विद्यालय भोरिंग महासमुंद में आयोजित किया गया है।

जब मुख्यमंत्री ने अपने बाल सखा को लगाया गले

रायपुर। राज्य अतिथि गृह पहुना में मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के व्यक्तित्व के सहजता और सरलता बरबस ही देखने को मिली। मुख्यमंत्री जब आज लोगों से मिलकर उनकी शुभकामनाएं स्वीकार कर रहे थे, उस दौरान अचानक उनके बाल सखा बधाई देने के लिए सामने आ गए। कुनकुरी से मिलने आए अपने बाल सखा को अचानक देखकर मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने उन्हें बड़ी आत्मीयता के साथ अपने गले लगाकर उनकी शुभकामनाएं स्वीकार की। कुनकुरी निवासी श्री सुरेश गुप्ता कतार में लगकर मुख्यमंत्री से मिलने पहुंचे थे। उन्होंने मुख्यमंत्री को बधाई देने के लिए अपने दोनों हाथ बढ़ाए,

उन्हें देखकर मुख्यमंत्री ने बड़ी सहजता के साथ उन्हें अपने गले लगा लिया। श्री सुरेश गुप्ता ने बताया कि वे कुनकुरी के लोएला हायर सेकेण्डरी स्कूल में मुख्यमंत्री श्री साय के साथ पढ़ते थे। मुख्यमंत्री शुरू से ही मेधावी छात्र थे। उन्होंने गणित विषय लेकर हायर सेकेण्डरी परीक्षा उत्तीर्ण की थी। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय बचपन से ही सरल और मृदु स्वभाव के थे। मुख्यमंत्री बनने के बाद भी उनकी यह सहजता और सरलता आज भी दिखी।

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.